Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÂI,

VOL VI.

EDITED

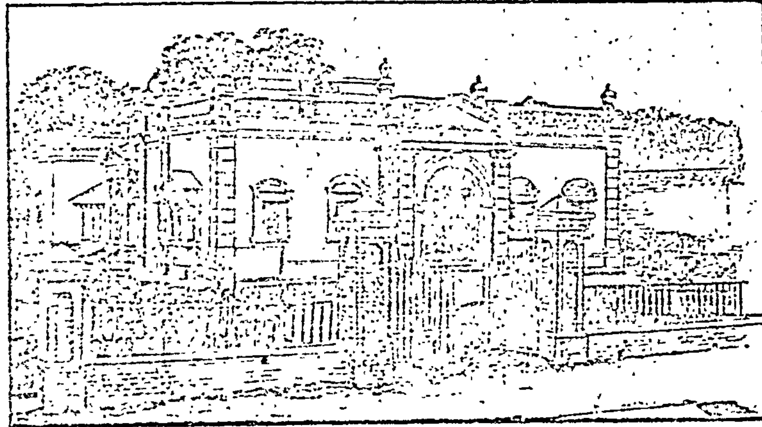
BY

Mohanlal Vishnulal Pandia & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTOS LXVII-LXIX AND

RASO-SAR.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

छठां भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

समय ६७-६९ और रासोसार

PRINTED BY PT. BAIJNATH JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1918.

Price Rs. 4/-

सूचीपत्र ।

(६७) बान बेध प्रस्ताव ।

[पृष्ठ २३८७ से २४१८ तक]



वीरशिरोमणि महाराज पृथ्वीराज।

Indian Press, Allahabad.

---

(६८) राजा रयनसी नाम प्रस्ताव ।

[पृष्ठ २४६९ से २५०६ तक]

महोबा समय ।

(पृष्ठ २५०७ से २६१५ तक)

१ चौहान और चँदेल कुल में कैसे झगड़ा पड़ा इसकी सूचना । २५०७

२ विवाह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज की सेना का महोबा में पहुंचना । "

३ समुद्र सिषरगढ़ से विवाह करके चलने पर सुलतान का बीच में आ घेरना उसे जीत कर पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर चलना । "

४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्ता भूलकर महोबे में आ पहुंचना, वहां भारी वर्षा होनी, सरदारों का विकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालिया का रोकना, बातों बात बात बढ़ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारों का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब वृतांत कहना. रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को उन सभों के पकड़ लाने की आज्ञा देना । २५०८

५ परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकड़ने के लिये सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों का मारा जाना और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल देव का क्रोधकर अपने प्रसिद्ध वीर ऊदल को बुलाकर उन घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना; ऊदल का कहना कि यह घायलोंको मारना वीरधर्म के विरुद्ध है, राजा का कुछ न सुनना । २५०९

६ ऊदल का फिर कहना कि एक तो घायल को मारना पाप है दूसरे ये पृथ्वीराज के दूत हैं उनसे विरोध न कीजिये और इन लोगों को जीव दान दीजिये २५१२

७ ऊदल के शत्रु महला और भोपति ने राजा के कान भरे कि ऊदल जी चुराता है और कुछ बात नहीं है । "

८ राजा का महला और भोपति की बात मान कर ऊदल को आज्ञा देना कि तुम तुरंत जाकर घायलों को मारो । "

९ आज्ञा मानकर ऊदल का बाग को जा घेरना और राजपूतों को ललकारना फिर घोर युद्ध होना और कनक चौहान की चोट सेऊदल का मूर्छित होना । "

१० चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस घायल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना । २५१४

११ यह समाचार सुनकर कि चंदेलों ने मेरे घायल वीरों को मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ । २५१५

१२ पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामंतों को इकट्ठा करके यह समाचार कहकर परामर्श करना । "

१३ सामंतों का महोबे पर चढ़ाई करने और परिमाल देव को मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त दिखला कर कूच करना और पहिले दिन बाग में डेरा देना । "

१४ रात को वहां रहकर घड़ी रात रहे उठ नित्य क्रियाकर सब सरदारों को पृथ्वीराज ने बुलाया । २५१७

१५ सब सरदारो को इकट्ठा करके सभों को सवारी के लिये घोड़े बांटना और कूच की तयारी करना । "

१६ धूमधाम से चंदेल को जीतने के लिये पृथ्वीराज का कूच करना । २५१९

३७ मोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड़ दिया। २५२९

३८ आल्हा ऊदल का कन्नौज पहुँचना, जैचन्द का बड़े आदर से उन्हे अपने पास रखना। ,,

३९ चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवेगा और घोर युद्ध मचावेगा। २५३०

४० जगनक ने कन्नौज पंहुच कर चिठी आल्हा को दी और सब समाचार कह कर महोबा चलने के लिये परिमाल की बिनती सुनाई। ,,

४१ जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है की महोबा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को दूर करे सुर सामंतों को आगे करके वेखटके चौहान से लड़े। २५३१

४२ जगनक का समझना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल की बहुत कुछ सहायता की और चंदेल ने तुम्हारा भी आदर किया। तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का धर्म नहीं है। २५३२

४३ जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है तुम्हें आना चाहिये। २५३४

४४ देवल दे ने यह सुन अपने बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लड़कर स्वामी का काम बनाओ। ,,

४५ ऊदल ने फिर कहा जिस दुदशा से महोबे से परिमाल देव ने निकाला था वह भूल गई, जगनक तुम महोबे लौट जाव। २५३४

४६ देवल दे ने यह कह कर कि मैं बांझ क्यों न हुई मेरे बेटे क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते हैं और संकट में स्वामी को छोड़ते हैं, रो दिया। २५३५

४७ मां की बात सुनकर दोनों भाई सूख गये और महोबे चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गये। ,,

४८ जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप दर्बार में आये हैं। आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढ़ाई की है सो परिमाल देव ने हम लोगों को बुलाया है। ,,

४९ जयचंद ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने पाओगे। २५३६

५० यह सुन आल्हा की आंखें लाल हो गई और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे। ,,

५१ इतने में जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमाल देव ने पृथ्वीराज से लड़ने के लिये जयचन्द से सहायता मांगी थी। ,,

५२ पत्र पढ़कर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लड़ने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूंगा और दीवान को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी। २५३७

५३ बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि दे कर और जगनक को सिरोपाव आदि दे कर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया। ,,

५४ आल्हा का कहना कि जैसे दुर्योधन ने कहा न माना और नाश हो गये वैसेही ऊदल ने बहुत समझाया पर चुगलखोरों के मारे घायलों को न मारने की बात न सुनकर परिमाल देव ने अपने हाथ

देकर देश की रक्षा करो उनके सामंतों की वीरता की बड़ाई बहुत सुनी जाती है। २५५२

७६ ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी। अब क्या है, अब लड़ो। यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे तब राजा का कुछ होगा। ,,

८० देवल दे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती है, बेटा! तुम लोग चंदेल का नमक अदा करो। ,,

८१ राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गांव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िये देर न कीजिये। २५५३

८२ आल्हा का आवेश में आकार उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कल्ह लड़ाई करना।

८३ आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रियधर्म नहीं है। इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कह कर सब वीरों को उत्तेजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कल्ह मैं पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा। ,,

८४ सबको विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिये सबेरे शत्रुओं का नाश कीजिये। २५५४

८५ आल्हा ऊदल अपने महल में गये और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास में उन्होंने आनन्द से रात बिताई। २५५५

८६ पहर रात रहे स्नान कर गोरखनाथ का ध्यान होम नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का साम्हना करने को घोड़े पर सवार हो दोनों भाई का चलना। ,,

८७ ऊदल का मां को आकर प्रणाम करना, मां का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बजाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो। ,,

८८ ऊदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खेलूंगा और पृथ्वीराज को भगाऊंगा। २५५६

८९ देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के कार्य में शिर देकर स्वर्ग का राज्य करो। ,,

९० ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुनकर सती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है। ,,

९१ राजा का सवेरे उठ कर नगारे पर चोट दिलाना और आल्हा को बुलाना। २५५७

९२ आल्हा ऊदल को बुलाकर नागौर की ओर बढ़ने की तैयारी करना। तैयारी का वर्णन। ,,

९३ परिमाल देव का डर से काँपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीत कर मुझे कालिञ्जर पहुंचाओगे तो मैं आधा राज्य पांच लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हे दूंगा।

९४ चंदेल की सेना का आगे बढ़ना। २५५८

९५ चंदेल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना। उधर आल्हा और ब्रह्मानन्द का अपनी सेना को सजना। ,,



रासो सार का सूचीपत्र।

सूचना।

——:o:——

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डाकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	|=)	)॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित) ...	|)	)॥
समालोचना (पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र-(पण्डित नारायण पांडे रचित)	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	|)	)॥
हरिश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
भगवद्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	|-)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) १६ भाग छप चुके हैं (सातवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेक्चर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	)॥
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	|=)	)॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	|)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	|-)	)॥
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी अनुवादित) ...	≡)	)॥
श्रीधर कवि का जंगनामा	॥|)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	|-)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित	॥=)	-)
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१|)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	|)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	||)	-)
आनन्दघन कृत विरहलीला	=)	)॥
जोधराज का हम्मीररासो	२)	≡)
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	|=)	-)
पद्माकर कृत हिम्मतबहादुर विरदावली	॥|)	-)
भूषण ग्रन्थावली	१॥=)	-)॥
मान कविकृत राजविलास	२)	-)॥
चित्रावली कवि उसमान कृत	२)	-)॥
राज्य प्रबन्ध शिक्षा	॥|)	-)

	मूल्य	डाकव्यय
बाबू राधाकृष्णदास का जीवन चरित्र	॥=)	-)
भाषा	≡)॥	)॥
सम्राट पंचम ज्यार्ज का जीवन चरित्र	॥)	-)
सौरी सुधार	॥)	-)
छूतवाले रोग और उनसे बचने का उपाय	१)	-)
सिन्ध देश का इतिहास	।=)॥	)।
युवती योग्यता	≡)॥	)॥
बोपदेव	=)	)॥
शेख मोहम्मद बाबा	-)	)॥
लेखक और नागरी लेखक	=)	)॥
दुःखनी बाला	-)॥	)॥
निःसहाय हिन्दू	।)	)॥
परिचर्या प्रणाली	।)	)॥
महाराणा प्रतापसिंह	।।।)	-)
मानस कोष अर्थात् अकारादि क्रम से रामायण के शब्दों के अर्थ... ...	१)	-)॥
हिन्दी शब्दसागर अर्थात् हिन्दी का बृहत् कोश जो बड़े आकार के ९६ पृष्ठ के खण्डों में प्रकाशित होता है। चार खण्ड छप चुके हैं। प्रत्येक खण्ड का मूल्य ...	१)	-)॥
हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज की सन् १९०६-०८ की रिपोर्ट अंगरेज़ी और हिन्दी में ...	३)	≡)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ३ पुस्तकों को छोड़ कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं।

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-22.

THE PRITHVÍRAJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

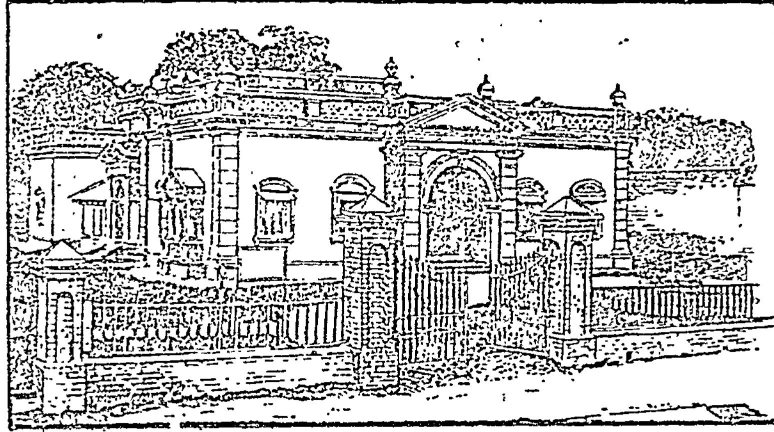
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTO LXIX.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६९

PRINTED BY PT. BAIJNATH JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1913.

मूल्य १।) Issued 28th August 1913. *Price Rs. 1/4/.*

सूचीपत्र ।

निवेदन ।

इस भाग के साथ यह ग्रंथ और इसका सारांश समाप्त होता है। अब केवल इसकी भूमिका का प्रकाशित होना बाकी है। इसे लिखने का भार पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने अपने ऊपर लिया था पर गत दिसंबर मास में उनकी शोकजनक मृत्यु के कारण यह काम न होसका। इधर ६ महीने से अधिक हुआ कि मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। अतएव मैं भी अभी तक इस काम में हाथ नहीं लगा सका हूं। ईश्वर की अनुकंपा से स्वास्थ्य ठीक होने पर इस काम में हाथ लगाने का संकल्प है और उसे यथासाध्य शीघ्र समाप्त करके रासो के प्रेमियों की सेवा में उपस्थित करने की इच्छा है-आगे उस लीलामय की लीला वही जाने-

१५-७-१३ श्यामसुन्दर दास।

दियौ राज फुरमान डेरा सिधारे। किये कवच अंगं निहगं हकारे॥
दिये पंच हज्जार सथ्थं चदेलं। चले बाग बाजै समाजै सुभेलं॥
छं० ॥ ४० ॥

निकट्टं सुवागं बचन्नं पुकारे। बढौ बेगि रजपूत प्रिथिराज वारे॥
सुनी कान्ह बानी गुमानी चलाये। अभंगं बली बाहु जंगं मिलाये॥
छं० ॥ ४१ ॥

करै षंड षंडं भसुंडैनि भारै। हथ्यारं धरै वीर ऊदल हकारे॥
सुनी नंद जस राज के लारवालै। प्रिथीराज को लौन पग्गां उजालै॥
छं० ॥ ४२ ॥

हुहै बोलि बानी दलं मध्य आयौ। पिरंचे बली बाहु अस्वं चलायौ॥
चलावंत लूधी बंदूकैं विरत्ती। परैं फुट्टि न्यारी उडै लागि छत्ती
छं० ॥ ४३ ॥

वरं तीर मारे बरन्नं बनंके। उरं फुटि सन्नाह धरती पनंके॥
लगी सेल छत्ती समंती भनारे। मनो जावकं माठ कीनै पनारे॥
छं० ॥ ४४ ॥

बहै तेग कंधं करै सीस न्यारे। परैं टूटि तरबूज धरती पनारे॥
लगें हीक जमदाढ पीकं अटारी। किधौ दुलहनी हथ्थ काढ़े कटारी॥
छं० ॥ ४५ ॥

जटारी धरं रंजकं वार नावै। मनों सर्पिनी तक्क पूछं बनावै॥
सिरं हूर प्रिथिराज को नौनं कीजै। तजैं रंजकं जौध वाथीन लीजै
छं० ॥ ४६ ॥

भये लथ्थ बथ्थं दुहैं सेन वारे। किधौं आमिषं काज जुट्टे सुनारे।
लगें पंजरं पंजरं वार कारे। भुजा जारकै तोर सुक्की उरारे॥
छं० ॥ ४७ ॥

भगी फौज चंदेल की ऊद जानी। लषी नैन परिमाल मल्हन्न रानी॥
चल्यौ सैन रन सैं पिल्यौ ऊद भारी। गह्यो सेल हथ्थं सुसेलं पचारी॥
छं० ॥ ४८ ॥

उतै कनक चहुआन रजपूत धायौ। वरं बीर उदल पै कूदि आयौ॥

लग्यो कनक चहुआन जदिल मारी। हन्यो सेल छत्ती सुवत्ती प्रचारी ॥
छं० ॥ ४९ ॥

हन्यो उद्द नैं अंध धरती मिलायौ। कियौ जुद्ध चहुआन रजपूत चायौ
लग्यौ चौक उद्दिल को आप नेजा। पर्यौ फूटि चहुआन धरअंतसेजा॥
छं० ॥ ५० ॥

लगी तेग [illegible] ल की वंकवारी। भयौ मूरछित उद्दिल धरनीन भारी॥
छं० ॥ ५१ ॥

चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस घायल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना ।

कवित्त ॥ कटे खेत चंदेल सूर। इक सहस अमानह।
गिरे बनाफर साठ। इक उद्दल परमानह ॥
परि परिहार पचास। परे चेरा सत सोई।
गहरवार सत दोइ। लोइ अंतह सिर छोई ॥
चहुआन परे घाइल कनक। वीस और सँग पग्गई ॥
कविचंद कहत परिमाल सो। प्रिथीराज सों लग्गई ॥
छं० ॥ ५२ ॥

दूहा ॥ परे वीस घाइल समर। और कनक चहुआन ॥
गिरे जद रन मूरछा। कटि दासी वपुयान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥ कटि दासी वपुयान। लषे परिमाल अवासह ॥
सहस एक चंदेल। सेन खेल्हैं करितासह ॥
लगी राइ परि साल। चाइ प्रिथिराज सु तुम्मर।
कहैं चंद वरदाय। वीस घाइल परि सम्मर ॥
खलभद्द हेद जय्यप परनि। पर घाइल सहुवे गवन।
कीनौ विरुद्ध चहुआन सौं। भविषि वात सिट्टिषि कवन ॥
छं० ॥ ५४ ॥

चौपाई ॥ परे बीस घाइल रजपूतह। सहस रक्क चंदेलहि भूतह ॥
गहरवार सत दोइ सुमानौ। साठि इक्योबन सो अति जानौ ॥
छं० ॥ ५५ ॥

यह समाचार सुनकर कि चंदेलों ने मेरे घायल वीरों को मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ।

दूहा ॥ कहै मिथ्य कानन सुनी । घाइल हनत सुजान ॥
चाहुआन चंदेल सौं । कलि जंगी अति मान ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामंतों को इकट्ठा करके यह समाचार कह कर परामर्श करना।

कवित्त ॥ सुनिय वचन चहुआन । करिव चंदेल विरुद्धह ॥
हन घाइल विन चूक । और दासौ तिन सध्यह ॥
सुनौ कन्ह कैमास । सुनौ जादौ रा जामं ॥
सुनौ चंद पुंडीर । सुनौ गुज्जर रा रामं ॥
चावंड राइ सुनियौ श्रवन । सलष पजून विचारियव ॥
संजम्म राइ निड्डुर सुनौ । तत्त सुमत्त विचारियव ॥
छं० ॥ ५७ ॥

सामंतों का महोबे पर चढ़ाई करने और परिमाल देव को मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त दिखलाकर कूच करना और पहिले दिन बाग़ में डेरा देना।

पद्धरी ॥ उच्चर बघेल लष्षन समथ्थ । संनियौ देस महुवौ सुहथ्थ ॥
उच्चरिय वत्त चहुआन कन्ह । भंजिय भूप महुवौ सुथन्न ॥
छं० ॥ ५८ ॥
चावंड बोलि विरदालि वंक । धारहू टेक मारहु निसंक ॥
बुल्लियौ चंद पुंडीर वीर । पक्करि नरेस परिमाल धीर ॥
छं० ॥ ५९ ॥
सज्जिए राइ बोल्लिव विरत्त । कड्डिये भूप चढिये सुरत्त ॥
सारंग बोलि वानी विराट । कड्डिये माल परिमाल थाट ॥
छं० ॥ ६० ॥
सुनि मंत कुमद निड्डुरि नरेस । मारिये वेस महुवौ सुदेस ॥

बोल्यौ सुजैत मतनैस सुद्ध। कीजिय जु वेगि चहुआन जुद्ध ॥
छं० ॥ ६१ ॥

षचखेस बोलि भट्टी सुरद्ध। भौंहा च'देल बुल्लिय विरुद्ध ॥
हाठिय सुदेस च'देल धीर। गोइंद बोलि रावत्त वीर ॥
छं० ॥ ६२ ॥

कोपियै राज परिमाल साज। कट्टिग वीर चढिग समाज ॥
उदलो सु सांषुला कढिय कोह। चढ्ढियै राइ अति क्रोध छोह ॥
छं० ॥ ६३ ॥

सामंत सूर अति विरत होइ। थप्पयै मत्त कयमास सोइ ॥
हाहिमा बोलि अग्गै नरेस। चितयौ मत्त भरसू धनैस ॥
छं० ॥ ६४ ॥

जैचंद करिय ऊपर च'देल। किजियै मत सविधान पेल ॥
कनवज्ज और महुवौ सुवेस। रंजियै भूप नृप विनय देस ॥
छं० ॥ ६५ ॥

थप्पयै मत्त चहुआन सुद्ध। धरियै परम्म च'देल जुद्ध ॥
बुल्लाइ चंद बरदाइ सोइ। अब भवषि वात तिह अगम होइ ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बुल्लाय राम गुरराय राज। कढ्ढियै महूरत वेग साज ॥
रचि कुंड सुंड सुचि होम सार। साकिल्ल कीन मारन विचार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

वनजाय निसष सिवदास चाढि। उत कुंभलान काहीय काढि ॥
अढि अस्त माल जपि रुंडमाल। चियलोक विजय धुव संडिपाल ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कैतगी पुहप्प हर पर चढाइ। कांसेक फूल हित करि चढाइ ॥
चक्कोर आप नृप दरस दीन। षंजन सिषंड वपु प्रसन कीन ॥
छं० ॥ ६९ ॥

रवि जोग पुहप तिय थान चंद। पंचमौ सूर आनंद कंद ॥
सातमौ सुक्क दस गुरू जान। नौमौ सुबुद्ध बल अधिक पान ॥
छं० ॥ ७० ॥

तीसरौ सनीचर छठौ केत। पंचमों भौम अरि दहन नैत ॥
ग्यारहौं राहु वल अति अनंद। पारथ्थ जेमि वल चढय इंद ॥

छं० ॥ ७१ ॥

कीनौ मुकाम नृप वाग आय। छत्तीस वंस हैमर संगाय ॥

छं० ॥ ७२ ॥

रात को वहां रहकर कर घड़ी रात रहे उठ नित्य क्रिया कर, सब सरदारों को पृथ्वी राज ने बुलाया ।

कवित्त ॥ गैर महल प्रिथीराज। सषी सब कारन दिन्नव ॥
कुसुम पटा सिर पाग। लाग कंद्रप रस किन्नव ॥
पहर निसा रहि जागि। सुकीन क्रिया क्रम अंगह ॥
सीष दीन सुंदरिय। चीर कीनौ वपु जंगह ॥
कयमास वोलि अग्गौ लियव। दीरघ नाद बजाइ थव ॥
चहुवान कन्ह नृप राम गुरु। सव सामंत सु हाइव ॥

छं० ॥ ७३ ॥

सब सरदारों को इकट्ठा करके सभों की सवारी के लिये घोड़े बाँटना और कूच की तयारी करना ।

हनूफाल ॥ नृप अंग वम्म कराय। कयमास अग्ग बुलाय ॥
चहुआन कन्हर चंद। गुरु राज आनंद कंद ॥

छं० ॥ ७४ ॥

साहनी सर्व हिय साज। विलहना वंटन राज ॥
हय मोर कन्हर दीन। ऐराक वंस नवीन ॥

छं० ॥ ७५ ॥

सिरताज आरव सुद्ध। कयमास दीन विवुद्ध ॥
हयराज चावंड कज्ज। पंधार उपजिब मज्ज ॥

छं० ॥ ७६ ॥

हय रतन चंद पुंडीर। पज्जून सिंह मर हीर ॥
हय मुकट गोइंद राज। मान्निक वाज समोज ॥

छं० ॥ ७७ ॥

हय सूर नरसिंघ दीन । तुरकी सुकोप अधीन ॥
हँस राज जैत पमार । लट्टिया सुबेगिन सार ॥

छं० ॥ ७८ ॥

सनध्यार निडुर लाइ । अस कहा धर उपजाइ ॥
है तेज रूप सुरज्ज । दिय राज देवन कज्ज ॥

छं० ॥ ७९ ॥

हंजिया सहि सतनेस । वड़ गुज्जरं कनकेस ॥
तूरान के अस टूल । समपियौ राय पज्जून ॥

छं० ॥ ८० ॥

बगसी सलेसी काज । समप्पियौ मानिक बाज ॥
अश्व कुसम धरि दल ढेल । बिलहना भौंह चंदेल ॥

छं० ॥ ८१ ॥

चहुआन हरि पद काज । समप्पियो सोतिय बाज ॥
लह सिंघ हेमर लीन । अचलेस कारन दीन ॥

छं० ॥ ८२ ॥

सुरषा सुसनसुष सूर । दिय अलह कारन तूर ॥
नवलेस को हय दीन । नृप हेम सरभरि लीन ॥

छं० ॥ ८३ ॥

हाहुलिय कारनि हीर । ताजी सुतेज गहीर ॥
हम्मीर काजै हंस । उपज्जियौ सुतुरकी वंस ॥

छं० ॥ ८४ ॥

गम्हीर काज तुरंग । रेसमी रंग सुरंग ॥
साधुल सहस मल काज । दिए पुरी राज सुवाज ॥

छं० ॥ ८५ ॥

सावंत और कुलीन । अन्नेक हयवर लीन ॥
सग्गाम षील नरिंद । वकसीस कीन सुचंद ॥

छं० ॥ ८६ ॥

गुरराय कारन कीन । दोय सहस हेमर दीन ॥
सग्गाय पाठ सिंगार । मदगलति गति जिमि मार ॥

छं० ॥ ८७ ॥

जत्तंग गिरवर अंग । मनु सिषर काजर रंग ॥
सिर घरचि लाल सिंदूर । मनु तडित घन मैं पूर ॥
छं० ॥ ८८॥

असवार है प्रिथिराज । कयमास संग समाज ॥
ता समय धू धुव पच्छ । चौकीर देवन घच्छ ॥
छं० ॥ ८९ ॥

सनमुष्ष सारद सद्द । अघ जीघन फन मद्द ॥
जा सीस बैठिव देवि । जलजात पंजन सेवि ॥
छं० ९० ॥

कग दषिन जची पाउ । सुप सैं सली भंष घाउ ॥
जल मांझ चकवन मिलि । सज करिय हित अति केलि ॥
छं० ॥ ९१ ॥

भए सगुन आनंद कंद । हंसि गंठि बंधिय चंद ॥
छं० ॥ ९२ ॥

धूमधाम से चंदेल को जीतने के लिये पृथ्वीराज का कूच करना ।

दूहा ॥ चलिव साजि सम्हरिधनिय । सामंत सूर सकज्ज ॥
व्यौर नयन चंदेल को । लोपिय सागर लज्ज ॥
छं० ॥ ९३ ॥

बीस हज़ार वीरों के साथ पृथ्वीराज का कूच करना। सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ चढिव राज चहुआन । लीन सामंत सूर वर ॥
अतुल तेज बल अतुल । सतुल सुर धरम मघावर ॥
बीस सहस सब संग । अंग कग्गल कसि भारिव ॥
चाहुआन राठौर । गौर, कूरम, बडवारिव ॥
गहलौत, बघेलौ, वग्गरिय । बडगुज्जर आदिक मिलव ॥
तौमर, पहार, षीची, मलहन । दाहिं बाम हाडा चलिव ॥
छं० ॥ ९४ ॥

मोतीदाम ॥ चल्यौ प्रिथिराज सुसज्जिय सेन । सजैं सब सांमत सूर सतेन ॥

सजैं चहुआन सुकन्ह समथ्थ । सजै कछवाह सु पज्जुन सथ्थ ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सजै संग चालुक सारंग देव । सजै सकवार सुलष्षन पेव ॥
सजैं संग दाहिम चावंड सूर । सजै कयमास लिये सुष नूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

सजै सकामधुज्ज सु निड्डुर राव । सजै वर संग सुकिन्ति चाव ॥
सजै संग औंह चंदेल सुधीर । सजै पंचलेस सु भट्टिय वीर ॥
छं० ॥ ९७ ॥

सजै परिहार सुअल्ह कुंवार । सजै सह सापुल सामंत लार ॥
सजै सुवघेलय लाषन लाय । सजै चहुआन सु संजमराय ॥
छं० ॥ ९८ ॥

सजै षतिताइय सूर सतन्न । सजै संगहाहुल राव रतन्न ॥
सजै संग गंभिर हाडहठाल । सजै भरजह हमीर सुचाल ॥
छं० ॥ ९९ ॥

सजै संग चंद पुंडीर मरद्द । सजै संग गौरस गाहिल हद्द ॥
सजै हरिचंद मलैसिव हद्द । सजै संग नाहर राय समद्द ॥
छं० ॥ १०० ॥

सजै परसंग सुमल्हन देव । सजै संग माल विसाल सुयेव ॥
सजै संग जादव जाम मरद्द । सजै गहलौत सगोयंद हद्द ॥
छं० ॥ १०१ ॥

सजै संग बुद्धय राय पगौर । सजै बिडराज सुषेत पंगार ॥
सजै संग बग्गर सादुल सोड़ । सजै संग माल चंदेल सुजोड़ ॥
छं० ॥ १०२ ॥

सजै संग भट्टिय भान गहीर । सजै संग सूर रठौर सुवीर ॥
सजै निरवान सुवीर मवाह । सजै संग वीर [illegible] अथाह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

सजै परिहार सुपीय मरद्द । सजै भर भीम जंघाल सुहद्द ॥
सजै संग मोरिय सारंग सूर । सजै संग तेजल डोड करूर ॥
छं० ॥ १०४ ॥

सजे वलिभद्र सुमल्ल सदेस। खलभ्भल पूरन मल्ल महेस ॥
सजे संग धांधुल राव परम्म। सज्यौ संग रावत राम गुरम्म ॥
छं० ॥ १०५ ॥
लिये संग सावंत सूर सपन्न। किए जुध चाव उपाव मगन्न ॥
चले दर कूंच किये चहुआन। चंदेलन ऊपर क्रोध निदान ॥
छं० ॥ १०६ ॥
भजे खुमियां निज छाडिकै देस। बसैं वन मंदिर कंदर भेस ॥
चले सगद्धद सुघट्ट रु वाट। पिले दल सावंत दारुन ठाट ॥
छं० ॥ १०७ ॥
सुनी परिमाल की यानव ताम। तिरस्सव कोपि दह्यो बड़ ठाम ॥
छं० ॥ १०८ ॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई का समाचार परिमाल देव को मिलना, परिमाल देव का अपने सब सरदारों को इकट्ठा करके सलाह करना। महला मोपाति की चुगली से आल्हा और ऊदल का अलग होना।

कवित्त ॥ मल्लिष्यान सुनिपत्त। सत्त वजरंग उपाइव ॥
पीथीरा पा धरै। सैन चौरैं सजि आइव ॥
नहीं आल्हन ऊदल्ल। करहि उप्पर भर संगह ॥
महला मोपति चुगल। चारि परिहार सुअग्गह ॥
अरिसिंघ बोलि नरसिंघ। विर सिंघ सत्त सुलिज्जियव ॥
जयसिंघ सूर बंधव बली। मिली अनी किहि किज्जियव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चौपाई ॥ मल्लिपान अरिसिंघ बुलायव। नरसिंघ हरीसिंघ सब आयव ॥
जयसिंघ बोलि कीयौ सप गट्टव। प्रिथीयं राज जुद्ध करि विट्टव ॥
छं० ॥ ११० ॥

परिमाल देव की सेना का तयारी करना, पृथ्वीराज और परिमाल देव की सेना का सामना होना, घोर युद्ध होना,

पृथ्वीराज के सरदारों का परिमाल देव के बड़े बड़े सरदारों को मार गिराना ।

भुजंगी ॥ सुनी मल्लिषानै करन जुद्ध मंडे । अरीसिंघ विरसिंघ नरसिंघ दंडे ॥
सजे अंग जयसिंघ भाई सुपंचौ । करैं नौन परिमाल कौ आज संचौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

सहस्त्रं सजे संग भाई भतीजे । सहस्रं सजे सूर असवार बीजे ॥
बंधी फौज थट्टं गरद्दं चलायौ । सजे कंगलं अंग नैनं छिदायौ ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कियौ नंद नीसान फौजं सुफेरी । भिदी दिष्टि सौं दिष्ट चहुआन केरी ॥
सुषं अग्र कन्हं सुकैमास बीरं । नरं नाह चामुंड कनकं गहीरं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

बरीसिंघ वीरंम गोयंद राजं । इतें अग्र सामंत रचि बुद्धि साजं ॥
बरं बीर सारंग सोरी महन्नं । पवारं सलष जैत जुद्धं सहन्नं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

पजूनं वरं कच्छवायं सपीयं । जुरे जास जद्दू दिसा दिष्षिनीयं ॥
धरंधीर भल्लार पुंडीर चंदं । अचल्लेस भट्टी पहारं सुइंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

बघेला लषन भीम मारू महन्नं । भरं छाहुली और हम्मीर पैनं ॥
इते कीन सावंत वांई भुजानं । रची फौज चंदेल गोयं रिसानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥

विचै राज प्रिथीराज सज्जै सयन्नं । सज्जे नंद नीसान गज्जं गयन्नं ।
लष्यौ मल्लषानं दिष्यौ चाहुआनं । उठी वाग वीरं गहीरं गुमानं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

लषी फौज चंदेल की वीर पिल्ले । धराधीर पत्ती वरावीर मिल्ले ॥
करे षंड षंडं भसुंडैं न भारी । छकं छाक लग्गैं बजै षग्ग तारी ॥
छं० ॥ ११८ ॥

अन्यौ अन्नवारी कहै वीर दोई । कटं काट कट कूट घट घूम होई ॥
लटं लागि लग्गे घटं बारि छत्ती । पटं पंक रंती विहौ अंग मत्ती ॥
छं० ॥ ११९ ॥

घटक्कै घटं सो विहो सूर वारे। गटक्कंति गिद्धनि दोऊ सूर सारे ॥
चटक्कंति धावंति नटं वीर नंचै। चरग्गी चषैया चटं चार संचै ॥
छं० ॥ १२० ॥

जटं श्वान कै सीस जट्टाल लेई। भरभ्भार भारैं उभारैं सुतेई ॥
टटं ओय रथ्थे रहे अच्छरेसं। यटं सूर धावंत नावंत तेसं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

उडक्कंत डौरू चहू फेर सद्दं। ढढक्कंत ढक्कंत ढूकंत मद्दं ॥
रनक्कंत रोसं करे पैज धावै। तटक्कंत छोहं सुलोहं मनावै ॥
छं० ॥ १२२ ॥

घटं काटि चंदेल कौ साथ सारौ। दढं दाढ कन्हं मिल्यौ जुद्ध भारौ॥
धकं मल्ल सानं जुधावै रसानौ। नटं जेम नाटंत आचेत मानौ ॥
छं० ॥ १२३ ॥

पठंवीच कन्हं वटं विचि आयौ। हन्यौ अंग मलिषान धरनी मिलायौ
भग्यौ सर्व थानं सुपरिमाल वारौ। चल्यौ सूर नरसिंघ पग्गं सुभारौ॥
छं० ॥ १२४ ॥

लषे दोइ नरसिंघ विरसिंघ वीरं। लषे चंदपुंडीर सुद्धं गहीरं ॥
गह्यौ कुंत चंदं हन्यौ छीक सोई। गिर्‌यौ सिंघ नरसिंघ चकचूर होई॥
छं० ॥ १२५ ॥

लष्यौ चंद पुंडीर वरसिंघ तैसौ। हन्यौ धाइ पग्गं घटं धाइ एसौ॥
लग्यौ चंद कै घाइ घूम्यौ सुअंगं। पछैं मारिग्यौ चंद वरसिंघ जंगं।
छं० ॥ १२६ ॥

उतै देषि चामुंड जयसिंघ धायौ। तजे आयुधं मारु वथ्थं भरायौ॥
सरैं मल्ल जंगं अभंगे सुसोई। धरक्कै सुधरनी धरक्कै सुदोई ॥
छं० ॥ १२७ ॥

अन्यौ अन्य मुक्की वरं वीर बाहैं। गहीरं गुमानी अमानी उगाहैं ॥
उतैं दौरि चामुंड चरनं गहायौ। समानं हयं दाटि धरनी मिलायौ।
छं० ॥ १२८ ॥

हन्यौ राय चामुंड जैसिंघ भाई। तवै अंग वरसिंघ जंगं भगाई ॥
मुर्‌यौ सिंघ अरिधंग दाडं पलाई।लयौ सिरसवा नग्र चहुआन चाई॥
छं० ॥ १२९ ॥

सिरसा के टूटते, बहुतसी सेना मारी जाने पर अरिसिंह का भागकर महोबे जाना।

दूहा ॥ तोरि सिरसवा नग्र नृप । हनै सैन रन भाइ ॥
अरिसिंघ भाइ मराय कै । भग्यौ महोबै जाइ ॥
छं० ॥ १३० ॥

अरिसिंह का परिमाल देव से सिरसा के युद्ध में मलखां वीरसिंह नरसिंह जैसिंह आदि वीरों के मारे जाने और पृथ्वीराज की बिजय का समाचार कहना।

कवित्त ॥ मलषान रन परेउ । जान छत्री पन सिष्षव ॥
करौ तौन हल्लाल । ख्याल देवन गन दिष्षव ॥
परि विरसिंघ नरसिँघ । परे जैसिंघ अमानह ॥
भगि अरिसिंघ से भाइ । गयौ चंदेल सुथानह ॥
परि छोढ सहस ठाकुर अवर । चारि सहस संगी रहव ॥
पच्चास गिरे प्रिथीराज के । लरि सुरपुर इतने गयव ॥
छं० ॥ १३१ ॥

चौपाई ॥ मल्लिषान अरिसिंघ विरसिंघ परि । परि जैसिंघ अंग घावन झरि ॥
छोढ हज्जार वंघ परि अंगिय । च्यारि हजार सु ठाकुर[1] संगिय ॥
छं० ॥ १३२ ॥

भगि अरिसिंघ महोबै आइव । सिरसवाह भाई मरिवाइव ॥
सो परिमाल सुनी इह कौनह । अंतर उर उपज्यौ चहुआनह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

फिरि फिरि बेगि पुकार सु आइव । प्रिथीराज सब देस दुहाइव ॥
सो परिमाल नृपति सुध लिज्जिय । सनमुष साज जूझ बल किज्जिय ॥
छं० ॥ १३४ ॥

परिमाल देव का यह सब समाचार सुनकर अपने बेटों और

(१) रासो के और समयों में ठाकुर शब्द कहीं नहीं आया है।

सरदारों को बुलाकर परामर्श लेना कि अब क्या करना चाहिये।

कवित्त ॥ सुनिव वत्त परिमाल। काल आयौ प्रिथिराजह ॥
सन्निपात कौ सोरि। मारि विर सिंघ सु साजह ॥
भंजि सिरसवा नग्र। गंजि नरसिंघ वीर रन ॥
हनि जयसिंघ दुवोह। देस दग्धियौ लुट्टि घन ॥
चहुआन सबल सम्मर करन। पातिसाइ गहि छंडियव ॥
बुल्लाइ कुँवर परिगह सकल। जूझ किद्धी विधि मंडियव ॥
छं० । १३५ ॥

चौपाई ॥ सुत चंदेल बुलाइव दोइय। मह्ला भोपति परिगह सोइय ॥
कोइथ श्रीवासह कलियानह। उच्चरि वचन राज मन्नियानह ॥
छं० ॥ १३६ ॥

कवित्त ॥ बुल्लि सुतन परिमाल। बुल्लि काइथ कल्यानह ॥
बुल्लि वैस नारैन। गौर सारँग मलियानह ॥
गहर वार गोयंद। भाट जगनक ढिग बुल्लिव ॥
प्रोहित केशव समुझि। राज वनिय वर खुल्लिय ॥
आइयौ सेन चहुआन सजि। जुध जालिम सब हारियव ॥
हित होइ सोइ जोई कहौ। तत्त सुमंत विचारियव ॥
छं० ॥ १३७ ॥

रानी मल्हनदेवी का कहना कि दो महीना युद्ध बन्द करके जगनक को भेजकर आल्हा को बुलाइए और पृथ्वीराज के पास मल्हन को भेजकर दो महीना लड़ाई बन्द रखने को कहलाइए। रानी का मत सब के मन में भाया।

चौपाई ॥ रानी मल्हन दे यह भाषिय। राजा जूझ मांस दोय राखिय ॥
जगनक पठयव आल्ह बुलाइव। पंग काज अर दास पठाइव ॥
छं० ॥ १३८ ॥

रानी बात कही सब मानिव । पीथल कौं सौगात पठाइव ॥
जल्हन पठय नजरि सब दिज्जय । मास दोय मुक्काम सुकिज्जिय ॥
छं० ॥ १३९ ॥

पचास हजार पान, गुलाब, बन्दूक, बर्छे और कच्छी घोड़े सौगात में लेकर जल्हन का पृथ्वीराज के पास जाना और पत्र देना ।

पान हजार पचास पठायव । जे सह छंदनि मह सब गाइव ॥
अन्न गुलाब बंदूक वरच्छिय । हैमर वाय चढन के कच्छिय ॥
छं० ॥ १४० ॥

लै सौगात जल्हन चल्लिय । प्रिथियराज सु नदी परि मिल्लिय ॥
दै कागद सब नजरि सु दिन्नय । सब प्रमोद मिलन कौ किन्नय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

जल्हन का पृथ्वीराज से कहना कि बनाफर (आल्हा ऊदल) रूठकर कन्नौज जा बैठे हैं उन्हें लाने को राजा ने जगनक को भेजा है सो आप क्षात्रियधर्म के अनुसार उनके आने तक युद्ध बन्द रखिए ।

राजा जगनक कनवज पठयौ । जहाँ वनाफर रूठ सु वठयौ ॥
अल्हा आए जुद्धा विचारौ । जो पीथल छची अम धारौ ॥
छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज ने नजर रख ली और आल्हा के आने तक युद्ध बन्द रखना स्वीकार किया ।

पीथल नजरि सौंज सब रष्षय । वचन जल्हन सौं श्रीमुष अष्षय॥
सब सामंत लरन कौ भरियौ। आवइ आल्ह जबहिं जुध करियौ॥
छं० ॥ १४३ ॥

जल्हन का महोबे लौट आना, पृथ्वीराज का वहीं डेरा डाल कर रहना ।

दूहा ॥ कागद लै जल्हन चल्यौ । हल्यौ महोबै ठाम ॥
डेरा करि सरिता निकट । पीथल कियौ मुकाम ॥
छं० ॥ १४४ ॥

पृथ्वीराज का चंद वर्दाई से पूछना कि आल्हा ऊदल चंदेल से क्यों रूस गए हैं ।

फिरि राजन वरदाय सौं । वानी बोल्यौ एम ॥
आल्ह ऊद चंदेल सौं । रूसि गयौ सो केम ॥ छं० ॥ १४५ ॥

चन्द का कहना कि पहिले चन्देल के यहां दसराज सेनापति था उसने गोंड लोगों की लड़ाई में बड़ी बीरता की, सिर कटजाने पर धड़ही से सहस्रों वीर शत्रुओं को मारकर चन्देल राजा की विजय कराई ।

कवित्त ॥ कान मंड चहुआन । कहिय वरदाइ मत्त गति ॥
प्रथम देस परिमाल । रहै दसराज सेनपति ॥
गढ़ौ लौ नृप जाय । करी गोंडन सौं जंगह ॥
पर्यौ चोल चंदेल । झेल घन रन अपु अंबह ॥
रुक्यौ तेन अरि सेंन सब । माम मरन जुड़िय धरिय ॥
खिल्यौ ष्याल बिन सीस धर । काम आय फत्तें करिय ॥
छं० ॥ १४६ ॥

चौपाई ॥ गंठा नगर चंदेल सुलग्गिव । गौड सिमिटि जुध कारन पग्गिव ॥
भगिव सैन लष्यौ जस राजह । दीनौ सीस स्वामि के काजह ॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ चालु परैं रुक्यौ सबैं । काम आय जसराज ॥
मारि गौंड लीनौ गढां । सिर दै स्वामि सुकाज ॥
छं० ॥ १४८ ॥

राजा विजय करके महोबे आया और आल्हा ऊदल को बुला कर बड़ा आदर किया और सेनापति बनाया ।

चौपाई ॥ राजा जीति महोबै आइव । आल्हा उद्दिल पाय लगाइव ॥
है जसराज महातम सारौ । सैनापति धरतौ रषवारौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

रानी मलहन देवी आल्हा ऊदल को अपने बेटे ब्रम्हानन्द की तरह मानती थी ।

करै प्यार मलहन दे रानीय । ब्रह्मानंद जेम सुत मानिय ॥
सब धरनी मह हुकुम सुसाजौ । सुजस जेमि अल्हन कर साजौ ॥
छं० ॥ १५० ॥

महला और भोपति ने राजा से चुगली की कि आल्हा ऊदल के पास पांच बछेड़े ऐराकी घोड़े के बडे उत्तम हैं ।

ऐराकी घर घेरिय जाय । पांच बछेरा लगै सुहाय ॥
महिला भूपति चुगली कीनिय । सो परिमाल मानि सब लिन्निय ॥
छं० ॥ १५१ ॥

राजा कालिञ्जर देखने को गया और वहां आल्हा को बुला कर उन पांचों बछेड़ों को मांगा और बदले में बहुत घोड़े लेने को कहा ।

नृपति कलिंजर देखन किन्नव । राजा आल्ह बुलाइ सु लिन्नव ॥
पाच बछेरा मांगै दीजै । उनकौ साटै हय बहु लीजै ॥
छं० ॥ १५२ ॥

आल्हा की मां का बेटे से कहना कि बछेड़े कदापि न दो बरञ्च देश को छोड़ दो और कन्नौज चलकर रहो ।

घर बैठे देवल दे षिज्जिय । पूत बछेरा दै नन किज्जिय ॥

वास छांडि कनवज्ज कहँ चल्लिव । राजा दल पंगुर सह मिल्लिव ॥
छं० ॥ १५३ ॥

परिमालदेव ने फिर कहा कि या तो बछेड़ा दो या हमारा देश छोड़ दो ।

नृप परिमाल कही सुष बानिय । आल्हा देव बछेरा आनिय ॥
नां तर वास छांडि कै चलिये । आनहि ठाम ठिकानो करिये ॥
छं० ॥ १५४ ॥

आल्हा यह सुन घर लौट आया और अपने घोड़े आदि सब साज़ाबाज़ लेकर कन्नौज की ओर चल पड़ा ॥

सुनि करि वचन आल्ह घर आये । छंडौ वास पयान कराये ॥
साहन वाहन सबही लीनौ । कनवज दिसा पयानौ कीनौ ॥
छं० ॥ १५५ ॥

भोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड दिया ॥

जागीरीं भोपति की मारिय । वसती मारि सबैं उज्जारिय ॥
परिपाटी परिहार सु बुड्डिय । उद्दिल सुष काहू नहि रुक्किय ॥
छं० ॥ १५६ ॥

आल्हा ऊदल का क़न्नौज पहुंचना, जैचन्द का बड़े आदर से उन्हें अपने पास रखना ।

कवित्त ॥ आल्ह गयौ कनवज्ज । छाड़ि परिमाल वास वर ॥
भोपित की जागीर । बाध उज्जार जारि घर ॥
करि आदर जैचंद । दियव बड देस सुभारिय ॥
घोरे पांच मंगाय । दोय हथ्थिय हितकारिय ॥
मोतिन माल उतंग अति । हीरा पहुंची सहरिय ॥
दसराज सुतन अरचौ अधिक । मिलि मारू संगल भरिय ॥
छं० ॥ १५७ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवैगा और घोर युद्ध मचावैगा।

दूहा ॥ चंद कहै प्रिथीराज सुनि। विरस आल्ह कौ गाय ॥
मनौ वनाफर आइहै। रुंडन मुंड नचाय॥ छं० ॥ १५८ ॥

जगनक ने कन्नौज पहुंच कर चिट्ठी आल्हा को दी और सब समाचार कहकर महोवा चलने के लिये परिमाल की बिनती सुनाई।

कवित्त॥ गय जगनक कनवज्ज। दीन आल्हा कर पत्रिय ॥
ऊदल ईदल जोग। दई देवल है संचिय ॥
पीथोरा पट्टरिय। साजि मद्दुवे वर आइव ॥
मलिखान वरि लिंघ। वली नरसंघ जुझाइव ॥
अलि भज्जि सिरसवा संभरिय। देस चंदेल दहाइव ॥
परमाल थाल दुइ मास रष। सो तुव पास पठाइव ॥
छं० ॥ १५९ ॥

चौपाई॥ अव तुम आल्ह विसरू करि चल्लि। मल्हन दे अति दुष रुष घल्लि॥
वैठी महलै वाट सु जोवै। कनवज्ज दिसा देषि करि रोवै ॥
छं० ॥ १६० ॥
जव दल जोरि पिथोरा आइव। सिगरौ देस उजारि दहाइव॥
भग्यौ मद चंदेलन को सब। आल्हा सुनि पछिताय महा तव ॥
छं० ॥ १६१ ॥
सो गुदराय करौ तुव जाइव। जयचंद को अरदास पठाइव॥
जुमक मांगि कैसे गह लीजै। वग्ग न घाल वनाफर कीजै॥
छं० ॥ १६२ ॥

जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है कि महोवा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को

दूर करै सूर सामंतों को आगे ... बेखटके चौहान से लड़ै । सु

कवित्त ॥ सुनि जगनक किय वत्त । आल्ह वुल्यौ करि वानि य॥
लुत्यौ महोवौ नगर । कुट्ट चंदेल गुमानिय ॥
विना चूक परिमाल । किये फिर देसह न्यारे ॥
काम आइ जसराव । सवै नृप काम सुधारे ॥
परिहार सैन आनह धरह । चुगुली चाहिन कान लहु ॥
सामंत सूर सनमुष्यहु । जुड़ करहु चहुवान सह ॥
छं० ॥ १६३ ॥

चौपाई ॥ सुनु जगनक यह बात सुमानिय । हमनै राज कछू नहिं जानिय ॥
हम सिर वांधि महोवै रष्यिव । नृप चंदेल चुगल दिसि दिष्यव ॥
छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ हम मारे सब गोंड । देवगढ दावा चारिव ॥
हम जादौ रन भंजि । धरा हिंडोल उजारिव ॥
हम कटहरिये काटि । थाहि परिमाल देस दल ॥
हम कूरम किरवान । दाढि लीनों सु महावल ॥
लीनै सु पील जयचंद के । असी लाष गनिये सु तुछ ॥
सुनि वह भट्ट रजपूत की । राजन जानी नांहि कछु ॥
छं० ॥ १६५ ॥

हम आगैं पतिसाह । फौज भग्गिय दस बारह ॥
हम निसरत षां लूटि । किये दल कूटि वषारह ॥
हम जीते घर गाय । दहिक सो प्रवल पठानह ॥
हम रेवा तन वैर । वली हन्निव सुरतानह ॥
मेवात मारि हिंडोरधर । अंतरवेद दहाइव ॥
वघेल मारि वसुधा परिय । घर चंदेलन ल्याइव ॥
छं० ॥ १६६ ॥

चौपाई ॥ राजा दस जीते जसराजह । लीनी धर कंचन नग साजह ॥
जाकौ फल राजन इह किन्नव । हमको देस निकारो दिन्नव ॥
छं० ॥ १६७ ॥

जिन पाहै हम षे... ...ीनव । राजा जीत चालीसक लीनव ॥
सात वार घाइल ... ...अंगह । हम जित्यौ परिमाल सु जंगह ॥
छं० ॥ १६८ ॥

सात वार उद्दिल जुध किन्नव । जैतपच्च चंदेल सु दिन्नव ॥
तीन वार गढ भंजिव भारिय । अंत दया नृप की रषवारिय ॥
छं० ॥ १६९ ॥

कवित्त ॥ सात वार परि घाव । लगे चौरासी गातह ॥
जीति राज इक ईस । हसि कहि सैन सपातह ॥
स्वामि धम्म संग्रहव । सह्यौ दुज्जन दल जोरह ॥
गौंड मारि उज्जारि । पारि निसरति जंग तोरह ॥
वाजिन्न लोह तेरह बरस । पंचासन लगि छोह किय ॥
चंदेल चुगुल मानिय कह्यिय । तापर हम परदेस दिय ॥
छं० ॥ १७० ॥

जगनक का समझाना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल का बहुत कुछ सहायता की और चंदेल ने तुम्हारा भी आदर किया । तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का धर्म नहीं है ।

पद्धरी ॥ सुनि बत्त उत्तर भट्ट ताम । आल्हा नरेस सुनि श्रवन काम ॥
परिमाल छाडि बालक बाप । जंमाय धरा जसराज आप ॥
छं० ॥ १७१ ॥

चांदा सु पास लिय देहु दंड । वारी सुदेस गढ कीन षंड ॥
रेवा सुपार लिन लुट्टि सर्व । भज्जौ सुजोर जोरा सु गर्व ॥
छं० ॥ १७२ ॥

जाटवा राइ पग्गनि षिपाय । मेवात मारि धर लियेउ धाय ॥
पंचाल देस पंजाब थान । बैराठ देस-कौमल दिवान ॥
छं० ॥ १७३ ॥

मालवा देस लिय पास मारि । उदया पमार को घर उजारि ॥
फिरि गढा मारि गट पेस कीन । चंदलराय बढाय दीन ॥

छं० ॥१७४॥

यह बत्त सुन्नि परिमालराज । आए सु काम दसरथ्थ राज ॥
सिर धुनिय आल्ह लीनौ बुलाय । आपनो देस सुद्खल पाय ॥

छं० ॥ १७५ ॥

तरवारि बंध सिर तिलक दीन । गैयर मग्गाइ वह वीर दीन ॥
किय सोइ अग्ग सिरदार सुद्ध । वाजियौ बनाफर नाव जुद्ध ॥

छं० ॥ १७६ ॥

बैठे सु पाट आल्हा नरेस । मारियो जाइ पूरब्ब देस ॥
पट्टान गया के सेर कीन । तह द्रव्व कोटि तिय लुट्टि लीन ॥

छं० ॥ १७७ ॥

सम सहावाद षग्गनि षिपोय । जीतयौ जुद्ध निसरत्ति जाय ॥
लीनौ सु षील जयचंद दौरि । केहरि कठेरि कौ मान मौरि ॥

छं० ॥ १७८ ॥

लूटी सु सिद्ध नव निद्धि भाय । हिंडवन देस जद्दव दहाय ॥
मारे सुवेस दल सबल दाहि । बघ्घेल बाघ वारी धराहि ॥

छं० ॥ १७९ ॥

चालुक सिंघ कौ गर्व गारि । पतिसाहि फौज कै बार मारि ॥
सत वार षेत परियौ सु द्वंद । धरि स्वामि धर्म जस राजनंद ॥

छं० ॥ १८० ॥

यह भभषि बात वर लहै कोइ । संकरै सामि छंडै न कोइ ॥
सांकरै सामि को छंडि जाय । अघघोर नरक रजपूत पाय ॥

छं० ॥ १८१ ॥

सांकरै परयौ चंदेल राय । तुम सही आज कनवज रहाय ॥
तुव होत बधाई नृपति कीन । सत लष्ष हेम भिष्षुकन दीन ॥

छं० ॥ १८२ ॥

रनवास आइ सब गान कीन । कर चाव मल्हन दे प्रबीन ॥
करि चाउ मल्हन दे कह्यौ मोहि । सो मात दिवल दे कह्यौ मोहि ॥

छं० ॥ १८३ ॥

जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन

दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है तुम्हें आना चाहिए।

दोहा ॥ देवल दे कानन सुनौं। कहि मलहन दे मोंहि॥
आरि परी चंदेल पै। हूँ मिलिवे की तोंहि॥

छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ देवल दे तुम वाचा वंधिय। धर परमाल धरा नहिं छंडिय॥
गढ को आनि लगै कोइ राजह। आल्हा सीस दियौ तुम काजह॥

छं० ॥ १८५ ॥

वाचा सार व्यास सुष गाइव। वाचा जग मैं मुक्ति वताइव॥
जे कोइ वाचा हार न करई। चंद सूर ते नरक सु परई॥

छं० ॥ १८६ ॥

दवल दे ने यह सुन बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लड़कर स्वामी का काम बनाओ।

सुनि वाचा देवल दे वुल्लिय। आल्हा सुतन महोवे चल्लिय॥
प्रिथीराज सो जुद्ध जु किज्जय। स्वामि धरम कौ जस वहु लिज्जय॥

छं० ॥ १८७ ॥

ऊदल ने फिर कहा जिस दुर्दशा से महोबे से परिमालदेव ने निकाला था वह भूल गईं, जगनक तुम महोवे लौट जाओ।

तव उद्दिल फिरि वोल्लिय वानिय। देहु महौवे की चक्क धानिय॥
बुरे हाल काढे परिमालह। सो अब भूलि गईं वह ष्यालह॥

छं० ॥ १८८ ॥

जगनक भट्ट अवै घर जावहु। नगर सोहवा लगे अभावहु॥
धर घट्टय दसराज उथप्पिय। हम कन्नवज उतन कर थप्पिय॥

छं० ॥ १८९ ॥

देवल दे ने यह कहकर कि मैं बांझ क्यों न हुई, मेरे बेटे

क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते हैं और संकट में स्वामी को छोडते हैं, रो दिया।

देवल दे कहि बांझ न रष्षिय। छत्री धर्म करम मय भष्षिय॥
सांमि सांकरै देह न कट्टिय। हो करतार क्रूंषि किम फट्टिय॥
छं० ॥ १९० ॥

माता दीन वचन करि रोई। तुम सव बनाफरन की षोई॥
जंग वचन सुनि कैं नंहि नचय। ते रजपूत धरम नंहिं संचय॥
छं० ॥ १९१ ॥

दोहा॥ सांमि सांकरै जानि कैं। रहे अवर घर सोइ॥
सो रांनी फिर तो लहौ। कुल रजपूत न होइ॥ छं० ॥ १९२ ॥

मां की बात सुन कर दोनों भाई सूखगए और महोवे चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गए।

कवित्त॥ आला ऊदिल सुनिव। उठे सुरझाय वीर दुहु॥
माता सुष मन मानि मरैं। उहां जाइ कुटम सहु॥
लरैं जाइ सनमुष्ष। करैं अपवात धरा बहु॥
धरैं सांमि भ्रम सीस। कटै किरवान पान रहु॥
सोमंत वथ्थ घल्लै विहस। रहसि स्त्रर संमर अनिय॥
उजियालि दुहू कुल में सुघर। जरन भेंट सम्भरि धनिय॥
छं० ॥ १९३ ॥

दूहा॥ चलन महोवै कीन मत। देवल सीष उपाय॥
अरज करन जयचंद सौं। चल्लै सु दोनौं भाय॥
छं० ॥ १९४ ॥

रषत बषत सव साज करि। कंगल अंग हुलास॥
जगनक को संग लै चले। पांगुराय के पास। छं० ॥ १९५॥

जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप दर्बार में आए हैं। आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढाई की है सो परिमालदेव ने हमलोगों को बुलाया है।

कवित्त ॥ दिष्षि नयन जयचंद । बुझ्झि आल्हन सहि वानिय ॥
क्यों आवहि दरबार । उट्ठ फावार-गुनानि "
सजे कवच किसि अंग । जंग लग्गे भट भारिय ॥
बिदा किये कहु नांहि । नांहि पुक्कारह कारिय ॥
इम कही बनाफर जाइ कर । लेन सु जगनक आइयव ॥
प्रिथीराज महोबे जुद्ध कहु । हम परिमाल बुलाइयव ॥
छं० ॥ १९६ ॥

जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने पाओगे ।

चौपाई ॥ नयन रत्त करि बुल्लय बानिय । मरिवे काज महोबे ठानिय ॥
अच्चल गढ्ढ हमारो षायो । चंदेलन ढिग लग्गहु लायो ॥
छं० ॥ १९७ ॥
सगरी नाव जाय बंध किज्जय । आल्ह उदिल उतरन नहि दिज्जय ॥
छावनि करो हमारे पास । छांडो अब महुवा की आस ॥
छं० ॥ १९८ ॥

यह सुन आल्हा की आँखें लाल होगईं और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे ।

तब आल्हन रस कीनै नैनह । सुनि जयचंद नृपति के बैनह ॥
कनवज लूटि अद्धि सब हरिहौं । पाछै जुद्ध महोबै करिहौं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

इतने में जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमालदेव ने पृथ्वीराज से लडने के लिये जयचन्द से सहायता मांगी थी ।

जब जगनक कह बिरद बिसालह । दीनी अरज लिषी परिमालह॥
करैं चाकरी सेवा ठाइय । पिथ्थल पर सुइ कुमक पठाइय ॥
छं० ॥ २०० ॥

पत्र पढ़कर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लड़ने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूंगा और दीवान

को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी।

कवित ॥ बंचि अरज जयचंद। कहिय सुष वचन भाट वर ॥
कर्हि चाकरी प्रगट। करहु उप्पय आतुर कर ॥
पीथोरा वध वीर। मलख वड जौ मस किन्नव ॥
लूटि सिरसवा नग्र। लूटि धरती निधि लिन्नव ॥
पट्ठाय कुमक संग अल्ह के। जूझ समर भार लगत इव ॥
संभरी गाजि विजपाल सह। तुव सुज्जर जुरि पुंगइव ॥
छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ वंचि अरज जयचंद नृप। बोलि दिवान जरूर ॥
विदा करौ सेना सजौ। आल्हा संग गरूर ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि देकर और जगनक को सिरोपाव आदि देकर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया।

पद्धरी ॥ विदा किय आल्हन पंगुर राय। दिये दस हैमर साज बनाय ॥
दिये दोउ पील सु उज्जल दंत। छुरित छाक रहै मद संत ॥
छं० ॥ २०३ ॥

दई दस बीनि कै मुत्तिय माल। दई कर पौंचिय वज्र विसाल ॥
दिये सिर पावक सद्धिय सात। निरप्पत चंद सुलक्षत जात ॥
छं० ॥ २०४ ॥

कटारि जराव की दीनिय सोइ। रषौ तुम आल्ह छती भ्रम होइ ॥
बुलाइव लापनसी कमधज्ज। धरौ धम सीसह छच धरज्ज ॥
छं० ॥ २०५ ॥

दई संग फौज पचास हजार। दिये दस डील दंतार जुझार ॥
दिये संग मोरिय रूप सि सुद्ध। दिए संग चालुक के सब जुद्ध ॥
छं० ॥ २०६ ॥

दिये संग तोवर वोहिय वीर। दियौ संग जादव छद्द गहीर ॥
दियौ किरवार सु कूवर पाल। दियौ संग वैसन पंगु सकाल ॥
छं० ॥ २०७ ॥

नदी उतर कर जयचन्द की कुमक साथ लिए महोबा ओर सब चले ।

दूहा ॥ केवल मिजमानी करी । सब सँग एकै काज ॥
अंन धन्न जपट करिव । बहु पकवान समाज ॥
छं० ॥ २२३ ॥

राति रहै उतरे नदी । चलै महोवा वार ॥
कुमक लिए जयचंद की । क्रमै सुवीर जुझार ॥
छं० ॥ २२४ ॥

आल्हा ऊदल का सेना सहित पहुंचना, परिमाल देव को दूत का आल्हा ऊदल और कन्नौज की सेना के आने का समाचार देना ।

पद्धरी ॥ चढ़ि चले आल्ह उद्दिल सोइ । उर स्वामि धर्म्म रत विरत होइ ॥
गाजिव गरुहीर बाजिव निसान । सज्जिव जवान अति जोरवान ॥
छं० ॥ २२५ ॥

धरि पीर अग्ग पचास पांच । आरन्य सांझ धारीन आंच ॥
जीवनौ साजि सारस्स कौन । सेमली लष्य सुब्ब भष्य हीन ॥
छं० ॥ २२६ ॥

चक्कव विछट्टिय दिसा सांझ । इय नयन झरय विन विपत सांझ ॥
फिक्करी दौरि आडी सु आइ । जंबूक सबद बोले कुभाइ ॥
छं० ॥ २२७ ॥

सूरज मध्य एक कुमद दिष्य । यह चरित जोय लष्षन विलष्य ॥
हँसि कहिय आल्ह यह हाल गाय । रजपूत सरन संगल बताय ॥
छं० ॥ २२८ ॥

यह बार सोच कीजै न कोइ । रजपूत वद्ध इक विकट होइ ॥
दर कूंच कूंच कीने पयान । धरि युद्ध चाव अति विबुध सान ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कहुं इक्क दिवस विलमें न चाय । परिमाल हेत वँधि नेत वाय ॥

तार ँत तुरिय मार ंत मृग्ग । भव भवषि भोग तैसा सुरग्ग ॥
छं० ॥ २३० ।

परिमाल प्रतिग्य किय जुद्ध जोध । षहुआन पान लषि विषम वोध॥
पट्टाय दीन कासिद एक । परिमाल जोध लिषि अज्ज सेक ॥
छं० ॥ २३१ ॥

केसरि संगाय केसर्‌यां कीन । पूजंत ईस सेवा अधीन ॥
उच्छाह अधिक किय भ्रात दोय । सांकरैं स्वामि जान्यौ सुलोय ॥
छं० ॥ २३२ ॥

कासिद आइ परिमाल पास । बैठई भूप ऊँचे अवास ॥
गुदराय बैठ दरबार जाइ । आए बनाफर दोय भाय ।
छं० ॥ २३३ ॥

दरवान जाइ बुल्लयौ दूरि । आये सु आल्ह सेना हजूर ॥
सुनि राज हर्ष मन अधिक कीन । कासिद बोल्लि हज्जूर लीन ॥
छं० ॥ २३४ ॥

उच्चरै बात चंदेल राय । कित्तनै सैन आल्हन मिलाय ॥
बुल्लयौ बैन कासिद पाय । पंचास सहस दिय पंगुराय ॥
छं० ॥ २३५ ॥

यह कह वचन्न कासिद आन । चंदेल भूप हिय सुष्य सान ॥
लषन भतीज नृप संग दीन । सिरदार आठ दुवल्लार कीन ॥
छं० ॥ २३६ ॥

दूत से समाचार पाकर राजा का प्रसन्न होना ।

दूहा ॥ सुनि वानिय कासिद की । किये नगरिते नैन ॥
साज वाज सब सुद्ध है । सजि आवो सब सैन ॥
छं० ॥ २३७ ॥

अगवानी के लिये नकीब आदि को तैयार करना ।

चंद्रायना ॥ दौरि नकीब बुलाये परिमाल के ।
साहन वाहन सज्जि करी इह हाल के ॥
आवैं मिलि दरवारि कि सामंत सूरिमां ।

परिहा साजि सनाह सरीर भलक्कै पूरिमां ॥

छं० ॥ २३८ ॥

आल्हा का मां देवलदे के आने का समाचार पा मल्हनदे का आगे से मिलने को चलना ।

दूहा ॥ देवल दे सँग भाटकै । चली महोबै आइ ॥

मल्हन दे सुनि कै षबर । साम्ही भई सुभाइ ॥

छं० ॥ २३९ ॥

देवल दे का पुत्र से कहकर जगनक के साथ पालकी में बैठ कर बाग में आकर रानी से मिलना ।

चौपाई ॥ तब देवल दे बुल्लय वानिय। आगे चलौं मिलन कौ रानिय ॥

जगनक संग पठावहु मो कहं । राजा की सुनि कहिहौं तोकहं ॥

छं० ॥ २४० ॥

दूहा ॥ मिली बाग मै आइकै । वपु सों अंग लगाय ॥

एक पालकी बैठि कै । भूप भवन चढि आइ ॥

छं० ॥ २४१ ॥

जगनक का राजा से कहना कि चलकर लाखनसी से मिलिए।

जगनक भाट हजूर गौ । कही खबर जा सोइ ॥

डीलनि राज पधारिये । मिलिये लाषन सोइ ॥

छं० ॥ २४२ ॥

राजा का ब्रह्मानन्द के साथ सवार होकर आल्हा को लेने और लाखनसी तालनसी से भेट करने को चलना ।

असवारी राजा करी । सँग ब्रह्मानंद लीन ॥

तुरी बैठि परिमाल जू । आल्हनि लावौं कीन ॥

छं० ॥ २४३ ॥

आल्हा का लाखनसी तालनसी को साथ लेकर आगे बढ़ना और बीच में राजा परिमाल से मिलना ।

सुनी अरज साम्हैं चले । लायन तालन संग ॥
मिल आइकै बीच मैं । भेटे राजन अंग ॥

छं० ॥ २४४ ॥

हनूफाल ॥ चढि चले आल्ह अमान । परिमाल आये जानि ॥
सिर पाव कीन सुअंग । चढि, चले आल्हन संग ॥

छं० ॥ २४५ ॥

मिल्लियौ सु आल्हन आइ । परिमाल हीय लगाइ ॥
मिलि टांक रूप नवीन । चंदल आदर कीन ॥

छं० ॥ २४६ ॥

चालुक केसवदास । परिमाल मिलिय हुलास ॥
तोवर सु वोइथ्थ आइ । लगि नृपति कै मिलि भाइ ॥

छं० ॥ २४७ ॥

चलि जादवा दुव भाइ । मिलि हेत करि परि भाइ ॥
चहुआन मंगल आइ । मिलिवे नरेसुर जाइ ॥

छं० ॥ २४८ ॥

वड़गुज्जरं सींनिग्ग । मिलिये सु राजन अग्ग ॥
मिलि सच्च कुवरु सु पाल । मिलिये सुराजन लाल ॥

छं० ॥ २४९ ॥

सैंगर सुराय अमान । मिलि रूप भूप अमान ॥
ढिग आइ आल्हन तेग । पट्टान हित मिल वंग ॥

छं० ॥ २५० ॥

नव किए हैवर हद्द । इक हरत ससत दुरिद्द ॥
जयचंद कुसल पुछाइ । फुरमान सीस चढाइ ॥

छं० ॥ २५१ ॥

दिय आल्ह कारन पाय । परगनैं चारि मँगाय ॥
मँगाय हथ्थिय दोय । समपियौ आल्हन सोय ॥

छं० ॥ २५२ ॥

मँगाय मुत्तिय माल । हीरानि पौचि विसाल ॥
सिर पेंच पंना पान । मिलि जोति भाइय तान ॥

छं० ॥ २५३ ॥

सिरदार लगियौ पाइ। नृप लियौ सीस चढाइ ॥
दिय तुरी तेरह साज। सेवन्न सोज समाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

रानी सुनिकट बुलाइ। निछावर करि दी भाइ ॥
किय अरज मलहन एव। अहवात आल्हा देव ॥
छं० ॥ २५५ ॥

फिरि आल्ह बुल्लिव तास। सो सीस तुअरे कास ॥
मोतीनि आरति कीन। यह भांति आदर दीन ॥
छं० ॥ २५६ ॥

दूहा ॥ आल्हन कज्ज बिदा करि। नृपति हवेली काज ॥
फौज उतारी पंगु की। वागह साउ समाज ॥
छं० ॥ २५७ ॥

देवल रानी गोट रहि। कहि कनवज की बात ॥
वचन कहे जयचंद नै। सो पुनि किय विख्यात ॥
छं० ॥ २५८ ॥

परिमालदेव का जगनक को बहुत कुछ गांव हाथी आदि देना।

जगनक्क को हाथी दिए। चारि गाम आघाट ॥
थाट निवाजि चंदेल नै। करी बड़ाई भाट ॥
छं० ॥ २५९ ॥

आल्हा के आने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का कन्ह कैमास आदि को बुलाकर युद्ध की तैयारी करने के लिये कहना।

आल्हा आये सात दिन। भये सुनी प्रथिराज ॥
बोलि कन्ह कैमास भर। कियौ लरन कौ साज ॥
छं० ॥ २६० ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह चहुआन। बोलि कैमास महाभर ॥
बोलि चंद पुंडीर। बोलि चासुंड पुंड वर ॥

बोलि सलष पंमार। बोलि पज्जून महामति ॥
बोलिव संभरराय। बोलि कनकेस विरदपति ॥
कामधुज्जराय निड्डुर बुलिव। अरु बरदाई बुल्लियव ॥
सब मिले सूर सामंत वर। मत्त तत्त सब संतियव ॥
छं० ॥ २६१ ॥

चंद का पृथ्वीराज से कहना कि अब युद्ध में देर न कीजिए, आल्हा कन्नौज से पचास हजार सेना लेकर सात दिन हुए आ गया है।

दूहा ॥ कहै चंद प्रिथिराज सुनि। ढील न करिए नेति ॥
आयो आल्ह कनौज तैं। सहस पचास समेति ॥
छं० ॥ २६२ ॥

चौपाई ॥ आल्हा सहस पचासक ल्यायौ। पंग जंग पर सैन पठायौ ॥
आल्हा आय सात दिन बीते। कीजै जुद्ध चंदेल कहीते ॥
छं० ॥ २६३ ॥

पृथ्वीराज का परिमालदेव को पत्र भेजना कि क्षत्रिय धर्म विचार कर हमने दो महीना युद्ध बन्द कर प्रतीक्षा की अब या तो लडो या महोबा छोड़ दो।

दोय मास हम छावनि कीनी। छत्री धरम कारनै चीनी ॥
अब चंदेल जुद्ध वर माँडौ। नातर नगर महोबौ छंडौ ॥
छं० ॥ २६४ ॥

गुन मंजरि मोहि सालै दासी। पाइक एनै अनाइक तासी ॥
पहले जौम लरन कौ कीनौ। अब चंदेल कहा बलहीनौ ॥
छं० ॥ २६५ ॥

कवित्त ॥ लिषि पत्री प्रिथिराज। जोग परमाल सु किन्नव ॥
छत्रि धरम धरि सूर। जुद्ध सुरलोकहि दिन्नव ॥
करै जुद्ध पाधरौ। चंदेले षेल भूस कुल ॥
नातर घर तजि ठांम। रहौ आधीन सेव तुल ॥
धरिये धीरज धारना। कादरता सब छंडिये ॥

बुलाय कुमक कमधुज्ज की । सिंघ नाद नृप गज्जियं ॥
छं० ॥ २६६ ॥

चौपाइ ॥ इची धरम धरी परिमालह । करी नरेस मग्ग रन ष्यालह ॥
कै तौ ठाम महोबो छंडी । कै सब साज लरन कौ मंडी ॥
छं० ॥ २६७ ॥

पत्र पढ़कर परिमालदेव का आल्हा आदि अपने सब सरदारों को बुलाकर परामर्श करना और लड़ाई आरम्भ करने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

लिय परिमाल पत्रिका बंचिय । सोच करी सज्जन दिल पंचिय ॥
अपनी परिगह सकल बुलाइय । संभरि काज कियौ मति ठाइय ॥
छं० ॥ २६८ ॥

नाराच ॥ बुलाय राज अल्हयं । करंत मत्त षालयं ॥
बुलाय उद्द लीनयं । कुमार दो प्रवीनयं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

बुलाइ काइयं कली । सुचार बुद्धि है भली ॥
बुलाइ राज सीहयं । अनेक जुद्ध जीययं ॥
छं० ॥ २७० ॥

बुलाइ भाट लीनयं । नरेस थप्पि कीनयं ॥
बुलाय बैस बीरयं । चँदेल बीर धीरयं ॥
छं० ॥ २७१ ॥

बुलाय लाष सुंदरं । करंत बात अंदरं ॥
गई रषार रूपयं । सुषग्गगी गजूपयं ॥
छं० ॥ २७२ ॥

तहां लमत्त कीनयं । अनेक भर्म लीनयं ॥
पिथौर दूत आययं । जुरन्न जुद्ध दाययं ॥
छं० ॥ २७३ ॥

लिताव युद्ध मंडियं । नहीं तौ ठांम छंडियं ॥
बुले सु आल्ह नूपयं । सुनौ चँदेल भूपयं ॥
छं० ॥ २७४ ॥

विषादि लोग आपली । अरि दल उथप्पली ॥
परमार गोहि गोहिलं । वघेल जोर मोहिलं ॥
छं० ॥ २७५ ॥

कमद्ध सूर सामिले । वघेल वागरी चले ॥
जहां सुचन्द पीचियं । भिघोर वैस वीचियं ॥
छं० ॥ २७६ ॥

ससांपुला हड़ावयं । वनाफरं जुझारयं ॥
गरूर गोहिलोतयं । पवै पनीर होतयं ॥
छं० ॥ २७७ ॥

वरंनि वाल नौतयं । चिरंत डोड होतयं ॥
न्रिपान नंद वानियं । कठोर लोह जानियं ॥
छं० ॥ २७८ ॥

पुंडीर दाहिमां मिले । जमहि सिंघु लै चलै ॥
पिलंत पारिहारियं । चंदेल सैंन भारियं ॥
छं० ॥ २७९ ॥

सवै सयन्न मिल्लियं । हज्जोर साठि हल्लियं ॥
पंचास दीन पंगुरं । कुमक्क राज संगयं ॥
छं० ॥ २८० ॥

गयंद तीन सेहलं । जिलं सुपाट जंवलं ॥
चंदेल दोई रोसयं । दलं असेक दीसयं ॥
छं० ॥ २८१ ॥

करै संग्राम सुद्धयं । पिथौर सौं विरुद्धयं ॥
चंदेल चेत कीनयं । निकस्सि डेर दीनयं ॥
छं० ॥ २८२ ॥

लिषी पिथौर काजयं । करै रनं समाजयं ॥
मिलंत लोह दीतयं । दिवस्स दोइ वीतयं ॥
छं० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ लिषी पिथौरा कारनैं । सुनि संभरि के राव ॥
दीत वार एकादसी । करै जुद्ध को चाव ॥
छं० ॥ २८४ ॥

चौपाई ॥ पचि लिषि कासीद पठायौ । सिर धरि दिल्लीसुर ढिग आयौ ॥
सुद्ध चाव चंदेल सु कीनौ । यह परिमाल लिख्यो करि दीनौ ॥
छं० ॥ २८५ ॥

पत्र पढकर पृथ्वीराज को आवेश आना और शुक्रवार नौमी को नगारे पर चोट दे लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना ।

दूहा ॥ लियो वांचि सम्हर धनिय । कियौ जुद्ध कौ चाव ॥
मानौ रावन ऊपरै । कोप्यौ रघुकुल राव ॥
छं० ॥ २८६ ॥

सुक्रवार नौमी निवटि । सम्हर वीर नरिंदु ॥
वैरन धरि परिमाल कौ । भयो नगारे नंदु ॥
छं० ॥ २८७ ॥

सेना की तयारी, वीरों के हृदय में युद्ध के उत्साह तथा अप्सराओं के उल्लास का वर्णन ।

चावर नाराच ॥ कीनौं निसानं मद्द पानं विहसि सामंत सूरयं ॥
मरदन कार ए अंग न्हाय पुनि सुठाये पूरियं ॥
उत सुनिय अपछर करिय सुच्छर अंग मंजन कीजयं ॥
बहु फिरै हरषी बाल सुरषी नैन अंजन दीनयं ॥
छं० ॥ २८८ ॥

हरषे कपाली षुले ताली रुंड माली पूरिनै ॥
चौसठि अंगं वधि उछंगं पान पचं नूरनै ॥
पलचरा धावै गीत गावै चित्त आवै मंगलं ॥
चहुआन चंदेलं षेल षेलैं मिले मेल उदंगलं ॥
छं० ॥ २८९ ॥

चौपाई ॥ सावंत सूर वढ्यौ जुध चावह । सार समाहि संभरी रावह ॥
इते सुघट कव अंगहु लीनौ । सामंत सवै उसाहति दीनौ ॥
छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ सूरा कवच वनाय तन । मंगल कीनौ चाव ॥

उतै अपछरा तन सजै । अंजन कीनै भाव ॥
छं० ॥ २९१ ॥

भुजंगी ॥ इतै सूर न्हाए करै दान ध्यानं । उतैं अपछरा अंग मंज्यो सुतानं ॥
इतैं टोप टंकार कसि सिर उतंगं । उतै अपछरा कंचुकी कस्सि अंगं ॥
छं० ॥ २९२ ॥

इतैं सूर मोजाव नावंत भाये । उतै अपछरा नूपरं पारिहाये ॥
इतैं सूर रागं बंधे तापतंगं । उतैं अपछरा चरन पा पहरि जंगं ॥
छं० ॥ २९३ ॥

इतैं पाग पेचं समारंत सूरं । उतै सीस फूलं गुंधावंत हूरं ॥
इतैं सूरमां पाग पैं झिलम डारैं । उतै अ्रु'डरं रंभ मागैं सँवारैं ॥
छं० ॥ २९४ ॥

इतैं सूर सरवं परे षग्ग माँजैं । उते अपछरा भाल पै तिलक साजैं ॥
इतैं ढाल सूरं अली वच्छ टावैं । उतै अपछरा श्रवन ताटंक नावैं ॥
छं० ॥ २९५ ॥

इतैं सूर दसतान हथ्थं सु कीये । उतें अपछरा हथ्थ मेहदी सुदीये ।
इतैं सूर कारके हरी नंष लीनैं । उते अपछरा कंकनं पान कीनै ॥
छं० ॥ २९६ ॥

इतैं सूर बरछी लिये हैं अन्यारी । उतै अपछरा हाथ वर मालधारी ॥
इतैं सूर तुलसीनि की मालनाई । उतैं अपछरा हाथ मोती बनाई ॥
छं० ॥ २९७ ॥

इतैं सूर किरवान कम्मान नाई । उतैं अपछरा चमकि नैनं निचाई ॥
इतैं तंग सामंत घोरंन लीयं । उतैं अपछरा साजि विम्मान कीयं ॥
छं० ॥ २९८ ॥

कही कब्बि चंदं निरष्यौ सुसोई । बरन्नी समानं परी सूर दोई ॥
छं० ॥ २९९ ॥

उधर परिमालदेव का सेना सजना और नौमी शुक्रवार को आगे बढ़कर दो कोस के अन्तर पर डेरा डालना ।

चौपाई ॥ परी सूर बरनैं कवि दोऊ । उत परिमाल सजै दल सोऊ ॥

होय कोस कौ बीच जु कौन । हुइ दल आय पयानौ हौन ॥
छं० ॥ ३०० ॥

दूहा ॥ नौमी तिथि सुक्रह दिवस । सजे सकल चढि सूर ॥
होय कोस अंतर करिव । करि मुकाम बल पूर ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

परिमालदेव का आल्हा आदि सब अपने सरदारों को इकट्ठा करके परामर्श करना कि अब क्या कर्तव्य है ।

कवित्त ॥ करि मसलति परिमाल । आल्ह ऊदिल ढिग बुल्लिव ॥
अरु काइथ कल्लियान । धरम धर प्रोहित मिल्लिव ॥
बुल्लिव जगनक भट्ट । बुल्लि लाषन कमधुज्जह ॥
बुल्लिव ताल्हन तुरक । बुल्लियौ भोपति सज्जह ॥
रानी सुबोलि परदै रषौ । देवल ढिग्ग विचारियौ ॥
परिमाल कहै सामंत हो । तत्त सुमत्त विचारियौ ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

चौपाई ॥ बुल्लौ भामासाह सुजानं । राजा आल्हा मालु सुमानं ॥
दावै कारन ढिग बैठारौ । पाछे लरन मतौ सु विचारौ ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

राजा का आल्हा को साथ ले महल में रानी के पास जाना और परामर्श करना ।

राजा उठि भीतर को आये । धावै ढिगां आल्ह बैठाये ॥
रानी मल्हन ढिगां बुलाये । पाछें चाते मते पुछाये ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

तेज पिथौरा कौ अति कहिये । तासों जुद्ध किही विधि ठइये ॥
हारे नगर महोबा छूटै । डंड दिये तैं अपजस फूटै ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अय तू स्वामि सांकरैं छंडै । आपन आय फेरि घर मंडै ॥
पवन नीर लौं नरकै परई । ताकी साषि व्यास इह धरई ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

फिर देवल दे बुल्लिय बानिय । सुनौ श्रवन राजा अरु रानिय ॥
नीकौ छोड़ सो करौ विचारं । परिगह बोलि मतौ उच्चारं ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

आल्हा का कहना कि जो स्वामी को विपत्ति में छोड़ता है वह अनन्त काल तक नर्क भोगता है और जो प्राण का मोह छोड़ लड़ाई में मरता है वह सूर्यमंडल को भेदता है।

सुनियो मात आल्ह यों भाषिय । रामायन भारथ की साषिय ॥
स्वामि सांकरै छांड़न कहियै । चंद सूर तौलों न्रक सहियै ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

खाइ धान परनोन निहारै । अपनौं अंग जूझ सौं टारै ॥
जारौं जार जाति सो कहियै । असल बीज रजपूत न कहियै ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

स्वामी राषै आपन मरै । छत्री धर्म सीस पर धरै ॥
माया घर की दूरि सुषेदै । वै नर सूरज मंडल भेदै ॥
छं० ॥ ३१० ॥

मां का कहना कि मुझको बेटों का मोह नहीं है ।

मोहि आस राजा की भावै । बेटा की कछु दया न आवै ॥
वे जीवंत सती कहि नारी । पारवती कौ अंस निहारी ॥
छं० ॥ ३११ ॥

आल्हा का कहना कि मैं पृथ्वीराज की फौज को मार गिराऊंगा सब सावंतों को जीतूंगा, माता तुम्हारी लज्या निबाहूंगा।

बोलयौ आल्ह सुनौ तुम माता । कलि मांझ राषै अस बाता ॥
संभरीस की फौजां मारौं । सामंतनि विहंड करि डारौं ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

मैं कुल काज चढ़ाऊं पानी । ध्रुव मंडल सब हीनै जानी ॥
ईदल की रखवारी कीजौ । देवल दे की लज्ज निहिज्यौ ॥
छं० ॥ ३१३ ॥

रानी मल्हन दे का कहना कि दंड देकर देश की रक्षा करो उनके सामंतों की वीरता की बड़ाई बहुत सुनी जाती है।

मल्हन दे फिरि बोली वानिय। आल्हा सुनौ हमारौ बानिय॥
राषा देस दंड दे गुनिये। साम`त सूर विषम अति सुनिये॥
छं० ॥ ३१४ ॥

ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी। अब क्या है, अब लड़ो। यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे तब राजा का कुछ होगा।

ऊदिल तमकि बैन सुनि कही। पहिलै एसी काहि न लही।
घाइल मारत मैं बरजानै। अब क्यों माता भयौ सयानै॥
छं० ॥ ३१५ ॥

दूहा॥ च्यार वार विनतो करी। मानी नहीं लगार॥
अब क्यों राजा समझियौ। लषि सामंतन भार॥
छं० ॥ ३१६ ॥

हम्म उभैं निरषैं नहीं। तुमरी बुरी नरेस॥
कामि आवतैं छंडिहैं। नगर महाबा देस॥
छं० ॥ ३१७ ॥

तुम आगें परिमाल नृप। मरिहैं दोनो सज्ज॥
अवस बरैं सुर अच्छरी। राज चंदेल सुकज्ज॥
छं० ॥ ३१८ ॥

देवलदे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती, हे बेटा! तुमलोग चंदेल का नमक अदा करो।

होनहार कैसे मिटै। कहि देवल दे सुद्ध॥
तौन सीस चंदेल कौ। पूत उजालो दुद्ध॥
छं० ॥ ३१९ ॥

राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना, प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गाँव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िए देर न कीजिए।

मसलति करि बाहर कढ़े। उदिल आल्ह नरेस॥
उत रैयत्ति पुकारि कै। चांवड जार्यौ देस॥
छं० ॥ ३२० ॥

जारि उजारि जु गांव सब। लूटी निद्धि अचेत॥
धरौ लरौ चंदेल तुम। थोरे गोरे हेत॥
छं० ॥ ३२१ ॥

आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कल्ह लड़ाई करना।

उठे आल्ह बरजे नृपति। आजु सनीचर वार॥
काल्हि करै चहुआन सौं। चौरै जुद्ध विचार॥
छं० ॥ ३२२ ॥

आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रिय धर्म नहीं है। इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कहकर सब वीरों को उत्तेजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कल्ह मैं पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा।

जा धरती कों पाय करि। धूवां जु देषै सोइ॥
कहै आल्ह परिमाल सौं। छत्री धर्म्म न होय॥
छं० ॥ ३२३ ॥

पावंद की देषै बुरी। अंग रखावन सूर॥
कहै आल्ह रजपूत कौं। दीजे नरक करूर॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पावंद घर को ताकिकै। इंद्रिय रस न कराय॥
कहै आल्ह उन नरन कौं। गहरे नरक पराय॥
छं० ॥ ३२५ ॥

बिगरी देखे नृपति की । चाकर कसक न होय ॥
साठि सहस लौ नर्क में । भ्रमत रहै नर सोय ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

वैरी सौं हाँसी करे । यार धनी की सुद्ध ॥
कहै आल्ह उन नरन कौ । कीजै स्वान प्रसिद्ध ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

चौपाई ॥ एती मैं बानी उच्चारी । अब लगि यह मैं सबैं सरुहारी ।
कालि फौज पीथल की षंडौ । सामंतनि के जुद्ध बिहंडौ ।
छं० ॥ ३२८॥

दूहा ॥ आल्ह कही सबही सुनत । मन की मन की बात ।
सूरज मंडल भेदिहैं । ते सची साक्षात ॥
छं० ॥ ३२९ ॥

राजन आगैं पैज करि । कही बनाफर सोय ॥
प्रात करौं प्रिथीराज सौं । जंग बिरुद्ध न होय ॥
छं० ॥ ३३० ॥

सब को बिदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिए सवेरे शत्रुओं का नाश कीजिए ।

सबको यह नृप सीष दै । गेर महल फिरि होय ॥
रानी सौं ससलति करै । मन धरि चिंता होय ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

चौपाई ॥ बोल चँदेल सुनौ हो रानिय । अबतौ दिवस पाछिलो मानिय ॥
आय चढ्यौ चहुआन अपारौ । करता बिन कोऊ न उबारौ ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

रानी कहै सुनौ नृप राज । करिये सैन सुएन समाज ॥
प्रात जुद्ध करियौ अद्भुतह । मिलियौ आन दुहु दल दूतह ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

आल्हा ऊदल अपने महल में गए, और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास में उन्होंने आनन्द से रात बिताई।

आल्हन गये हवेली आपन। उदिल देवल मिलै सु जातन ॥
भोजन किय इकट्ठे होइ। चौथौ उदिल मिलियौ सोइ ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन करिकै पौढ़ौ जाइ। आप आप की त्रियें बुलाइ ॥
गैर महल हैं कंद्रप पुले। अधरा रस अमृत फल फले ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

परस परसपर आरस कीनौं। यह विधि ऊदिल रँग रस भीनौं ॥
अधरनि लागि सुप्रेम वढायौ। पाछें भप चीरा रस ढायौ ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

पहर रात रहे स्नान कर गोरक्षनाथ का ध्यान, होम, नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का साम्हना करने को घोडे पर सवार हो दोनों भाई का चलना।

कवित्त ॥ पहरि निसा पाछिलिय। न्हान कौ नीर मँगायौ ॥
करि दांतौन सनान। ध्यान गोरष को ध्यायौ ॥
कियव बनाफर होम। नवग्रह पूजा कीनव ॥
हनूपतार्पा जंच धारि। करि कंठह लीनव ॥
आइयौ तुरिय पहलै पहल। समर सबै तापर चढ़य ॥
चहुआन पास लै पहुंचहीं। लूरन पर धायन चढ़य ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

ऊदल का मां को आकर प्रणाम करना, मां का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बनाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो।

ऊदिल वीर वुलाय। बोलि ईदल सुत लीनौ ॥
देवी आगे आय। चाप प्रनाम सु किन्नौ ॥
पीथौरा ऊपरैं। पैज करिकै चढ़ि जावहु ॥

सामंतनि साँकरै । स्वामि छुट मारि छुड़ावहु ॥
उज्जल जस जस राज कौं । देवल दे उज्जल करहु ॥
परचंड बात परिमाल करि । सीस ईस रुंडह धरहु ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

उदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खेलूँगा और पृथ्वीराज को भगाऊँगा ।

चौपाई ॥ इह सुनि ऊदिल वचन उचारिव । आइ तुम नीकी जु बिचारिव ॥
सांमतनि सौं षग्गन षेलहुं । प्रिथीराज के घट्टनि पेलहुं ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के काम में सिर देकर स्वर्ग का राज्य करो ।

देवल कहै सुनौं पुत दोइय । नोन हलाल करौ तुम सोइय ॥
चावँड आगैं सीस जुदीजै । निरभै राज सुरग कौ लीजै ॥
छं० ॥ ३४० ॥

ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुन कर सती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है ।

ठकुरानी ऊदिल की बोलिय । सुनियहु सास वचन यह षोलिय ॥
निहचैं बेद नरक तेहि भाषे । पिय कौ मरत जिया तन राषै ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

दूहा ॥ पीयहिं मरत जीया रहै । करै पुत्र की आस ॥
वह नारी निहचै करै । घोर नरक में बास ॥
छं० ॥ ३४२ ॥

पियन छोड़ जो ना मरै । नारी सती न होय ॥
अगत जाय भटकत फिरै । कही गोरजा सोय ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का सबेरे उठकर नगारे पर चोट दिलाना और अल्हा को बुलाना।

चौपाई ॥ राजा जागि नकारो कीनौ। आल्हा काजै आइस दीनौ॥
सिंघ नाद बाजी सहनाई। बनी पष्वरै हैमर ठाई॥
छं० ॥ ३४४ ॥

आल्हा ऊदल को बुलाकर नागौर की ओर बढ़ने की तैय्यारी करना। तैय्यारी का वर्णन।

पद्धरी ॥ बुल्लाय आल्ह ऊदिल्ल राज। कीनौ नगोरा चहु वम्म साज॥
साजियौ साज अनेक जोध। सामंत सूर करि करिय क्रोध॥
छं० ॥ ३४५ ॥
बुल्लाय आल्ह नृप अग्ग लीन। दिल्लहन राज बाटन्न कीन॥
अरि दिट्ठ दीन आल्हन्न काज। मानिक्क दीन पन्नान साज॥
छं० ॥ ३४६ ॥
दलठेल तुरिय आरब्ब उच्च। समपियौ राज उद्दिल्ल समुच्च॥
हारिदं काज हरि बाज दीन। पंधार वंस उपज्यौ नवीन॥
छं० ॥ ३४७ ॥
गेयंद काज दिय मृग्गराज। पर काज देस टट्टी समाज॥
वो दला दीन नव लेस सोय। उपजियौ कच्छ वर सुभट लोय॥
छं० ॥ ३४८ ॥
हंजि पास दीन सोपत्ति काज। कल्लिव्वी ऊंच नृप लियौ बाज॥
तारैन काज दिये तेज रूप। सेराकि जात लियो नष्प नूप॥
छं० ॥ ३४९ ॥
जगनक्क काज हय मोर दीन। दस ठेलि तुरी लुष अग्ग कीन॥
पासे सु तुरिय ग्यारह हजार। दीनै सुबाट करि अरि विचार॥
छं० ॥ ३५० ॥
हज्जार साठि परिमाल सैन। सज्जियौ सार चंदेल तैन॥
पचास सहस पंगुर सुदीन। चंदेल काजं परनाम कीन॥
छं० ॥ ३५१ ॥

पचास पांच धरि पील अग्ग । गाजंत मद्द चालै सुरग्ग ॥
बैठियौ वीर हय आल्ह सोय । परिमाल राज ऊचर्‌यो लोय ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

पंचसी पील चढि, जसरथ्थ नंद । चापू चलाइ जुर करह, दुंद ॥
उच्चरै बनाफर सुनि चंदेल । हेमर चलाय दल करौ ठेल ।
छं० ॥ ३५३ ॥

परिहार उच सब सुनिव राज । असुर सु आल्ह चर रहिव बाज ॥
बैठंत पील पच सबद्द पूर । परिहि भीरती सीस सूर ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

यह सुनिय वीर चहुआन रान । बज्जाय वन्न सामुह चलान ॥
पष अग्ग कन्ह पुंडीर चंद । विहसियौ वीर सुनि कान सुद्ध ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

दिष्षी सुफौज चंदेल राव । कापंत देह डग मगत पांव ॥
द्रग मूंदि कंपि आल्हा बुलाय । कालिंज मेल सुख मोहि लाय ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

दिज्जिय सुदंड प्रिथिराज काज । छंडहि सुराज सम्हर समाज ॥
दिज्जिय सुताह अधदेस बांटि । चहुआन सँग संगरन मंडि ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

परिमाल देव का डर से काँपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीतकर मुझे कालिञ्जर पहुँचाओगे तो मैं आधा राज्य, पचास लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हें दूँगा।

चौपाई ॥ काँपि कह्यौ परिमाल नरेसह । आल्हा आधो दीजै देसह ॥
लाष पचास द्रव्य अरु कन्या । दै चहुआन मिलाइसु मन्या ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

दूहा ॥ देषि कान्ह परिमाल नृप । वचन कहै अति अंध ॥
मोहि कलिंजर मेलिये । दै धर अद्ध सबंध ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

चन्देल की सेना का आगे बढ़ना ।

महला भोपति संग है । दल सौं कढ़िव चंदेल ॥
पिली फौज चंदल की । झिली वनाफर षेल ॥
छं० ॥ ३६० ॥

चन्देल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना । उधर आल्हा और ब्रम्हानन्द का अपनी सेना को सजना ।

मोतीदाम ॥ दिषि राजन फौज चंदेल पिली । दरियाव समान अमान हली ॥
इक लष्ष विलोकिय सैन घनी । चहुआन वनाइय चारि अनी ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

मुष अग्ग सु कन्ह अमान कियौ । भर चंद सहीसुर संग दियौ ॥
कमधज्ज सुं निड्ढुर लाषन ये । अँग संजमराय सुभाषन ये ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कनकं वडगुज्जर सारंग ये । जहँ आल्ह कुँआर से तारंग ये ॥
अचलेस नवल्ल हरीसिंघ ये । जहँ जादौ राम रिषी रिष ये ॥
छं० ॥ ३६३ ॥

इतनै सिरदार अगैं धरिये । फिरि दाहनि वाजुवको भरिये ॥
कछवाह पजून रू पाल्ह नयं । नरसिंघ पहारसुतं वरयं ॥
छं० ॥ ३६४ ॥

तहँ धावर धीर समो वरियं । विष्णुराज समाज समो धरयं ॥
पम्मार सलष्प सुयं वरयं । हनवंत समान हठी वरयं ॥
छं० ॥ ३६५ ॥

तहँ षीचिय देव रजैत पिले । सँग हाहुलि राउ हमीर चले ॥
दिसि दाहन सामंत ए करियं । दिसि वांइय भोह चंदेल कियं ॥
छं० ॥ ३६६ ॥

अचलेस मलेसिय संग दियं । दसि दच्छिन सांवँत भूमि रयं ॥
दोय वीर हमीर गंभीर नरं । अति ताइय संभरि ईस वरं ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

तह" माल चंदेलय पूरनयं । तहं बाम दिसा मुख नूर नयं ॥
सह सांमल सांपुल संग दियं । इतनें सिरदार सुधाम कियं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

कयमास कमध्वज विक्रमयं । तहं टाक सु चाड, सु विक्रमयं ॥
जहां गोड सपत्तिय मोर दयं । तहं षेत पगार सुचार भयं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

कयमासु रू सरुहरि मध्य हुवं । चतुरंगिय सेन दिठालि दुवं ॥
हलकारिय सैन नरेसु रयं । भर चावंड राय बली धरयं ॥
छं० ॥ ३७० ॥

उत आल्हन फौज सु दोय कियं । हलकारि बनाफर लोह लियं ॥
कमधज्ज सुलाषन अंग कियं । चहुआन सुमंगल संग दियं ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

तह" रूप सी कूंवर वांम सियं । सिकवाल सों कूंवर पाल हियं ।
तह" चालुक सारंग वीर वरं । जह" जादव रैनिसि सीस धरं ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

वर ताल्हन वेग हरोल कियं । हय बीस हजार सु संग दियं ॥
बिचि तीन हजार की गोल रची । सिरदार सुलष्षन मध्य सची ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

तिन पूछि सु आल्ह बनाफरयं । जिन अग्ग सु जुद्ध लिये भरियं ॥
दिसि बांइय मोहन दास कियं । सिर कासी लुद्ध प्रताप लियं ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

अरि सिंघ सु संग समाज वरं । पंमार सुसाजि चल्यो अमरं ॥
तहं सैंगर राय अमान भये । जहं वांम दिसा भरनैन लिये ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

दिसि दाहनि वीरम वैर पुरं । द्वतियं दलकाइ पतेज नरं ॥
भरनं अति तोवर सोहमयं । परिमाल सबै दल सोहनियं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

महकुन्न सु वागरि धारि हियं । इतनै भर दाहनि फौज कियं ॥
बड़ गुज्जर देव करन्न मिले । दस दोइ हजार चंदेल चले ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

चौपाई ॥ ब्रह्मानन्द आल्ह विचि सार । आगैं उद्दिल बंधु सुधार ॥
वांय दिसा कौ सोहन कीनौ । दक्षन पूरनमल्ल सु दीनौ ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

पंग हजार पचास चले पिछि । और पचास चंदेलन के मिछि ॥
चारि फौज आल्हन सजि सार । प्रिथीराज के बीस हजार ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

परिमाल देव का पृथ्वीराज की सेना देखकर डरकर दस हजार सेना ले कालिञ्जर की ओर भाग जाना ।

दूहा ॥ देषि फौज परिमाल जू । कांपि चल्यौ तजि थान ॥
दस हज्जारह संग लै । तज्यो महोबौ थान ॥
छं० ॥ ३८० ॥

कुँवर ब्रह्मानन्द का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना ।

ब्रह्मादिति फिरि आइयौ । सिर छत्री ध्रम धारि ॥
प्रिथीराज सों पा धरै । वज्जावन तरवारि ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

युद्ध आरम्भ होना । कन्ह चौहान का घोर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ दुहौं सेन मिल्ले दुहौं वाग लीनी । दुहौं धारि ध्रम्मं वरं द्रष्ट कीनी ॥
दुहौं सांगि कड्ढी दुहौं कोरवट्टी । दुहौं वार बानी सवद्दं उचट्टी ॥
छं० ॥ ३८२ ॥

वजैं भेरि नीसान जंगी तवल्लं । वजै नाद तुरही नफेरी सुबुल्लं ॥
दुहौं नाद कीनै सुरं संष भारी । दुहौं नाम हक्कैं सुहां हां उचारी
छं० ॥ ३८३ ॥

कहै चंद कब्बी सुनौ चाहुआनं । चलायो गरट्ट बांधि बांहैं सुआनं ॥
सुषं पाठ जंपै सु ईसं भवानी । मिलाये वली बाहु धावै जुवानी ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

अगो कीन चंदेल्ल सेना सुहथ्थी । रहै पुट्टि असवार भर भार सथ्थी ॥
चलायो सुषं कन्ह पट्टी उठाई । किधौं रावनैं राम भौंहैं कढाई ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

अगे आय हाथीन पै हथ्थ वाहै। वरं दंत तानें उठानं अमाहै ॥
उपारंत दंतं बजा बाहु जोरं। गहैं पूछ सुंडं वजावैं अमोरं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कहूं जे सुसुंडन्नि पै तेग तावैं। कहूं कोपि करि तंष्षि धरनी मिलावैं॥
कहूं भाव सहैं कहूं जाय मारैं। कहूं धीक बक्कैं कहूं को प्रचारैं।
छं० ॥ ३८७ ॥

चहूआन बल सों कियौ पील कानी। सुंषं संच बोलंत संकर भवानी॥
हक्कं हांक बक्कं दहै सैन सोई। बजावैं वरं लोह निरमोह होई ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

करै षंड षडं घटै घाउ धारै। बिकट्टं बली बाहु पट्टं निहारै ॥
चलावंत तीरं गहीरं गुमानी। षनक्कंत धरनी भनक्कै सु बानी ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

उरं सेल लग्गो परं पार होई। गिरै नट्ट वासे कला चूक होई ॥
बहै कंध किरवान वंधं षलावै। परै मुंड धरती सुरुंडं नचावै ॥
छं० ॥ ३९० ॥

गुरज्जै वहै सीस रीसं रसानी। सिरं होत चूतं विचूतं जवानी ॥
वहै सुंदरंगं सार धारत्त छत्तो। परै पील समवार धरनी विरत्ती ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

करै बार हांकं कटारी करूरं। करै मार माती परै चक्क चूरं ॥
इसी भांति जुद्ध कियौ कन्ह भारी। मिल्यो धयान मानं चुली रुद्र तारी ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

कन्ह का अपनी वीरता से सेना में हलचल मचा देना। युद्ध का वर्णन।

दूहा ॥ कन्ह कटक कीन्हौ कहर। हटक परी दल मांहि।
झटक वीर भागे बली। कोउ पलट्टै नांहि ॥
छं० ॥ ३९३ ॥

रसावला ॥ कन्ह कोप्यौ तबै। कौन जुद्धं जबै ॥

धाय ल्लुथो वली । सर्व फौजैं ह्ली ॥
छं० ॥ ३९४ ॥

चाय पायं गई । ढारि धरनी मई ॥
क्वाय वज्रं कियं । पाय सैना लियं ॥
छं० ॥ ३९५ ॥

गाय रामं दुषं । धाय छुट्टे सुषं ॥
वीर नादं जचै । चाय कीयं मक्कै ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

छाय सुरगा रच्यौ । भाय हंसं नच्यौ ॥
धाय वोलै घटं । ठाय पत्नं पटं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

ठाय रावै नरं । वाय वाहै वरं ॥
छाय नापै दलं । ताय तेगं कलं ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

धाय वीरं वली । दाप दीयं दुली ॥
धाय पारें धरं । नाय वध्थं वरं ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

पाप टूटै फहं । फाय वेलं फहं ॥
घाय वज्जै वरं । भाय दोरै वरं ॥
छं० ४०० ॥

पाय नारी मलं । ज्वाप ज्वानं जलं ॥
सैन कंपै सवै । कन्ह देषें जवै ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

पाय लीने पगं । हंस लागे मगं ॥
सैन कंपै सवै । कान्ह देषें जवै ॥
छं० ॥ ४०२ ।

दूहा ॥ कान्ह पानि देष्यो जवै । भग्यो सेन चंदेल ॥
हनि हाथी हल कान के । सुरिसोहरा रन ठेल ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

अपनी सेना को कटते देख कर आल्हा का अपनी ओर के सरदारों को इकट्ठा करके ललकारना ।

कवित्त ॥ देषि पराक्रम आल्ह । मद्ध लाषन सी बुल्लिय ॥
ता जनि वेग पठान । रूप येतौ षग षुल्लिय ॥
सोलंषी केहरी । बैल कल्लान वीर वर ॥
बोड्य तौंवर वेहलि । सूर सैंगर गुमान धर ॥
धुर धवल सीस धारवि धरनि । मुत्ति आस संगर करिय ॥
सघ सूर बीर एकत्त हुव । धारा तीरथ आदरिय ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

दूहा ॥ आल्हनि जद्दलि जायकै । सँभाल्यो सब सैन ॥
सकल सूरमा टेरिकै । रन मन आन्यौ हैन ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

पद्धरी ॥ धावंत आल्ह सम्हारि सैन । सिरदार चारि बर कह्यौ तैन ॥
गोयंद्द राउ हरियंद्द सोय । येकल चलाय दल लष्ष लोय ।
छं० ॥ ४०६ ॥

सोरीय रूप सैंगर अमान । जादवा द्वंद बल लह्यो पान ॥
मंगल चुहान तोबर समथ्थ । लालक्क केस रन समर पथ्थ ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

बड़गुज्जर रन महाबाहु । सुक्कल्ल बैस बड़ समर चाहु ॥
नर हरिय गौड़ कायथ कल्यान । सैंगर बरेह जे जल्ह ज्वान ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

बघेल और पूरन अमीर । षग्गा सषग्ग परमा सनीर ॥
खोधी सु धीर बर धरे धर्म्म । ईदल सुसोम वंसी सु कर्म्म ॥
छं ॥ ४०९ ॥

गोतम जुझार पल्हन पमार । गोकुल सु बघेला व्यरचि सार ॥
भगवान सूर चंदेल चित्त । डोंगरसि देव दीवान रत्त ॥
छं ॥ ४१० ॥

जगनक्क भट्ट जल्हन जबान । ईसुर सुवान यौं रोर पान ॥
कायथ्थ कैसना क्रम्म चंद । मकरंद और श्रीवास ढंद ॥
छं० ॥ ४११ ॥

परही सुदेव कृत दुरित जोर । गोवा क्रपाल जूझन अमोर ॥
वछ गोत जुद्ध जुत तेग वाह । अठ भौ पाहनि मत राय गाह ॥
छं० ॥ ४१२ ॥

भिच्यौ सु भूपनि रनय सूर । कछवाहा रामां लिये तूर ॥
गम्हीर वेग आजानवाह । सुर कौ वसंत नित समर चाह ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

अनुलद्ध सिंघ सैंगर सुवाल । विरसिंघ कट्ट है आल्ह काल ॥
जटवार जाट कमनेत पूर । धवरा सु राय धुरवंस सूर ॥
छं० ॥ ४१४ ॥

एते सु इकट्टे भये जोध । सामंत सूर पर करह क्रोध ॥
परिमाल सथ्थ समरथ्थ देषि । सामंत सूर सब नयन पेषि ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कैमास चंद पुंडीर जोय । निड्डुरह जैत पज्जून होय ॥
हाहुली राय हम्मीर वीर । सुलष पम्मार सज्ज्यौ गहीर ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

रावत्त राम तौंवर पहार । संजम्म राय रन विषम सार ॥
हैं अतिताय चहुआन बंक । नरनाह कन्ह अग्गे निसंक ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

चावंड राय उप्पर अमान । उप्पर करन्न सौना सुजान ॥
निड्डुरह राय चहुआन संग । लष्पन कमद्ध दल दयो पंग ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

परिमाल संग लष्पन सु धाय । प्रिथिराज सैन निड्डर सहाय ॥
भाई सु दोय बगमेल कीन । गह चरन हक्कि किरवान लीन ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

जयचन्द के भतीजे लाखनसी का घोर युद्ध करना । लाखन सी की बीरता का वर्णन ।

दूहा ॥ लाखनसी परिमाल जू । निड्डुर डर चहुआन ॥
दुप सामंत सु आहरे । कमधुज सैन सुजान ॥
छं० ॥ ४२० ॥

चौपाई ॥ लाषन जैचंद बंधव नंदन । निड्डर राय भतीजा इंदन ॥
दोउ बीर बाहुरे जंगह । दल चंदेल सम्हारी अंगह ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

मोतीदाम ॥ मँडि निड्डुर लाषन सीह नरं । चहुआन चंदेल सु निरषि भरं
कमधुज्ज सो दोउय वार अरे । बहु लाज जंजीरन सौं जकरे ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

हलकार कियं बल धारि बपं । निरषै चहुआन चँदेल अपं ॥
बर जंचिय संचिय लाग उरं । बपु फुट्टय बीर बँवार परं ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

लगि तीर सनाह न पार रुषं । मछरी बर जार, लै काढि सुषं ॥
लगि सैन दुहूँा बप पेलि कियं । निकसै फन पंनग बार बियं ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

किरवान लगै बलवान हथं । चब्बूज मनों छरकंत जथं ॥
जमदाढ़ लगै करि गाढ़ सह्ह । दुसही कर काढ़ि अटारि बह्ह ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

इक सथ्थ लरें बल बाथ बली । तहं श्रोनित की सलिता जु चली ॥
गहि दंत सुमंत उपारि लियं । कटि पीलनि डील प्रहार कियं ॥
छं० ॥ ४२६ ॥

उचकाय कै पूछ बली धुरयं । हनवंत सुद्रोनगिरी गहियं ॥
हय के गहि पाय पटक्क धरं । उड़ि हंस चले मिलिकैं अगरं ॥
छं० ॥ ४२७ ॥

गह्रकै कर दोय उपाटि लियं । अरि सेन समूह सबै दहियं ॥
उड रेनु अकास अपार छयं । नहि सुझत अच्छन भास अयं ॥
छं० ॥ ४२८ ॥

यह भांति लरैं कमधुज्ज बली । चहुआन चंदेल की फौज हली ॥

अप अप्प विगारि कौ रोस रुधं । विफरै वर वग्घ सु दोइ जुधं ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

दूहा ॥ लाषन निड्डुर राय दुहु । कमधुज सुदोव जवान ॥
आहरिए संमर सकल । अंमर सीस समान ॥
छं० ॥ ४३० ॥

कवित्त ॥ निड्डुर राय कमधज । वंधु जयचंद सुतन कहु ॥
लाषन सी राठौर । अनुज पंगान मान सहु ॥
चाहुआन चंदेल । मिले दल मेल पेल सजि ॥
भाई भाई विरंचि । वीर निस्सान पान गजि ॥
पिष्षंत अनिय दोई धनिय । लषि लेय चढ़ा परिये प्रगट ॥
परिमाल और प्रिथिराज ढिल । स्वामि काम सौपंत घटि ॥
छं० ॥ ४३१ ॥

लाषन सी उप्परैं । भरि तालनसी आयव ॥
मोरिय रूप जुधीर । द्दंद जादव चल्लायव ॥
संगलसी चहुआन । तँवर उथ्यान नाह नर ॥
कुंवर पाल सिक्कवार । दोत चालुक केसो भर ॥
वड़ गुज्जर सौनिग सरस । सैंगर राय अमान सजि ॥
लाषन हमीर येते भिरन । आय पंगु कुमक्क सजि ॥
छं० ॥ ४३२ ॥

निड्डुर राय सहाय । चले सामंत सत्त धरि ॥
कन्ह जयत कैमास । लष नरसिंह वंच करि ॥
पालन धीं पज्जौन । वीर तौंवर पहार वर ॥
मिले पते सामंत । हथ्थ लाख हजार कर ॥
दुहु सैन एन दिष्षियव । नयन धाय षग्ग सुहथ ॥
चहुआन वीर चंदेल ढिल । प्रथम लोहि लीनौ सुमथ ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

प्रद्धरी ॥ विरचियौ लोह लाषन सुधाय । तासीय कोपि निड्डुर सहाय ॥
बज्ज बजावहु गल गरजि नाग । सज्जियौ सैन उत्तंग बाग ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

हलकारि ग्रिष्ट किलकारि दीय। हनुवंत सकति पढि उकति सोय ॥
लष्पन जरह बजरंग वीर । निहुर अराधि सकती गहीर ॥
छं ॥ ४३५ ॥

हंकारि सह बल करत हांक । तिहु लोक मद्धि चलि बढ़िय धांक ॥
बिध फुरैं बीर वानैति वाहि । मंगल तुरंग सव दिये ढाहि ॥
छं० ॥ ४३६ ॥

पारंत दंत सारंत पील । धारंत तेग अति तेग डील ॥
गहि सुंड सुंड फेरंत पाइ। गहि लोमह हाथ्थिन्नि गाहि ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

हंसर उठाय पटकेत भूमि । असवार देह होय फांक झूमि ।
वाहंत वान वलवान एक । टूटंत अंग फट्टंत फेक ॥
छं० ॥ ४३८ ॥

छूटैत बंदूकैं सलक कह । धरनी पताल पर पूर सह ॥
करि सेल षेल बगमेल होय । निकरंत पार वर नाग लोय ॥
छं० ॥ ४३९ ॥

दुहुं तेग वेग लगि कंध झुंड । कहेरत पिंड धर परत सुंड ॥
लागत कटारि तन हीक वार । जची अटारि जनु षुले द्वार ॥
छं० ॥ ४४० ॥

रज्जिक बसन्न पीटंत कोपि । फन करत नाग भीजंत रोपि ॥
वादंत मुष्टिका रूष्टि भाल । निकरंत आंच द्वै श्रीन लाल ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

जाद्वां इंद मोरी सरूप । मंगल चहुआन मडि मँगल रूप ॥
वोइय तोंवर भर हथ्थ वाहि । कुंवर सुधाय जादों सहाय ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

सोंनिग्ग राव सेरं सु लाज । तालन पठान सजि समर काज ॥
हज्जार संग पचास भीर । लापन सुबीर सजि वंग भीर ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

बाहंत तेग विकरंत आप । इक सथ्थ होय दौरे उताप ॥

हुल्लौ दियौ निढ्ढु रस चौज। पच्चास लष्ष जयचंद फौज॥
छं० ॥ ४४४ ॥

धावंत तेग वाहंत रूक। लपटंत लाय उट्टंत जूक॥
हुल्लौ लष्यौ निढ्ढुर नरेस। दौर्‍यौ सुकन्ह कैमास तेस॥
छं० ॥ ४४५॥

पज्जून सहाय मिलि जैत जोर। नरसिंघ सिंघ चलियौ अजोर॥
कीनें सु चले सामंत चोज। रुक्कियौ आय बिचि पंग फौज॥
छं० ॥ ४४६ ॥

घुल्लिये सु अष्पि पट्टी सु कन्ह। उठंत रोल भए लाल वन्ह॥
सामह पिल्यो तालन्ह वेग। आयौ सुकन्ह पर कढ्ढि तेग॥
छं० ॥ ४४७ ॥

कीनौ सह संगल गरजि चाय। दीनी सुकन्ह के कंध आय॥
घूमियौं कन्ह किरवान चोट। पीछैं सु कन्ह हनि कुंत चोट॥
छं० ॥ ४४८ ॥

फुट्यो पट्टानह भर सजेति। भेदी सुधत्त तरवारि षेत॥
फिरि दई आय कयमास तोर। सिर पर्‍यो टूटि उठियौ सु घोर॥
छं० ॥ ४४९ ॥

हनियौ पठान सैनीय देषि। चलियौ सु साजि सैंगर सु पेषि॥
आयौ पजौन सैंगर सु अग्ग। लागियौ कुंत हत्तौ सुलग्ग॥
छं० ॥ ४५० ॥

पज्जौन दई किरवान धाय। दीनौं सजेत संगर षपाय॥
दिष्षिये रूप मोरी पजौन। आइयौ सत्त सामंत तौन॥
छं० ॥ ४५१ ॥

मोरियौ रूप मंगल चुहान। जादुवां इंद चंदेल जान॥
मालून सुकेसव समर सोय। अठभैया अत्ति उस्मडि होय॥
छं० ॥ ४५२ ॥

नारैन नर वंदनि चाढि वीर। पज्जौन सीस साजिय गंभीर॥
मचकंत धरा चलकंत सेस। कसकंत फरक चंदेल देस॥
छं० ॥ ४५३ ॥

वाज्जंत वज्र कर सवर सात। मनु करत अंत परवत निपात॥
पज्जौन कोपि लिय तेग हथ्थ। मारियौ राय सैंगर समथ्थ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

फूट्यौ सुदेह काढ्यो तुरंग। धर भई लाल रत्ती सुरंग॥
जाद्वा इंद चंदेल मानि। पकर्यौ मध्य पज्जून पान॥
छं० ॥ ४५५ ॥

इमर सलेति धर परिय राय। फेरिय सुसीस कर मसकि ताय॥
भजि सुसथ्थ किय समर छाड़ि। उभ्भै पजौन रन माहि टाड़ि॥
छं० ॥ ४५६ ॥

जैयचन्द की सेना का भागना।

कवित्त॥ हनि ताल्हन पठान। कन्ह काढ़े सुप्रान रन॥
सैनह संगर रूप। मानि चंदेल परे तन॥
माल्हन केसव दास। पासि परिगह सम सुम्भव॥
करबाहै क्रूरम्म। जोर जम लोकह जुत्तव॥
बारह हजार रजपूत कटि। हाथी पंच जु देस दल॥
जयचंद सेनि सुरि करि चलिय। परिय फौज सामंत हल॥
छं० ॥ ४५७ ॥

दूहा॥ हाथी पंच तुरंग सय। अर रजपूत पचास॥
भइ पजून सौं मोरछा। इते परे संग पास॥ छं० ॥ ४५८ ॥

अपनी सेना को भागती देख लाखन सी का ललकारना। सेना का फिर लौटकर लड़ने के लिये डँट जाना॥

भगिय फौज लष्षन लषिय। ताल्हन आए कामि॥
हांक मारि जयचंद दल। बल करिकैं फिरि आनि॥
छं० ॥ ४५९ ॥

चौपाई॥ ताल्हन परे पठान सु जंगह। पंच परे सिरदार उमंगह॥
बारह सहस जंग रन झुते। हाथी तीस मतंगह झुते॥
छं० ॥ ४६० ॥

सुरछे राय पजून सु सोई। हाथी पंच महामद होई॥

सगत परे पच्चास जवानह । ऊपर रन कीनौ चहुवानह ॥
छं० ॥ ४६१ ॥

भाजी फौज पंग की सोई । सो लापन देषौ दग दोई ॥
बानी कही रत्त करि नैना । फिरि यौं आव पंग की सेना ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

दूहा । बानी सुनि सैना फिरी । लापन कही निराट ॥
घेरयौ निढ्ढुर आय के । फिरे सांमुहैं थाट ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

युद्ध का वर्णन । लाखन सी का मारा जाना । जयचन्द की सेना का भागना ॥

मोतीदाम ॥ सुनी दल लष्पन बानी सोय । किये अग पील चले रिस होय ॥
पिलै उंग पील चले सरदार । परयौ सिर निढ्ढुर ऊपर भार ॥
छं० ॥ ४६४ ॥

हजार छतीस सजे रन सुद्ध । जुरे सब आय रूपे कमधज्ज ॥
कठेरिय बाबुअ जोर जवान । विरचियौ गौतम श्रीभगवान ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

जुरे दल पत्तिय वैस मरद्द । जुरे अठ भाया हुते नरवद्द ॥
नरायनदास वियौं बंधु लार । मुकंद सी कायथ क्षिज्ञिय सार ॥
छं० ॥ ४६६ ॥

लपे नरनाह सु कन्ह दुवाह । चले कयमास वियं संचाह ॥
पिले भर चंद पुंडीर सु सोइ । महाभर निढ्ढुर कों रन जोइ ॥
छं० ॥ ४६७ ॥

उतै हच लष्पन नामिय सुद्ध । इतै नृपि निढ्ढुरराय सों जुद्ध ॥
वहै क्रिरवान जु बानिन हथ्थ । कियौ रन ऊपर जै जै पथ्थ ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

भभक्किय सैन सु छुट्टित तोप । करक्किय जंचिय सूरन लोप ॥
भरक्कय बाननि पंजर छेदि । करक्कय सेल दुहो डर भेदि ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

लगै वलि संगि सु पील गिरंत । सनम्मुष सूर उपारह दंत ॥
वहै अव्वार सुपारहि मार । करें किलकार सु जुग्गिन लार ॥
छं० ॥ ४७० ॥

वहै किरवान परै सिर ह्वर । करै वपु दोस दुहो दल पूर ॥
मिल्यौ वग निढ्ढुर लष्षन आय । निरष्षहिं नूर वियौ रस पाय ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

गही किरवान सुलष्ष नरेस । दई किरवान मुकट्टिय केस ॥
लगी किरवान पगी वल मार । चल्यौ भर ह्वर कल्यौ सत वार ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

गही कर निढ्ढर वीर गुरज्ज । दई वर लष्षन सीस सुरज्ज ॥
हजारक टूक भये सिर सोय । पर्यौ धर लष्षन लष्षन लोय ॥
छं० ॥ ४७३ ॥

भयौ धर मूर्छित निढ्ढुरराय । गिरे धर लष्षन अंत सुपाय ॥
गही किरवान सु कन्ह नै कोपि । चले कयमास रु चंद सुजोपि ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

उतै सनमुष्ष सु बावुव साजि । भये भगवान हरील सु गाज ॥
जुरे दलपत्ति लिये किरवान । चले नरवद्द नरायन तान ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

सुकंदसि कायथ अग्ग सु होय । हुतौ कांसीदल पंग कौ सोय ॥
भि यौ वर कन्ह पुंडीर सु चंद । कठेरिया बावुअ रोकियौ दंद ॥
छं० ॥ ४७६ ॥

इतै भगवानिय गोतम गाजि । नरब्बद और नरायन साजि ॥
लई कर संगि सु कन्ह नै कोपि । दई भगवान के सीस पै रोपि ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

भइ सिर पार पर्यो धर मध्य । इतै चलि आइयौ बावुअ रद्धि ॥
नरायनदास नरब्बद कोपि । मिले तिहि आनि कै कन्हर जोपि ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

मुद्ग्गर कन्ह पै तीन नवाहि । गही तन कन्ह सुधौपियौ पाहि ॥
गहै तव कन्ह लै तीन चरन्न । पटक्किय लै करि उत्त घरन्न ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

भये सिर चून हयंसिस तीन । किये नरजीव वली वपु हीन ॥
भजी जयचंद की सेन विराट । कियौ नृप लाषन निढ्ढुर काट ॥
छं० ॥ ४८० ॥

दूहा ॥ बापन सौ रन पौढियौ । नरवद् और नरैन ॥
-परि घाइल निड्डुर कमध । दो छठ भैया तेन ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

चौपाई ॥ परे कंठरी नाव् जंग । अरु गोतम अगिवान अभंग ॥
नरवद् अरु नारैन सुकट्टिव । पंगु कास रन तान उपट्टिव ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

जयचन्द के सरदार कायस्थ मकरन्द का घोर युद्ध करना । युद्ध का वर्णन । मकरन्द का मारा जाना ।

कवित्त ॥ दौरि दलपति वीर । वंस दाठन दल भाई ।
सनमुष ह्वै श्रीवार । हतौ वकसी दल सोई ॥
लषि कायथ मकरंद । चंद पुंडीर अघोई ॥
कर लेपनि किरवान । दंत सावंतन वोई ॥
उच्चर्यौ इष्ट गिरजा सुमुष । करुष करुष क्रोध सैं लिय ॥
जयचंद लौन धरि सीस पर । प्रगट लोह संभरह किय ॥
॥ ४८३ ॥

भुजंगी ॥ पिल्यौ वंस दलपत्ति सनमुष्य सूरौ । गहौ तेग हथ्थं समथ्थं करूर
वियौ जंपियौ जोध मकरंद वीरं । अघोरं संडवे विचारे गहीरं ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

हलालं कियौ लौन पंगं नितव्वं । भयौ पाज चहुवान दल रोकि सब्बं
गजै नालि गोला वदूकैं वरक्कैं । किते कायरं अंग जंघं धरक्कैं ॥
छं० ॥ ४८५ ॥

वहै नाव कंठाव कंतीर सोरै । लगै अंग अंगं सनौ सर्प कोरै ॥
सिले हथ्थ हथ्थं विहथ्थं सुवानी । किधौ ष्याल षेलैंत होरी रवानी ॥
छं० ॥ ४८६ ॥

विकट्टं वहै षग्ग घट्टं सुलग्गी । सिरं फारि अंगं हयं देव पग्गी ॥
झुलै झूल जूझै सुझूलै झटक्कै । चरं चूरिया चाय आघाय चुक्कै ॥
छं० ॥ ४८७ ।

ठठक्कै नहीं सूर लषि लोह अघ्घै । टटक्कैं पर टूटि मकरंद दिघ्घौ ॥

इतै चंद पुंडीर मकरंद देष्यौ । अमोरं सुजाते वचन्नं सुभष्यौ ॥
छं० ॥ ४८८ ॥

गह्यौ चंद नै काइथं षग्ग केरौ । लष्यौ आज षंगा सबै सैंन तेरौ ॥
इतै चंद मकरंद सुष मेल कीनौं । दुहौं हथ्थ किरवान बलबान लीनौ॥
छं० ॥ ४८९ ॥

दई चंद्र कै सीस पै वीस वानी । किधौं वीज आकास की षीज पानी॥
लटक्कै सुचंद धरा मोर छायं । लष्यौ वीर कैमास बाजी सुतायं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

दई दौरि कैमास मकरंद सीसं । करी आप सीसं सुदेवी सगीसं ॥
लई फाक अंगं हथं फार षग्गी । षहा षग्ग चल्ली धरा आय लग्गी ॥
छं० ॥ ४९१ ॥

पर्‌यौ देषि मकंद दलपत्ति धायौ । सुषं मेल लीनौ कारं सेल सायौ ॥
हन्यौ आय कयमास कै अंग भारी । वरं भेदि अंग निहंगं करारी ॥
छं० ॥ ४९२ ॥

कट्‌यौ सेल कयमास हथ्थं गहायौ । सुषं मेल कीनौ फिरं सेल सार्‌यौ
हन्यौ काइथं वैंस कयमास भारी । फवी जीत चहुआन प्रस्थान सारी॥
छं० ॥ ४९३ ॥

मकरन्द का मारा जाना और कैमास का विजयी होना ।

चौपाई ॥ हनि मकरंद काइथं जंगह । दलपति वैस दवनि किय अंगह ॥
जहा चंद घाइल सुझ्झानै । भई जीत कयमास सुभानै ॥
छं ४९४ ॥

तीस सहस लाषन के संगं । सम्मर मांझ परे कटि अंगं ॥
हाथी परे तीस पर पांच । बोले चंद बदन वर सांच ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

निढ्ढुरराय का घायल होना, कन्नौज की सेना का काम आना । पृथ्वीराज की विजय का वर्णन ।

घाइल निढ्ढुरराय अचेत । वासठि पेर कमद्धज षेत ॥

कनवज कुसम काम सब आइय। फते लई चहुआन अचाइय।

छं० ॥ ४९६ ॥

आल्हा का कहना कि लाखन सी तो काम आए पर कुछ चिन्ता नहीं मैं तो अभी तयार हूं।

दूहा ॥ आए लापन काम रन। उचरे आल्ह सुभाय ॥
हम आविंगे काम सब। राज चंद नहि जाय ॥

छं० ॥ ४९७ ॥

आल्हा का सब सरदारों को इकट्ठे करके उत्तेजित करना।

चौपाई ॥ उचरै आल्ह सुनौ सब संगी। पीथोरा की फौज उमंगी ॥
मारे लापन तालहन सूर। नायक निरवाहे सब पूर ॥

छं० ॥ ४९८ ॥

जगनक भाट बुलाये आगें। वाइक कहि कनवज्जहि जागें ॥
लापन आल्हन वचन निवाहे। पीथल दल पग्गन सो ढाहै ॥

छं० ॥ ४९९ ॥

आल्हा का कुँवर ब्रह्मादित्य से कहना कि आप घर लौट जाइए मैं लड़ाई को देख लूंगा।

कवित्त ॥ उचरि आल्ह सु वचन। ब्रह्माजित करिये कानह ॥
आप युद्ध छंडिये। जाहु जीवत घर मानह ॥
हम करिहैं संग्राम। ताम आवै घर काजह ॥
भूमि कलिंजर जाहु। मिलौ परिमाल समाजह।
किज्जियौ सेव तजि जोम को। दंड दिव्य दै मप्पियहु ॥
किज्जियौ सेव तन संहुडा। नगर महोवा रापियहु ॥

छं० ॥ ५०० ॥

ब्रह्मादित्य का कहना कि मैं अभी पृथ्वीराज की सेना को काट गिराता हूँ मैं पीठ नहीं देन का।

चौपाई ॥ उचरे वचन ब्रह्माजित सोइ। सुनिये आल्ह श्रवन दै सोई ॥

तुम देषत पग्गनि तन षंडौं । संभरिया को सैन विहंडौ ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

लाषन तालहन काम सो आये । अरु मंत्री मकरंद कटाये ॥
अबै बनाफर ढील न कीजै । निरभै राज सुरग कौ कीजै ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

ब्रह्मादित्य की वीर रस सनी बातें सुनकर आल्हा का सब सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजना के वाक्य कहना ।

पद्धरी ॥ उच्चरै ब्रह्मजित सुनौ आल्ह । चल्लिये जंग छत्तीन चाल ॥
लीजिय वाग सब मोह छंडि । सुरमा लोक भेदे लु तंडि ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

सुनि बैन आल्ह उद्दिल बुलाय । दीनौ सुबोल भोरघ्य भाय ॥
कैलवादीत चंदेल सूर । वोइघ्य वीर परवार पूर ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

कोपियौ राय सलगैार लोह । ईसरह दास लोधी सुतोह ॥
मालहन्न बोलि भोपत्ति भूप । बोलियौ वैल नरपाल रूप ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

रूसतम्म षान पट्टान पाय । मालहन्न वीर सत साल आय ॥
सकतेस सौम वंसी सरद्द । जगते भस जाय गोतम्म सद्द ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

प्रौहित्त सु प्रमानंद नाम । मायर सरद्द काइथ्थ ताम ॥
वोलियो गंग बनिया परस्स । जगनक्क भाट धारै सरस्स ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

जलहन्न वोलि विय वंध ताम । मिलिये आय परिमाल काम ॥
सेना सुसाठि हज्जार तोल । उच्चरै आल्ह जिन संग बोल ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

कनवज्ज नाथ दिय कुमक्क सुद्ध । आये सुकामि सावंत जुद्ध ॥
लाषन कमद्ध तालन पठान । पहिलै लुटुट्ट परियौ जठान ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

चंदेल नौंन कीजै हलाल। कीजिये जुद्ध आवध विसाल॥
कीजिये लोह इक सत्त होय। वाही तजि घर वारह सोय।
छं० ॥ ५१० ॥

चौपाई ॥ सुनिय आल्ह को वानी भाखिय। तुलसी दल मैं सैन सम्हारिय॥
एकामत ह्वै जुरि जुद्ध जु कीजै। छत्रिय धर्म्म काज जिय दीजै॥
छं० ॥ ५११ ॥

आल्हा का उत्तेजन सुनकर सब का मरने कटने के लिय प्रस्तुत होजाना।

दूहा ॥ आल्हन मत सुनियौ स्रवंन। चित दिय सेलन षेल॥
आजि वरी सुर अच्छरी। नौन हलाल चंदेल॥
छं० ॥ ५१२ ॥

आल्हा का शास्त्रों की आज्ञा सुनाना कि जो राजपूत लड़ाई से हटता है वह नर्क में पड़ता है और जो वीरता से मारा जाता वह स्वर्ग का राज्य भोगता है और जीतता है तो पृथ्वी भोगता है और जिसको भागना हो अभी से चला जाय।

भुजंगी ॥ कही वत्त आल्हं सुनो ब्रह्म जीतं। धरी वत्तचीतं लही मत्त मीतं॥
अतुलं जुद्ध सामंत सज्जं सुभारी। करैं जुध परिमाल नंदं विचारी॥
छं० ॥ ५१३ ॥

वयं षोडसं राजकुम्मार सोई। सदा तेज चहुवान वलवान होई॥
तज्जौ जुद्ध सामंत नृप संग जावौ। पछै राज परिमाल नीकैं जमावौ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

परै भार रजपूत स्वामिही निकारैं। झिलैं लोह अंगं निहंगं सम्हारैं॥
धरै धर्म्म सीसं सु छत्रीय सूरैं। उवारंत वामी अपारैं हजूरैं॥
छं० ॥ ५१५ ॥

भजै रज्जपूतं धनी काम आवैं। वसे रतिवनं काम गहरे परावै॥
अवैं आहु संगं कुमारं तु दोई। मरैं हैसकाजं समाजं सजोई॥
छं० ॥ ५१६ ॥

सुनी कुवर बानी अल्हानंद सारी। तबै आल्हसौं वैन बोल्यौ हकारी॥
धनी होय धरतीनि को भोग भोगं। मरै नांहि जातैं हसै सर्व लोगं॥
छं० ॥ ५१७ ॥

नही बीज रजपूत कौ ताहि मानै। लीयौ नारि कित्ती सुक्रं वषानै॥
सुनी व्यास बानी बड़े सुष्य गाई। सबै लोग मानी पुरानीनि गाई॥
छं० ॥ ५१८ ॥

चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग। जा तन मरे नहीं कोइ लोग॥
सो धरनी नै कित्ती लयौ। वेदव्यास निरनै यह कियौ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सो रजपूत न गति को पावै। जम कौ डंड सीस पर लावै॥
चौरासी जौननि मैं भटकै। क्रम पर देही दर दर भटकै॥
छं० ॥ ५२० ॥

दूहा ॥ राजन धर जातन मरै। करै सुरग को भोग॥
दुनियां मैं जस विस्तरै। हँसै न दुरजन लोग॥
छं० ॥ ५२१ ॥

जा धरती को पाइ कै। मरै न जापै कोइ॥
अंत काल नरकह परै। जग में अपजस होइ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ धरती जा तन राजा मरई। नाम सु जार जाति सब धरई॥
अंतकाल वह नरकह परै। ताकी साषि व्यास मुनि भरै॥
छं० ॥ ५२३ ॥

दूहा ॥ उदिक उतारत ना मरै। ब्राह्मन जोगी भाट॥
जीवत भुव भटकत फिरै। मरै नरक मैं वास॥
छं० ॥ ५२४ ॥

कवित्त ॥ कहन [illegible] बानि। मानि आल्हन सब लिज्जहि॥
करौं पैज प्रन धारि। मारि सामंतनि लिज्जहि॥
लहौं सुरग अच्छरिय। हरौं चहुवान गरब सब॥
धरहुं देस गल मुंड। सूर मंडल भेदौं तब॥
परिमाल नंद इम उच्चरय। षंड षंड पिंडह करहुं॥

काढ़ौं सुदंत हस्तीनि के। मलहन दे निरमल तरहु ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

ब्रह्मादित्य का सब सरदारों और सेना से कहना कि आल्हा ऊदल जो कहें वही करना चाहिए। सब सरदारों का इकट्ठे होना और लड़ाई का तयारी करना।

मोतीदाम ॥ कहै ब्रह्मदित्ति सुवैन हुलास। सुनौसव सैन चंदेलन पास ॥
सुनौं उचवानिय ऊदिल आल्हं। सवै चलौ जोध छचीभ्रम चाल ॥
छं० ॥ ५२६ ॥

बुलायव केसव दीन चंदेल। करं परिहार सो चौ अथ मेल ॥
लिय राय सवैहि लगोउ बुलाय। मिले वय ईसर लोधिय जाय ॥
छं० ॥ ५२७ ॥

दिये सब भूपति मालहन पूर। मिलायव वैस नरब्बद नूर ॥
लिये चहुवानह रूप गहीर। दिये दस वाइय ए भरभीर ॥
छं० ॥ ५२८ ॥

सु रुस्तम षान पठान दलेल। भए सत साल सु मलहन मेल ॥
सकत्ति सवं सिय सोम विबुद्ध। जगत्तिय गौरय संमर सुद्ध ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

सु प्रोहित वै परमाँनद पूर। दिये दिसि दाहिनी ए दल खूर ॥
लिये भर माधव काइय वांह। भये भर वानिय गंग उमाह ॥
छं० ॥ ५३० ॥

जहां मिली जल्हन भाट विकट्ट। मिलें दल दिट्ठि अभंग सटट्ट ॥
कियौ सु चंदेल इते भर सोय। लिये चष कोइ न लाज सहोय ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

भए भग ऊदिल सावंत ठेल। वरं चक्रपानि वघेल समेल ॥
दला गहलोत भुजाधर भार। मिल्यौ जगनक्क सुभाट जुझार ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

दलं उर दाहि वाह्य उर दीन। इते सिरदार हरौल सु कीन ॥

सुनी द्विवर बानी ब्रह्मानंद सारी। तबै आल्ह सौं बैन बोल्यौ हकारी।
धनी होय धरतीनि के भोग भोगं। मरैं नांहि जातैं हसै सर्व लोगं॥

छं० ॥ ५१७ ॥

नही बीज रजपूत कौ ताहि मानै। लीयो नारि कित्ती सुकूरं वषानै॥
सुनी व्यास बानी बड़े सुष्य गाई। सबै लोग मानी पुरानीनि गाई॥

छं० ॥ ५१८ ॥

चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग। जा तन मरे नहीं कोइ लोग॥
सो धरनी नैं कित्ती लयौ। वेदव्यास निरनै यह कियौ॥

छं० ॥ ५१९ ॥

सो रजपूत न गति को पावै। जम कौ डंड सीस पर लावै॥
चौरासी जौननि मैं भटकै। जम पर देही दर दर भटकै॥

छं० ॥ ५२० ॥

दूहा ॥ राजन धर जातन मरै। करै सुरग को भोग॥
दुनियां मैं जस विस्तरै। हँसै न दुरजन लोग॥

छं० ॥ ५२१ ॥

जा धरती को षाइ कै। मरै न जापै कोइ॥
अंत काल नरकह परै। जग में अपजस होइ॥

छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ धरती जा तन राजा मरई। नाम सु जार जाति सब धरई॥
अंतकाल वह नरकह परै। ताकी साषि व्यास मुनि भरै॥

छं० ॥ ५२३ ॥

दूहा ॥ उदिक उतारत ना मरै। ब्राह्मन जोगी भाट॥
जीवत ध्रुव भटकत फिरै। मरै नरक मैं वास॥

छं० ॥ ५२४ ॥

कवित्त ॥ कहत ब्रह्मादित बानि। मानि आल्हन सब लिज्जहि॥
करैं षेज प्रन धारि। मारि सामंतनि लिज्जहि॥
लहौं सुरग अच्छरि य। हरौं चहुवान गरब सब॥
धरूं ईस गल मुंड। हूर मंडल भेदौं तव॥
परिमाल नंद इम उच्चरय। षंड षंड पिंडह करहुं॥

काढ्यौ सुदंत हस्तीनि के। मल्हन दे निरमल तरहु ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

ब्रह्मादित्य का सब सरदारों और सेना से कहना कि आल्हा ऊदल जो कहैं वही करना चाहिए। सब सरदारों का इकट्ठे होना और लड़ाई का तयारी करना।

मोतीदाम ॥ कहै ब्रह्मदित्ति सुवैन हुलास। सुनौसव सैन चंदेलन पास ॥
सुनौं उचवानिय ऊदिल आल्ह। सवै चलौ जोध छचीभ्रम चाल ॥
छं० ॥ ५२६ ॥

बुलायव केसव दीन चंदेल। करं परिहार सो चौ अग्र मेल ॥
लिय राय सवैहि लगोउ बुलाय। मिले वय ईसर लोधिय जाय ॥
छं० ॥ ५२७ ॥

दिये सब भूपति मल्हन पूर। मिलायव वैस नरब्बद नूर ॥
लिये चहुवानह रूप गहीर। दिये दस वाइय ए भरभीर ॥
छं० ॥ ५२८ ॥

सु रुस्तम षान पठान दलेल। भए सत साल सु मल्हन मेल ॥
सकत्ति सवं सिय सोम विबुद्ध। जगत्तिय गौरय संमर सुद्ध ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

सु प्रोहित वै परमाँनद पूर। दिये दिसि दाहिनी ए दल सूर ॥
लिये भर माधव काइथ वांह। भये भर वानिय गंग उमाह ॥
छं० ॥ ५३० ॥

जहां मिली जल्हन भाट विकट्ट। मिले दल दिट्टि अभंग सटट्ट ॥
कियौ सु चंदेल इते भर सोय। लिये चष कोइ न लाज सहोय ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

भए आग ऊदिल सावंत ठेल। बरं चक्रपानि बघेल समेल ॥
दला गहलोत भुजाधर भार। मिल्यौ जगनक्क सुभाट जुझार ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

दल उर दाहि वाहा उर दीन। इते सिरदार हरौल सु कीन ॥

बिचै ब्रह्मादित कुंवर सूर । दलं सिर मौर सु आल्हन पूर ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

अमान सुराय पमार सु ग्रम्म । चले सुध स्वामित चाल धरम्म ॥
सबै दल साठि एजार सपूर । मिले रन संग अभंग सु सूर ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सब साठ हजार सेना का सजना ।

चौपाई ॥ सात सहस चंदेल सुकीनै । अरु दस सहस वाम दिसि दीनै ॥
ग्यारह सहस दाहिनै सोई । आठ हजार हरौल सुहोई ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

दूहा ॥ चतुर विंस अतिमोल सें । ब्रह्मादित जह आल्ह ॥
साठि सहस सेना सबै । हरकारी तत काल ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

आल्हा का मरने का सामान करके अर्थात् तुलसी सालिग्राम सिला आदि सिर पर बाँध करके लड़ाई के लिये आगे बढ़ना । ऊदल का लड़ने के लिये आगे होना ।

पद्धरी ॥ हलकारी आल्ह सैना स पूर । सब किये जोध आगे जरूर ॥
सिर वाँधि गण्डिका सिला सोय । तुलसी सिर मंजरि मेलि सोय ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

मोजा सभरे मौहर निस पूर । किये मरन साज कुंवर करूर ॥
हलकारी सैन सब इक्क कीन । अप अजुह रन भए लीन ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

कंगल सुअंग सिर टोप लोय । प्राचीर छांह मिलि छांह दोय ॥
आगे सु चंद वाढ लईय वाग । करि तेज तुरिय करक चवषाग ।
छं० ॥ ५३९ ॥

दुवसैन मिलिव सागर समान । कुदियौ अग्र पयं मंडि कान ॥
हज्जार वीस उद्दिल समाज । कूदे सु पंगु पर उमगि साज ॥
छं० ॥ ५४० ॥

सत सहस कूदि सामंत सैन । उतरे धरिवर विस्तार नैन ॥

नरनाह कन्ह पुंडीर चंद । पज्जोन जैत भोहा सु इंद ॥

छं० । ५४१ ॥

गोयंद राज गहलोत सूर । कनकेस सुभर मुख उमगि नूर ।
संजम्म राय हाहुलि हमीर । तोंवर पहार हाड़ा गम्हीर ॥

छं० ॥ ५४२ ॥

नरसिंघ दाहिमां मत्त कीन । इतनैनि सुभट हय छंडि दीन ॥
उहिल्ल चक्रपानं वघेल । गहलोत दलां भोपत्ति सेल ॥

छं० ॥ ५४३ ॥

रायसल गौड़ नरवइ वैस । दाहिमा राय डाहरसमैंस ॥
दस मत्त षान पट्टान संग । ववदास सूर रन करि उमंग ॥

छं० ॥ ५४४ ॥

सकतेस सौम वंसी भुझार । जगतेस गौरवंसी समार ॥
प्रोहित परमानंद सच साल । जगनक भाट विद्या विसाल ॥

॥ छं० ॥ ५४५ ॥

आमान राय परिहार सोय । जालहन जोरवर वह लोय ॥
भुनग भदौरिया विरचि भार । इतनै कूदि उहिल्ल लार ॥

छं० ॥ ५४६ ॥

हज्जार वीस ठाकुर समाज । कूदिय सुजग्ग कहं पहरि साज ॥
उतरे जोध दोउ दिसान । अप अप्प इष्ट वर करत आन ॥

छं० ॥ ५४७ ॥

उत अंग मंग सन्नाह संधि । रूपे पयाल पग समर बंधि ॥
छंडिये तुरिय मंडिये जुद्ध । विहंसे सु बुद्ध सावंत क्रुद्ध ॥

छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ ऊदिल कूदे छंडि हय । इत कूदे सामंत ॥
लौनव धारयौ सीस पर । कियौ लरन कौ मंत ॥

छं० ॥ ५४९ ॥

ऊदल की लड़ाई आरम्भ होना । ऊदल की बीरता का वर्णन ।

चोटक ॥ सजियं हय ऊदिल कन्ह नरं । गहिये किरवान सु ढाल करं ॥

उमगे चहुआन चँदेल दलं । अप अप्प ससैन कराय हलं ॥
छं० ॥ ५५० ॥

गजराज हरौलनि पंति लगी । वरभद्दव जानि घटा उमगी ॥
अति उज्जल दंत समंत सधे । वगुला घन मैं जनु पँति वँधे ॥
छं० ॥ ५५१ ॥

वरलाल विसाल धजा रमकी । तड़िता मनु वादल मैं दमकी ॥
हसती सत द्दोय हरोल दियं । तिन ऊपर कन्ह सो कोप कियं ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

गहि दंत उपारहि मत्त वलं । कढ़ई जानु भीलनि कंद फलं ॥
पटकै गहियौं गर पानि करं । हनवंतव गावत पानि गिरं ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

विरध्यो वर कन्ह अमान बली । डर मानि चँदेल की फौज हली
मिलियं उत ऊदिल कोप कियं । उमगे वड रावत बीचि लियं ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

करैं वपु घाव सद्याव सम्हारि । किधौं वन कटिये कंटक वारि ॥
वहै किरवान असान सहथ्थ । परें धर ऊपर सीस समत्थ ॥
छं० ॥ ५५५ ॥

करष्षि कमान करं कर छुट्टि । परक्कि स भूमि दुहौं घट फुट्टि ॥
गनं गन जुत्थ सु अच्छर धाय । वनै घट घाइन देह घसाइ ॥
छं० ॥ ५५६ ॥

नरं नर नूर सो लोहन पूर । चरच्चर चुट्टय सीसनि सूर ॥
छल ब्बल षेलहि झेलहि सार । जुरंत जुवान झिलै धर आर ॥
छं ॥ ५५७ ॥

झलझ्झल तेग झलाहल झेल । ठटट्ठट रष्य अपच्छर षेल ॥
ठटट्ठट मिल्लिय पिल्लिय पाय । डरं उर कायर देषि डराय ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

ढरक्कय सुंड निरष्षय नैन । तरक्कय तीर वरक्कय वैन ॥
थिरं हुव सैन सुरक्कंति नांहि । दरद्दर दौरि परै दल मांहि ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

धरद्धर धारहि मार सुधीर । करक्कर वाहित मांगिरु तीर ॥
नचै रन सूर सचेत सपूर । धरद्धर धावत अग्गहिं सूर ॥
छं० ॥ ५६० ॥

बरब्बर बेदल आवध टूटि । भरब्भर भाजत नाहिंनै रूठि ॥
सरस्सर छेदहि मार सुढाल । जरज्जर नाचत घाय जटाल ॥
छं० ॥ ५६१ ॥

उरं उर फट्टति सांगि सु लग्ग । सुरा सुर देषत षेलत षग्ग ॥
षरी करि षांति उपैदल दोय । हरी हरि वानि उचारत सोय ॥
छं० ॥ ५६२ ॥

पिले वलवंत सु संजमराय । इतैं गहलोत दुयां उमगाय ॥
मिल्यौ सुष आइय महन मेल । तजौ किरवान गह्यौ कर सेल ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

लगायउ संजमराय क मार । सह्यौ तहां मार कियौ फिरि वार ॥
दई दलपत्ति के सीस मैं दौरि । लियौ सिर झेलि सदासिव गौरि ॥
छं० ॥ ५६४ ॥

लघ्यौ तव भोपति कौ नीय रीस । दई फिरि दौरि कै संजम सीस ॥
अम्यौ तव वार समूरछ मान । चल्यौ नरसिंघ तहां थक तान ॥
छं० ॥ ५६५ ॥

दई नरसिंघ गुरज्ज की सीस । पर्‌यौ गहलोत लियौ मन रीस ॥
लषे चक्रपानि नरसिंघ सोय । भिरे भरवथ्थ समथ्थइ लोय ॥
छं० ॥ ५६६ ॥

किये भुज पानि बघेल अमान । इते वपु दाड़िम इंद्र समान ॥
लय बथ छोड़ जुरे मिलि जुद्ध । गिरे धर दोइय वीर विवुद्ध ॥
छं० ॥ ५६७ ॥

दुहौं जम दाढ दुहौं डर सोय । हन्यौ चक्रपानि सो षंजर जोय ॥
छं० ॥ ५६८ ॥

चक्रपानि का मारा जाना । ब्रह्मादित्य का क्रोध करके अपनी सेना को ललकारना ।

दूहा ॥ चक्रपानि रन जूझि तन । आहु फौज परिमाल ॥

तब ब्रह्मजिति कोपि कैं । कहै बचन मुष ज्वाल ॥

छं० ॥ ५६९ ॥

ब्रह्मदिति हलकारिकैं । बाहुरि दल मैं आय ॥
धार स्वामि धम आल सिर । रन वर अनी बढाय ॥

छं० ॥ ५७० ॥

हनि सांवतन लषन रन । तालन प्रबल पठान ॥
सहस पचास बिपाय कैं । कलि मैं कियौ कहान ॥

छं० ॥ ५७१ ॥

कवित्त ॥ सरन धार संग लिये । बीर ब्रह्मजिति घायव ॥
भजे नृपति परिमाल । देषि धरम सुभजाइव ॥
कटी कुमक पंग की । कमध लाषन जुरि जंगह ॥
तिल तिल तन टूटियव । सर कीनैं नहि अंगह ॥
तालन पठान बिन सीस रुपि । अतुल पराक्रम कमधि किय ॥
भाजंत सैन जीवंत सहि । अहभो दुष सीलंत हिय ॥

छं० ॥ ५७२ ॥

कुवँर ब्रह्मादित्य का लड़ाई का प्रबन्ध करना । अल्हा को सेनापति बनाना । ऊदल आदि सरदारों के साथ सेना बाँट कर देना ।

पद्धरी ॥ परिमाल नंद हल कीन आय । विहसियौ कुंवर मंगल सनाय ॥
हलकाहि सैन सब इक्क कीन । आल्हन सीस सब भार दीन ॥

छं० ॥ ५७३ ॥

सकतेस सौमवंसी सु सूर । बरगहर बार सतसल करूर ॥
बरहो सुदेव कन्न बिरचि नूर । डौगर सी दल दौवा गरूर ॥

छं० ॥ ५७४ ॥

राठौर राय लल कोपि अंग । तौवर अमान मन चढि उमंग ॥
सिकवार सुरज्जन ध्रम सुसुद्ध । वलिवंश डौग केसव सुबुद्ध ॥

छं० ॥ ५७५ ॥

जाद्व सु भाल संबाध लोय। सुर का वसंत बलवंड लोय॥
जल्हन सुभाट अति तेज ताप। कायथ्थ कूम चंद अतुल वाप॥
छं० ॥ ५७६ ॥

बनिया सुभार सहि वुधि उमंग। इतने दीनै उहिल्ल संग॥
हज्जार बीस असवार और। गज राज होय सत सहनि जौर॥
छं० ॥ ५७७ ॥

पचास तोप वड़ सहन अंच। गोलीन पाय मन पंच पंच॥
हज्जार पांच दिय बान साथ। लपि बिषम वाह सामथ्थ वाथ॥
छं० ॥ ५७८ ॥

इधर कन्ह के साथ सब सरदारों का लड़ाई के लिये तयार होना।

उत कान्ह चंद पुंडीर जैत। कन्नक वड़ गुज्जर सलष नैत॥
भोहां चंदेल परिहार पीप। अतताइ कोपि रन अरिन जीप॥
छं० ॥ ५७९ ॥

सज्जमराय धरि दियउ युद्ध। तौवर पहार भुज धरि विरुद्ध॥
अचलेस अंग उमगे सुजंग। नवलेस अरह रन मन उमंग॥
छं० ॥ ५८० ॥

पज्जौन मलयसी पिता पूत। कोपंत जानि रघुनाथ दूत॥
छं० ॥ ५८१ ॥

दूहा॥ पंच सहस प्रिथिराज के। हरवल कान्ह सुभार॥
उतै बनाफर लेन सँग। उहिल बीस हजार॥
छं० ॥ ५८२ ॥

दोउ वीर रिसाय कैं। लए अच कर मांहि॥
बाग उठाई पग्ग कढ़ि। चढ़े मोह तन नांहि॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना और युद्ध का आरम्भ।

हनूफाल॥ दल मिले दोयउ संग। बज रंग वीर उमंग॥
उत कान्ह होमर डारि। आए सुवीर हँकारि॥
छं० ॥ ५८४ ॥

दल सहस उद्दिल लोइ । उत्तरे सुहै सर सोइ ॥
दस सहस हैमर फुट्टि । जिन तोप बाननि छुट्टि ॥

छं० ॥ ५८५ ॥

हय छंडि तीन हजार । चहुआन कन्हर लार ॥
असवार दोय सहस्स । रह पुट्टि रापि रहस्स ॥

छं० ॥ ५८६ ॥

दिपि पिलै पैलै ताहि । झिल्लै सुकन्ह सुभाहि ॥
कढि दंत मत्तनि पानि । थल भील कंदलि तानि ॥

छं० ॥ ५८७ ॥

गहि सुंडि फेरत गाहि । हनवंत गिरवर वाहि ॥
भुव पूछ पटकै वानि । बलिदेव दुनि जिह जानि ॥

छं० ॥ ५८८ ॥

हय पकरि वाहिन फेरि । असवार जुत्थन हेरि ॥
अगहत्त पीलनि कोट । मानियौ कन्हर जोट ॥

छं० ॥ ५८९ ॥

पेले सुदल सथ रत्थ । जिमि लंक वानर जुत्थ ॥
मुरकी अनी चंदेल । दल दबि कन्हर मेल ॥

छं० ॥ ५९० ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध । चन्देल की सेना का उखड़ना । ऊद्दल का आगे बढ़ कर लड़ना ।

कवित्त ॥ कन्ह कोप चहुवान । हनै हथ्थी मतवारे ॥
काढ़ि दंत जुरि वाह । डील डोंगर से डारे ॥
हैवर हत्थ समाहि । ढाहि दल दियौ सुसैनह ॥
भगी फौज चंदेल । देष सामंतनि नैनह ॥
मुरकंत फौज ऊद्दिल लषि । भयो बनाफर कोढ़नी ॥
सैंलोट करिय दुरजन्न भूम । रन भेटत सम्हरधनी ॥

छं० ॥ ५९१ ॥

कन्ह चौहान और ऊदल के घोर युद्ध का वर्णन ॥

मोतीदाम ॥ मिली रन फौज बनाफर वीर । चल्यौ सनमुष्ष मरन्न सुधीर ।
करी परदच्छिन आल्हन काज । लिये सब रावत जंग समाज ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

चल्यौ सोमवंस सकत्त सुधीर । फिर्यौ वृह्मदेव करन्न गहीर ॥
मिल्यौ दल डौंगरसी दोउ वाह । पिल्यौ सुअमान ह्वै तौंवर ताह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

मिल्यौ रयसल्ल रठौर मरद्द । विल्यौ सचसाल सुबांधि जरद्द ॥
पिल्यौ सिकवार सुरज्जन सीह । पिल्यौ दल डौंग सुकेसव वीह ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

पिल्यौ दुरजन्न सुजादव जोर । सुरघ्घि सुवीर वसंत अमोर ॥
पिल्यौ दल जल्हन भाट हुलास । पिल्यौ कमचंद सुकायथ जास ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

पिल्यौ नरमल्ल सु वैस वरिष्ट । इतै पिलि उद्दिल संग गरिष्ट ॥
इतैं हय छंडिय कन्ह समत्थ । उतैं हय छंडिय सामँत सत्थ ॥
छं० ॥ ५९६ ॥

भुजक्कल आवध सायध वाय । डगामग कायर धुक्कत पाय ॥
करष्षि कमान लई दुहु सैन । मरष्षिय कुंडल कौनिय सैन ॥
छं० ॥ ५९७ ॥

चलावत सैल दिढ़ाव पगन्न । मनों अहिवौं विय होत मगन्न ॥
चलावत हय चढ़ि दंति दुवाह । करै वपु प्रान सुभट्ट वराह ॥
छं० ॥ ५९८ ॥

वहै गउकर्न सु लग्गन हीक । मनो अहि संचिय जीह सुलीक ॥
वहै वहुते सर नावक नेह । वरष्षहि बूंद सु अंत पियेह ॥
छं० ॥ ५९९ ॥

दई कर डारि कमानस तेन । गहै कर सेल लषे दोउ सैन ॥
करै दोउ सैन अन्यों अन्य मार । दुहू घट होत है पंजर पार ॥
छं० ॥ ६०० ॥

वहै रुधि छेछ दुहौं दल वीर । लगावत तोंवर जीवर जोर ॥

लगै उर आनि सकत्तिय सूर। मनों विष आंलिव लग्गि करूर॥
छं० ॥ ६०१ ॥

अन्या अन्य लेल को थप्पिय मार। तवें दुहों वीर गह्यो किरवार॥
लगे उर कंध सुबंध घुलाय। मनौ जमराज जनेउ वनाय॥
छं० ॥ ६०२ ॥

लगै सिर ऊपर कढ्ढिहै टोप। किधौ कियौ संग सरस्वति लोप॥
वहै किरवान सों कंधन झांक। रुपे धर रुंड वहै सिर हांक॥
छं० ॥ ६०३ ॥

वहै सिर सूरन के सजि नेत। हँकारत राह किधौं विय केत॥
तजी किरवान लई जम दड्ढ। लगावत हीय किये वल गड्ढ॥
छं० ॥ ६०४ ॥

बषत्तर फारि करै कर जोर। मनौं घन भेंडि उठी रज कोर॥
लगावत षंजर पंजर पार। किधौं कियौ कालिका दंत निवार॥
छं० ॥ ६०५ ॥

चलावत संकल फेरि जुवान। घुसावत अंग निहंग कमान॥
चलायव गुर्ज्ज सु पीलन सीस। मनौं सिर तोरि पुरंदर सीस॥
छं० ॥ ६०६ ॥

लगाय भसुंडिनि सीस नितानि। मनौं दधि फोरि गवालिय स्याम॥
चलावत केहरि के नष पेंट। वछस्थल फारिकै डारिए ठेंट॥
छं० ॥ ६०७ ॥

लगावत राज कुंवार निदान। किधौं कटी पूंछ सुनागनि तानि॥
यहीं विधि उद्दिल कम्ह लरंत। सहा सुध छत्रिय धर्म धरंत॥
छं० ॥ ६०८ ॥

उठकिय सैन उतें चहुवान। मिले दुअ वीर प्रगट्टन आनि॥
छं० ॥ ६०९ ॥

दूहा॥ दौवयौ संजमराय रन। ऊदिल ऊपर आंय॥
सकल सौमवंसी मरद। भिहल्यौ वीर रिसाय॥
छं० ॥ ६१० ॥

कई सामंतों और चंदेल सेना के सरदारों का वरनी वरनी से युद्ध वर्णन

भुजंगी ॥ पिल्यौ संजमराय उदिस्स कीनी। धरै षग्ग हथ्थं समथ्थं गुमानी ॥
लच्यौ संजमाराय सकतेस राजं। लियो वीचही प्रान जुद्धं समाजं॥
छं० ॥ ६११ ॥

दुहौ वीर गाजे वघाए सुवाहं। दुहौ सूर मरनं सु मंड्यो उछाहं।
कटं काट षग्गं उमंगं चलावै। कव्यौ धर सु सीसं विकट्टं मिलावै॥
छं० ॥ ६१२ ॥

गटं गट्ट जुगिनी सु लोह्न भरावै। घटं को चिहूं घाउ घट्टं धरावै॥
नटं जेम नाचंत वारं सुधारे। चटक्को तुरी छंडि पटकै सुपारै॥
छं० ॥ ६१३ ॥

ढलं ढाल वूडंत सारं सु जोरं। जरैं जज्जरं ज्वान आमान तोरं॥
हहक्कैं दलं दोय देषै हट्टक्कै। पटकं दिहौ छूटि कौनै लट्टक्कै॥
छं० ॥ ६१४ ॥

ठट्टक्कैं दोऊ सैन देषैं तमासौ। डडक्कतं वाजंत डौंरू उमासौ॥
ढढक्कं द्दरं ढाढरं कुट्टि भरियं। ततत्थेई नाचत सावंत झरियं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

ररक्कंत जोगिनी भैरौं निषारी। उमाकंत नाचंत दै हथ्थ तारी।
ततत्थेई नाचंत ईसं उरंगै। थरक्के दुहौं सेन देषैं रमंगै।
छं० ॥ ६१६ ॥

दलं दोइ द्रढै वलं वाह दोई। धपैं वीर धावंत आवंत तोई॥
नरं नेह छंडे भरा नेह न्यारे। पुलकंत वाह्न अपारे पचारै॥
छं० ॥ ६१७ ॥

फिरैं नाहि रोक फतैं स्वामि अड्डे। धरी माथ हथ्थं परी पाप गड्डे॥
हन्यौ आय संज्जम सेलं समाही। तवै वीर सकतेस किरवान वाहीं॥
छं० ॥ ६१८ ॥

लग्यौ संजमं सेल हीकं सुतायं। रुप्यो जाय वरनो जियौ देह कायं॥
लगी तेंग संजम कै अंग भारी। गई छूटि संग्या पर्यौ भूम धारी॥
छं० ॥ ६१९ ॥

परयौ अंत सेजं लवंतं लषायौ । तहां गहरवारं सता कोपि आयौ ॥
उतै चंद पुंडीर नैनन लषायौ । तवैं कोपि करि वीर सत्ता सुधायौ ॥
छं० ॥ ६२० ॥

लष्यो चंद पुंडीर आयौ चलाई । गहर वीर चहुवान सैना हलाई ॥
जय्यौ मंच हनवंत सत साल सोई । गयौ सिरह लई वरं वीर लोई ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

उतैं चंद पुंडीर देवी पुजाई । तज्यौ भकारं संग किलकारि आई ॥
लष्यौ सचसालं विसालं वरिष्टं । चल्यौ पीप परिहार भीरं गरिष्टं ॥
छं० ॥ ६२२ ॥

चल्यौ मंच करनं सहाई सहत्ता । जप्यौ मंच सुष भैरवं क्रोध रत्ता ॥
किलकारि भैरूं ललकारि आयौ । हन्यौ महिष येवं वली दीन पायौ ॥
छं० ॥ ६२३ ॥

इतै देव करनं सता गहरवारं । उतें चंद पुंडीर पीपं पहारं ॥
एते दोय परिमाल के सुभट ठाये । तिनं उप्परं चंद पुंडीर आये ॥
छं० ॥ ६२४ ॥

वियौ पीप परिहार साहाय आये । लिये वीर दो ईस किरवान चाये ॥
करं सचसालं कमानं सलीनं । धरयौ वान लेसं प्रहारं सुकीनं ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

लग्यौ पीप परिहार कै हीक आयौ । भिंद्यौ अंग रंगं धरंनी मिलायौ ॥
परयौ पीप परिहार धरनी अचेतं । उठ्यौ संजमंराय पायौ सुचेत ॥
छं० ॥ ६२६ ॥

लष्यौ संजमा राय घौ करन धायौ । सिरं आय संज्जंम के सीस नायौ ।
लगी सीस तेगं सिरा फार होई । दुहौं हथ्थ फंदं गही वीर सोई ।
छं० ॥ ६२७ ॥

कुवानं सतं षीचि सीसं विधायौ । दुहौं कार वेधी सचारं न धायौ ॥
छं० ॥ ६२८ ॥

देवकर्ण की तलवार से संजमराय का शिर फटजाना और सत्रसाल के तीर से सर जुड़ जाने पर उसका दोनों को मार गिराना।

दूहा ॥ देवकरन दिय दौरिकै। संजम सीस गहीर ॥
खटकी फांक निराट विय। सह्यौ सत्रसल तीर ॥
छं० ॥ ६२९ ॥

कवित्त ॥ देवकरन ने दौरि। सीस संजम कौ दीनिय ॥
फट्यौ सीस विचि सोइ। आय नासा वगि लीनिय ॥
सत्रसाल सांगिनि। हन्यौ विद्व फांकन तीरह ॥
भयौ सीस साब्रित। नह्यौ विचि पाल गहीरह ॥
संज्जम सीस विचि सों विधिव। सत्रसाल मुजरा कियव ॥
दुहौ हाथ घालि वर धारि कर। वरही कै कांधै दियव ॥
छं० ॥ ६३० ॥

पद्धरी ॥ संजम्म राय हनि सोमवंस। रुप्पियो कुंत छाती उतंस ॥
सकतेस दई किरवान धाय। परियौ सुधरनि संजम राय ॥
छं० ॥ ६३१ ॥

धाये सुचंद पुंडीर वीय। आये सु सज्जि चंदेल दीय ॥
तहं सत्रसाल आयौ सु संग। वरि हंस देव करि करि उमंग ॥
छं० ॥ ६३२ ॥

कम्मान पकरि सत्रसाल सूर। दीनी सु पीप कैं हिय करूर ॥
लग्यौ तीर धर फुट्टि लोय। परियौ सो पीप धर बिगरि होय ॥
छं० ॥ ६३३ ॥

ता समें उठे संजम नरेस। मिटि गई मूरछा सरव तेस ॥
दौरे सु देव क्रन किये रीस। दीनी सु जाय संजम सीस ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

ता संमै सत्रसाल तीर वाहि। फटि गयौ तीर लगि नाक चाहि ॥
परिहार तीर किये अवन ठास। विधि गयौ सीस लगि तीर तास ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

सचसाल काज किन्नव सलाम । किरवान जाय दई कन्ह तास ॥
लगी सु कंह नौगुन उतार । खुल गयौ कन्ह दिवकरन धार ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

कटि भो मरंन लगि रोस आय । पाषर समेत हैमर पुलाय ॥
उत चंद आय सुषमेल कीन । सचसाल सीस किरवान दीन ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परियो सु टुट्टि रन गहर वार । दौवां डोंगर सी गह्यव सार ॥
चल्लयौ वीर पुंडीर सुष्ष । दुहुं हथ्थ विरचि वाही सुरुष्ष ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

लागी सु झिलम मैं मध्य जाय । कढि ढाल टोप लगि कमरि आय ॥
परियो सुचंद धर सलषि दिष्ष । चल्यौ पमार दौवा सम्मुष्ष ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

वाही स हत्थ दौवा सु सूर । कटि टोप झिलम भृकुटी करूर ॥
तरवार वाहि पंमार चाय । कटि कट्टि जीन हय गय षपाय ॥
छं० ॥ ६४० ॥

घूम्यौ पंवार परि धरनि मध्य । दिष्षयौ जयत निड्डुर प्रसिद्ध ॥
चल्यो सु जैन निड्डुर नरेस । तौमर अमान चलि गयौ तेस ॥
छं० ॥ ६४१ ॥

कमधुज्ज राय सलखीय सहाय । चलिये सुवीर रन सज्जि आय ॥
कीन्हौ सु कन्ह ऊपर चलाय । आयौ सु वनाफर ऊद धाय ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध वर्णन (सेना का युद्ध)

दूहा ॥ उतै सज्जि कन्ह धायकै । इत ऊदल सजि आय ॥
अप अप नृप जै इच्छई । मंगल मरन उपाय ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

चौपाई ॥ परे सकतेस सोमवंसी रन । गहरवार च्यौ करन कटे तन ॥
डौंगरसी दौवा तन कट्टिय । सामंतनि सनमुष आवट्टिय ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

चंद पुंडीर परे मुरछायं । अहि परिहार पीप गिर ठायं ॥

संजम राय तुझि सिर कट्टिव । वीर वीर तन में रस फुल्लिव ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

कन्ह के साथ के निड्डुर आदि सामंतों से फिर ऊदल के साथ के कई सरदारों का परस्पर युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ लषि निडुर जयति कन्ह चलियं । कनक्क वड़ गुज्जर जै मिलियं ॥
लषि मोह पज्जोन चंद वली । इतने मिलि सैन सुसुष्ष चली ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

लषि जद्दिल जोध सनंसुपयं । संग तौंवर मान वली रुषयं ॥
कामधुज्ज सु राय सला पिलियं । सिक्रवार सु रज्जन से मिलियं ॥
छं० ॥ ६४७ ॥

वलिवंड सु केसव गौंड़ पिले । जहां जादवं इंद उमंगि चले ।
सुरको वर वीर वसंत वनै । गय जल्हन भाट समार नवै ॥ ।
छं० ॥ ६४८ ॥

वकसी जहां कायथ क्रम चंद । उमग्यौ वनियां भर माल इंद ॥
पिलियौ तहां जद्दिल पायन सौं । भर झेलि वनाफर रायन सौं ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

सुष अग्गि पचासक तोप करी । ठहराइय सोरनि जोर भरी ॥
हलकारिय गोल सलोल भरी । वड़ कोट जंजीर तहां जकरी ॥
छं० ॥ ६५० ॥

अरु ज्वान सु वान दई चिनगी । दल सांवत ऊपर रौंस लगी ॥
रष तोपन जाम गिलाय दई । परिये जनौ घोरनि हाव सही ॥
छं० ॥ ६५१ ॥

अरराट भयौ अति सोर रह्यौ । उलका सद अंवर चाय रह्यौ ॥
धुरकी धर संजम राय परे । रन पंच हजार तहां जकरे ॥
छं० ॥ ६५२ ॥

हस्ती परि तीस सु संमर में । कितनैं डर कायर वै मन मैं ॥
सव फेर सु ऊदिल वाग लई । संग वीस हजार सौ भार तई ॥
छं० ॥ ६५३ ॥

बलिवंड करै बिय षंड रनं । षँड षँड सु षीस प्रचंड करं ॥
बिचले दल पीथल तेग तयो । सब आर सु ऊदिल झेलि लियो ॥
छं० ॥ ६५४ ॥

चहुवान हरोल अनी सुरकी । लषि संजम राय गिरे धरकी ॥
तहां चंद पुंडीर पिपास परे । मुरछाय सुलष्य धरन्नि गिरे ॥
छं० ॥ ६५५ ॥

तहां कन्ह कोप कर्यौ रन में । सुरकी सब सैन दुवाभर में ॥
किरवान गही हय छांड़ि दियै । सनमुष्य सु ऊदिल पें पिलियै ॥
छं० ॥ ६५६ ॥

तहां जैत पज्जौन मलै सी परं । रनसिंघ पहार सजै गहरं ॥
पर हाहुली राव हमीर चले । इतने अरि ऊदिल पै जु पिलै ॥
छं० ॥ ६५७ ॥

उत वीर वसंत रुक्म चंद । बनिया वड़ भार जु माल ढंद ॥
देवरा रंन डोंगर सी उमहे । चहुवान सु जल्हन भाट कहे ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

परिमाल सुनै न प्रगास वलं । चहुवान सवैं भर तानि दलं ॥
मग रोकिय कन्ह कौ आजु अगैं । विधि लीजियै आय कें जुष्य पगैं ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

सनमुष्ष लहौ जु सबैं अवही । मृत लोक के भोग तजौ सबही ॥
छं० ॥ ६६० ॥

कवित्त ॥ दिगय फौज प्रिथीराज । तोप बाननि के मारिय ॥
गिर्यो सु संजम राय । चंद पुंडीर सुधारिय ॥
पर्यौ पीप परिहार । परे बड़ गुज्जर लोइय ॥
परिय सु तीस गयंद । सहस हैवर गिर लोइय ॥
रजपूत सहस चौदह परे । फौज बिचिलि पाछें भइय ॥
चहुवान सहसत्ति हांक हुअ । कन्ह वीर दारुन दइय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

चौपाई ॥ सुरकी फौज देषि चहुवानं । पिलियै हाथी अंमत तानं ॥
कन्ह जयत हाहुली हमीरह । नरस्यंघ रांम मलैसी धीरह ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

हांकि लैन नृप आगें किन्नय। चांवड काजैं आयस दिन्नय॥
तुम परिमाल पकरि कर लाज। मैं ऊदिल कौ जंग पपाज॥
छं० ॥ ६६३ ॥

पोटक॥ नृप हाथिय पीथल पेल वरं। सव लैन सकेलि कै एक करं॥
कैमास रु कन्ह पजौन मिले। संग हाहुलि राय हमीर चले।
छं० ॥ ६६४ ॥

तहां पीचीय देव प्रसंग चली। विक्कराज सु धावत धीर हली॥
तहां पेतर पूरन मल्ल चले। भरभालुन जद्द पगार मिले॥
छं० ॥ ६६५ ॥

नृप ऊदिल ऊपर कोप किये। इतने उमराव सु संग दिये॥
उत देषि वनाफर वै षुलियं। संग डौंगर सी दौवां मिलियं॥
छं० ॥ ६६६ ॥

कूम चंद्व संतर जल्हनयं। सिकवार सु रज्जन मल्हनयं॥
तहां भोज वनाफर भार मलं। ववता अज वावर कोपि दलं॥
छं० ॥ ६६७ ॥

सौहकम्म मिले भरभार दये। इतनैं मिलि ऊदिल संग भये॥
उत कन्ह चलायव कोपि कियं। इत ऊदिल वीर अपार धियं॥
छं० ॥ ६६८ ॥

विफरै चहुवान वनाफरयं। धरि हथ्थन लोहपि हथ्थ वरयं॥
चहुवान दवाय हरोल लियं। उत आल्हन पोवत जुद्ध जियं॥
छं० ॥ ६६९ ॥

पिलियं भई भीर पजौन चली। द्रिग देषि चंदेलकी फौज हली॥
पटकैं गहि हेमर भूलायं। ससक्ति पयादिन के थलयं॥
छं० ॥ ६७० ॥

कहूं हांकय धाकय वीर मुषं। कहूं सारत सायक ले सुरषं॥
कहुं सेल चलावत वाहु परं। करि टूटि सनाह सु फूटि मरं॥
छं० ॥ ६७१ ॥

विफरै वल वीर पजौन इतैं। सिकवार सु रज्जन आय उतैं॥
सिकवार चलाइ सकत्ति करं। उर लागि पजौन कै फूटि परं॥
छं० ॥ ६७२ ॥

धुकि राय पजौन वै कोप किय । किरवान सु रज्जन कंध दिय ॥
परिय सिर टूटि धरन्नि गिरे । ततकाल वरंगिस आय वरे ॥
छं० ॥ ६७३ ॥
भ्रम पाय पजौन गिरै धरनी । फिरि आयव डौंगरसी भरनी ॥
दीवा तन सायक लाइ अर्यौ । तिन ऊपर आय सुजास अर्यौ
छं० ॥ ६७४ ॥
गहिकै किरवान तहां वगयौ । तिन सायक डौंगर कै लगयौ ॥
किरवान वढ़ी कर जास लियं । विय हथ्थ गहाय कै सीस दियं ॥
छं० ॥ ६७५ ॥
धुकि तै दई डौंगरसी पग में । धर घूंमि कै जास गिर्यौ मग में ॥
फिरि चेत कैं तेग दई सिर मैं । गिरि डौंगरसी दीवा धर मैं ॥
छं० ॥ ६७६ ॥
दीवा सिर तूटि कमंध नच्यौ । उत वीर सु ईश्वर माल सच्यौ ॥
वकसी क्रमचंद सु आय गयौ । वगधार घनी रन वीचि लियौ ॥
छं० ॥ ६७७ ॥
सकसैना श्रीवास दौउ उर मैं । फरफूटि सनाह कर्यौ चर मैं ॥
गह पाय सुधीर पटक्कि धुरं । नर चून भयौ सिर फूटि वरं ॥
छं० ॥ ६७८ ॥
रन धायकै वैस सुभार मलं । पिलियौ जु जहां प्रिथीराज दलं ॥
नरसिंघ सु दाहा देषि चषं । वरवीर सुन्यौ धर में सुरषं ॥
छं० ॥ ६७९ ॥
नरसिंह गुरज्ज लई सरमैं । उत साहु सु सांगि लई कर मैं ॥
कर साह सु सांगि चलाइ उतैं । वरछा वै छूटि कै डारैं कितैं ॥
छं० ॥ ६८० ॥
नरस्यंघ सुधाय कियौ गुरजं । सिर टूटि धरा सुपरे सुरजं ॥
भए सिर के सब टूक हजार । रहै विधि स्वामित वाजिय सार ॥
छं० ॥ ६८१ ॥

जल्हन कवि का मारा जाना और उसका ऊदल को पुकारना ।

दूहा ॥ जल्हन भाट निराल लषि । मरन सुनी सै आय ॥

सुनियौ सुत जसराज के। सुरग सोग मन ल्याय ॥

छं० ॥ ६८२ ॥

रसावला ॥ कन्ह जद लष्षयो। नैन दोउ दिष्षयौ॥
बोलि बानी वरं। लीन एष्षं सरं ॥

छं० ॥ ६८३ ॥

कीन भारी मनं। स्वामि सज्जै पनं ॥
जोध दोऊ चले। क्रोध बोलं मिलें ॥

छं० ॥ ६८४ ॥

इष्ट बोले सुषं। ध्यान अंबा रुषं ॥
बान बाहं बियं। दुष्ष सैना दियं ॥

छं० ॥ ६८५ ॥

बार लग्गै उरं। पार पागैं परं ॥
सुभि लुट्टै वहै। अरध चंदं वहै

छं० ॥ ६८६ ॥

काक सीसं लहै। सार स्फूटैं सहैं ॥
सेलि लागै हियै। प्रान छक्कै कियै ॥

छं० ॥ ६८७ ॥

सेलि बाहै वरं। ज्वान धरती परं ॥
रुक्क बाहै कह्नं। ताकि मारै अह्नं ॥

छं० ॥ ६८८ ॥

जम्म दाढं दियं। प्रान कड्डी लियं ॥
पंजरं मारियं। पंजरं फारियं ॥

छं० ॥ ६८९ ॥

रंजकं नावते। सूर सर धावते ॥
फौज मारी सहू। सीर कोपे विहू ॥

छं० ॥ ६९० ॥

मार मारं कियं। उद्दिसं विहसियं ॥
जल्हन संगयं। भाट जमं गयं ॥

छं० ॥ ६९१ ॥

दूहा ॥ उतै कन्ह आयौ उरष । इतै सु ऊदल जोध ॥
चाहुवान चंदेल को । मंडि सावंत करि क्रोध ॥
छं० ॥ ६९२ ॥

ऊदल और कन्ह का वरनी से युद्ध और ऊदल का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ मिले ऊदिलं कन्ह दोऊ अभंगं । विरच्चे सु जोधा दोऊ स्वामि संगं ॥
जपै इष्ट मंत्र उमाकंत सोई । भवानी धरै ध्यान धावंत दोई ॥
छं० ॥ ६९३ ॥

उमाकंत मातं जपंतं सुधाये । विहौं वार वानंत सनमुष्ष धाये ॥
मिली दिष्टि सौं दिष्टि वानी उचारी । अहा कन्ह केरौ चलै जोध भारी
छं० ॥ ६९४ ॥

दलं पातिसाही सवैं तुम्म जीते । अवै ऊदसौं षयाल सव आव वीते ॥
घनै दिन पट्टी सु आषें बधाई । अवै उद्दलं सौं परयौ घ्याल आई ॥
छं० ॥ ६९५ ॥

उतै कन्ह बोल्यौ महा रोस होई । सुनौ नंद जसराज के बात सोई ॥
इहां गौड लाही गढा ठाम जानौ । अवै कन्ह चहुवान सों जुद्ध आनौ ॥
छं० ॥ ६९६ ॥

विरंचे दुहौ जोध आवद्ध वर सें । घनें वीर जोधानि के प्रान गरसे ॥
चलावंत तीरं सकत्ती करारी । लगैं वार छत्ती परैं फूटि न्यारी ॥
छं० ॥ ६९७ ॥

चलावंत वीरं दुहौ वीर वांके । परै फूटि धरनी दुहौ सैन धांके ॥
चलावंत सेलं दुहौं वीर जोरे । सनाहं वपू फूटि फूटंत घोरे ॥
छं० ॥ ६९८ ॥

वहै तेग वेगं लहूरं हकारे । मनू पच चंक्र कुलालं उतारे ॥
चलावंत फरसा सिरं फाक होई । मनो विंटियौ वाट चवूज सोई ॥
छं० ॥ ६९९ ॥

वहै अंग सीसं सु अप्पार मारं । किधौं कन्ह फोरंत दधि ग्वाल सारं ॥
लगैं मुदगरं मार भारी सु सीसं । कटैं कै हजारं लट्टकै सुदीसं ॥
छं० ॥ ७०० ॥

चलावंत गुरजं हकारंत हाकं। परी दल दुहूं मारू दुहूं जोधवाकं ॥
लगै जस्स दाढं सनाहं सुषुट्टै। वपू घंतलै कालजे पार फूटै ॥
छं० ॥ ७०१ ॥

लगावंत हांके हरी नैंन घारे। वरं कंगलं अंग उर अंग फारे ॥
इसी भांति कन्हं लरै उद्दि दोई। कटक्कै अवट्टै दुहों कोप होई ॥
छं० ॥ ७०२ ॥

उतैं कन्ह की भीर कयमास आयौ। वियं ठांक चाटा सिरं झूर ठायौ॥
लप्यौ जल्हनं भाट कैमास सोई। लियौ बीचही आय महावीर होई ॥
छं० ॥ ७०३ ॥

इतें टाक चाटा सुसुप मेल कीनौ। वली जल्हनं तानि कै बीच लीनौ॥
गही तेग दोई दुहौं वार कीनौं। तवै भट्ट विपरीति होइ षग्ग लीनौं॥
छं० ॥ ७०४ ॥

लगी जल्हनं हाथ की तेग चाई। फिर्यौ चाहुवानं सुधरनी गिराई॥
वरं टाक चाटा सिरं रूक वांही। लग्यौ वीर जल्हनं पर्यौ भूमि माहीं॥
छं० ॥ ७०५ ॥

उतें आय कयमास सेलं चलायौ। वली जल्हनं षेत धरनी मिलायौ।
पर्यौ जल्हनं देषि ऊदिल्ल धायौ। वली कन्हकै कंध मैं षग्ग नायौ॥
छं० ॥ ७०६ ॥

भर्यौ सात वारं सु कन्हं नरेसं। गह्यौ ऊदिल्ल धाय हथ्थं सुवेसं॥
भए लथ्थ वथ्थं सु ऊदिल्ल कन्हं। इतैं आइयौ दौरि परिहार नन्हं॥
छं० ॥ ७०७ ॥

वली दूसरै वीर कयमास आयो। उरं उद्द कैं आय सेलं लगायो॥
गही तेग कन्हं सिरं वार कीनौ। पर्यौ ऊदिलं टूटि धरनी नवीनौ
छं० ॥ ७०८ ॥

लथ्यौ रुंड धरनी सिरं हाक मारं। भयौ मेर ठाढौ सु ऊदिल्ल हकारं॥
इतं ऊदिलं रुंड धायौ सम्हारी। वली तेग कयमास कै कंध झारी॥
छं० ॥ ७०९ ॥

पर्यो मूरछा दाहिमां भूमि आयौ। गह्यौ रुंड कन्हं धरंनी मिलायौ
हन्यौ ऊदिलं कंह कयमास दोई। भजी सरव चंदेल की फौज सोई ॥
छं० ॥ ७१० ॥

ऊदल का कबंध खड़ा होना, फिर उसका चौहान सेना के एक हजार सिपाहियों को मारना।

दूहा ॥ ऊदिल कौ नाच्यौ कमध । गिर्‌यौ सीस धर छूर ॥
हनि सैना प्रिथीराज की । एक हजार संपूर ॥
छं० ॥ ७११ ॥

चौपाई ॥ पहिलैं ऊदिल कन्ह घूमायौ। पृथीराज सिर खग्ग लगायौ ॥
चितिय कन्ह परिहार नवीनौं । अरु मूरछा सामंत तीनौं ॥
छं० ॥ ७१२ ॥

दूहा ॥ तीनौ मिलिकै मारियौ । रन जसराज कुमार ॥
मारे अरु प्रथीराज के । सिर विन एक हजार ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

ऊदल का मरना जानकर कुंवर ब्रह्माजीत का मोरचे पर आना।

कवित्त ॥ सुनि ब्रह्मादिति वत्त । काम ऊदिल रन आइव ॥
गै हरवल सब तूटि । सार सामंतनि घाइव ॥
लचलाल लकतेस । पर्‌यौ यौ करन अमानैं ॥
सुरजन डौंगर परिव । परिव अल्हन नर पानैं ॥
धर परे पील सै दोय रन । दस हजार हैवर वहर ॥
मुष वाह वाह अल्हन कहैं । कन्ह कटक कीनौ कहर ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

चौपाई ॥ ऊदिल कटे वीर रन मांहि । छची धरम धरे उर मांहि ॥
ब्रह्मादिति बोले इह वानी । सुरग भोग भोगव मन मानी ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

ब्रह्माजीत की सेना का व्यूह वर्णन।

रसावला ॥ कियौ कुवार छन्नयं । चंदेल चाल चल्लियं ॥
हरोल पील कीलयं । अरी विपुट्टि दीनयं ॥
छं० ॥ ७१६ ॥

तमंकि वाग लीनयं । सु स्वामि धरम चीनहयं ॥
बनाय वेद फौजयं । विचारि आल्ह चौजयं ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

मिले मरद्द सार के । अनेक दाव धार के ॥
बंध्यौ गरट्ट मोलयं । विचैंस वार छोलियं ॥

छं० ॥ ७१८ ॥

चल्यौ सु आल्ह छायय । लियं सुभाट सायय ॥
उतं चुहान चल्लियं । मरद्द मेलि मिल्लियं ॥

छं० ॥ ७१९ ॥

लवंध साजि चल्लयं । कुंवार वीर पिल्लियं ॥
कैमास कन्ह जैतयं । हमीर जुद्ध नेतयं ॥

छं० ॥ ७२० ॥

गम्हीर कन्ह केसयं । मलैसी वीर वैसयं ॥
छाहुलि राय मल्हनं । गोयंद राज जल्हनं ॥

छं० ॥ ७२१ ॥

पहार राज तुंवरं । चले समाज कुंवरं ॥
उछाह आल्ह कीनयं । वनाफरं प्रवीनयं ॥

छं० ॥ ७२२ ॥

चल्यौ प्रमाल नंदयं । मनू ससी सु चंदयं ॥
सरग्ग भोग आसयं । पिलन्न पग्ग तासयं ॥

छं० ॥ ७२३ ॥

वुल्यौ वयंन वाचयं । सुनौ चुहान साचयं ॥
जु ध्रंम जुद्ध किज्जयं । वचन्न पास लिज्जयं ॥

छं० ॥ ७२४ ॥

वुलाय जोध जोधयं । करै हथ्यार सोधयं ॥
अध्रम्म जुद्ध छंडियं । सुध्रम्म जुद्ध मंडियं ॥

छं० ॥ ७२५ ॥

भाई का मरण जानकर आल्हा का पसर करना ।

दूहा ॥ उद्दिल कामि सु आइये । दई षवर प्रतिहार ॥
अव सुकाज परिमाल कौ । सव तेरे सिर भार ॥

छं० ॥ ७२६ ॥

भुजंगी ॥ पर्यौ उद्दिलं षेत सौ आल्ह जान्यौ । कियौ क्रोध रंनं सरंन सुठान्यौ ॥

लियौ नीर हथ्थं बुल्यौ वीर बानी। करी पैज मन सें करी अंत जानी॥
छं० ॥ ७२७ ॥

धरैं ईस मुंडं गलैं आजु मेरो। उधारौं अबैं नीन चंदेल तेरो॥
इसे बोल आल्हन लवकौं सुनाये। धरे स्वामि धर सें समर मध्य आये॥
छं० ॥ ७२८ ॥

चलाये दुहौ वीर बाँधै गरिट्टं। चलाए चमू के बली बाँधि थट्टं॥
करैं षंड षंडं भसुंडैं निनारैं। पिले वीर जोधा करी कुंभ कारैं॥
छं० ॥ ७२९ ॥

लस्सकैं भसुंडैं नि टूटै बरच्छी। लगै उंकवारं परैं वरत रच्छी॥
सरद्दं घटा जेमि गाजंत गाजं। बली बाहु तोरं सुवौ रंसमाजं॥
छं० ॥ ७३० ॥

घटा सेन बंधी दुहौं वीर धाये। मनों पुब्ब पच्छाह घन उमँडि आये॥
दसंकै लगैं सींगि लग्गैव मोरा। बरं फूटि सन्नाह फूटंत घोरा॥
छं० ॥ ७३१ ॥

मिले छूर सूरं सु पूरैं अपारैं। गहैं सूड़ि मत्ती सुदंती चिकारैं॥
उतै कन्ह चहुवान कैमास धायौ। पचारैं करंतं अपारै मिलायौ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

कहू की भुजा तोरि जोरे उपाटैं। किते एक जोधानि के सीस काटे॥
किते डोल गहि पील नाषंत धरनी। तरफ्फैं करैं नीर ज्यों मच्छ करनी॥
छं० ॥ ७३३ ॥

कहूं हेमरं तानि गहि तानि बाहैं। कहूं पाप प्यादे गहैं धरनि साहैं॥
कहूं सांगि बाहैं कहू कूदि दारैं। कहू बान छाडैं सुथाटं सुमारैं॥
छं० ॥ ७३४ ॥

कहूं सीस गुर्ज्ज कियौ पानि बाहैं। सिरं चून करते विषून दुगाहैं॥
कहूं काट तैं सीस रीसं अमोरं। कहूं वर बली वीर बाहंत जोरं॥
छं० ॥ ७३५ ॥

कहूं सं करं सार बाहै अमानौ। मनों कीन मतवार सब्बै समानौ
कहू कंध पै बंध नावंत फरसी। कहूं जम्मराजं सबै सैन गरसी॥
छं० ॥ ७३६ ॥

कहूं अंकुस सारि कें पेषि लेते। कहूं अरगला तोरि सिर साहि देते
कहूं बीर बाहैं भसुंडी निकारी। कहूं कंपिनी हूल हंकं अकारी॥
छं०॥ ७३७॥

कहूं सांगि उसंगी बाहैं अमोरं। कहूं सांगि सैं चीलगावंत जोरं॥
किधौं बीर किरवोन कर पानि बाहैं। परे सुंड धरनी सुरुंड नचाहैं॥
छं०॥ ७३८॥

कटारी कियं अंग उर जात नामी। पुखे द्वार मानौ अटारी सुवानी॥
कहूं पंजरं पंजरं मार फारैं। कहूं राजकं वारि छीकं सुधारैं॥
छं०॥ ७३९॥

इसौं भांति कैमास कन्ह चलायौ। घनं सैन चंदेल धरनी सिलायौ॥
भगी सैन देषी चषं आलह सोई। भए आप आगैं रहे पीठि लोई॥
छं०॥ ७४०॥

दूहा॥ भगी सैन आल्हन लषी। सामंत तेज अथाह॥
राखि सरन सैना सबैं। भयो अग्र नरनाह॥
छं०॥ ७४१॥

आल्हा का कन्ह के मुकाबले में आकर उससे उत्कर्ष वचन कहना।

चौपाई॥ आल्हन ए सेना अप सूरं। वचन कन्ह सौं बोलि करूरं॥
सुनि चहुवान अपुन जंग कीजै। सब सेनं कौं दुःप न दीजै॥
छं०॥ ७४२॥

आल्हा का निद्रास्त्र प्रयोग करके सब चाहुआन सेना को मूर्छित कर देना।

आल्हन सक्ति कौ मंच उपायौ। सो अरजुंन कौ ईस बतायौ॥
निद्रा अस्त्र प्रयोग सु कीनौ। औंघत सांवत सूर नवीनौ॥
छं०॥ ७४३॥

पद्धरी॥ उच्चरै आल्ह बानी विराट। सुनियौ सुकन्ह कयमास थाट॥
सब सैन काज दुष देव काय। कीजिये जुद्ध मो संग चाय॥
छं०॥ ७४४॥

जंपियौ सुमंत तारा सुभाय । कीनौ सु ध्यान उर मध्य लाय ॥
हूंकार कियौ देवी वसिष्ट । किलकार कीन्ह हलकार द्रष्ट ॥
छं० ॥ ७४५ ॥

निद्रा प्रयोग कीनौ सुवीर । धारंत सरव सामंत धीर ॥
कैमास कान्ह पुंडीर चंद । पज्जौन जैत सामंत इंद ॥
छं० ॥ ७४६ ॥

तौंवर पहार अरु जैत सोइ । भौंहा चँदेल नरस्यंघ लोइ ॥
परिहार पीप पंवार नन्ह । धावर सुधीर जयमाल पन्ह ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

षडरवंड न्विवान सामंत सार । पीची सुगौड षेता पँगार ॥
सामंत इत्त क्रोधंत ताह । वजरंग वीर तजि जंग राह ॥
छं० ॥ ७४८ ॥

औधंत औध चष नींद लाइ । छंडिव सु द्वंद सामंत भाइ ॥
दौरे सु जोध चंदेल सैन । बलवंतबीर निरमोह तैन ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कित्तेक सीस टूटंत सार । कित्तेक अंग लै होत फार ॥
केतेक चरन टूटंत जंघ । केतेक हथ्थ तरफरत रंघ ॥
छं० ॥ ७५० ॥

केतेक सूर रन कढि हुलास । केतेक गये चहुआन पास ॥
नरनाह कन्ह कैमास सोय । छंड्यौ सुजंग उनमत्त होय ॥
छं० ॥ ७५१ ॥

मारंत आल्ह सजि सैन सूर । करिये नरेस ऊपर करूर ॥
अचिरज्ज पाप प्रिथीराज साव । वरदाय चंद बोल्यौ सिताव ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कीन्हौ सुमत्त आल्हन अपार । सब छंडि जुद्ध सोवत सुछार ॥
उच्चरै चंद सुनियो नरेस । कीनौ प्रयोग आल्हन सुवेस ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

तारा सुअस्त्र कीनौ उपाय । दीनौ सुमंच संकर सहाय ॥
पारथ्थ कीन कौरव समथ्थ । सो कियौ अब्ब तुम पर प्रसिद्ध ॥
छं० ॥ ७५४ ॥

अवतार सल्ल को भयो आय । दीनौ सुमंच गोरष्य राय ॥
छं० ॥ ७५५॥

कवि चन्द का आल्हा की कथा वर्णन करना, उसका कहना कि आल्हा सल्ल का अवतार है, वह गोरष से मिला था और उनकी सेवा करके उसने वरदान पाया था ।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि राज । आल्ह अवतार सल्ल भय ॥
गय सिकार इक वार । राति उद्यान भूलि रय ॥
गिरिवर ऊपर सिखर । तहां गोरख रिषि बैठिव ॥
भूलि गयौ पा धरौ । फिरत वन सिद्ध सुदिट्ठव ॥
लगिव पाय जसराज नंद । हथ्थ जोरि विनती कियव ॥
मोहि संग लेहु उपदेस करि । तजौं भवन यह उर धरिव ॥
छं० ॥ ७५६ ॥

आल्ह सीस हथ मेलि । कहिय गोरष सुप बानिय ॥
रहौ वरस लगि द्वार । देहु दरसन यह मानिय ॥
करै वनाफर सेव । रैन दिन एक चित्त करि ॥
भरत मोद मन मोह । कोह नहि होइ लेस भरि ॥
एकलौ होय करि वंदगीय । अंतर गत सवहीं लह्यव ॥
वाईस पद्य दिष्यौनि रिष । इक्क दिवस राजी भयव ॥
छं० ॥ ७५७ ॥

चौपाई ॥ तब गोरिष मुष बोलिय बानिय । आल्हा मांगि कछू मन मानिय ॥
वरस एक लग साधव मो कहुं । जो मांगौ सो समपौं ता कहुं ॥
छं० ॥ ७५८ ॥

गोरख का आल्हा प्रति वरदान ।

दूहा ॥ असच सस्च सिषए सवै । कीनी अमर सुदेह ॥
जदिल लग ग्रह में रहै । पाछें जोग सनेह ॥
छं० ॥ ७५९ ॥

चंद का पृथ्वीराज से कहना कि चामंडराय को परमाल को पकड़ने के लिये कालिंजर को भेजिये और अत्ताताई की आल्ह की बरली कीजिये ।

चावंड को कीजे विदा । गहि ल्यावै परिमाल ॥
आताताई अग्र करि । कीजै जुद्ध विसाल ॥

छं० ॥ ७६० ॥

राजा का चंद की कही करना ।

चावंड कूं जु विदा किये । कैद करन चंदेल ॥
आताताई अग्र करि । कियौ जुद्ध कौ षेल ॥

छं० ॥ ७६१ ॥

अत्ताताई और आल्हा का युद्ध वर्णन ।

त्रिभंगी ॥ करि कोप तबै पृथिराज मनं । अतताईय अग्र किये सजनं ॥
सुष मंच उचारिय आप नृपं । अरि को उपजावन देह दिपं ॥

छं० ॥ ७६२ ॥

गिरजा हरि संकर ध्यान कियं । अतताई नरेसर अग्र दियं ॥
महा कालिय ध्यान धर्यौ जबही । अतताईय सिंधि करी तबही ॥

छं० ॥ ७६३ ॥

वरवीर अराधन चंद कियं । वर बम्हन वेहल कारि दियं ॥
विकरे सब वीर चले रन में । सुष मंच उचारत ही पल में ॥

छं० ॥ ७६४ ॥

किलकारिय कालिका आवत की । सब नींद गई उडि सावंत की ॥
कयमास रु कन्ह गजे जबही । सब सांवत जोर बल्यो तबही ॥

छं० ॥ ७६५ ॥

विय षंड विहंड गयंद करै । अल्ह नानन धावन सौं जकरै ॥
नंद वानिय केसव आय गये । रन मध्य कयमास उठाय लये ॥

छं० ॥ ७६६ ॥

जितने अतिताईय मेल कियं । वर के सब कें सु चिल्हल दियं ॥

लटक्यौ तन कैलव भूमि पर्यौ । बलिराज चँदेल सौ आनि अर्यो॥
छं० ॥ ७६७ ॥

कैमास और जगनक का युद्ध और जगनक का मारा जाना ।

भर भाजत पील के दंत काढै । गहलौत सुगोयंद राज चढै ॥
गजराज पर्यौ धरनी थल में । जगनक्क रुपे लायव बल में ॥
छं० ॥ ७६८ ॥

भ्रम्यौ नरनाह धरन्नि पर्यौ । तिह ऊपर दाहिम आनि अर्यौ ॥
कैमास लगाइय तेग तनं । भ्रमयौ कविराज समान रनं ॥
छं० ॥ ७६९ ॥

कविराज सु सांगि लई कर में । कयमास सुडार दयौ धर में ॥
परियौ धर दाहिम जैत सुनी । सनमुष्य चलाइ कै तेग हनी ॥
छं० ॥ ७७० ॥

परियौ कविराज धरंनि थलं । जिन रुंड उठ्यौ दोय देप दलं ॥
धरनी धर दौरत सीस विना । किरवान वहै रिस धारि मना ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

वहु साँवत मूरछ पीड. मही । रनकोर विजै कविराज लई ॥
विन सीस जगनंक पील हन्यौ । भट सूर महा चहुवान गिन्यौ ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ जगनक पर्यौ सुसीस धर । उठ्यौ रुंड कर रोस ॥
पील हन्यौ देष्यो न पति । कर किरवानह जोस ॥
छं० ॥ ७७३ ॥

जगनक का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ रुपि जगनक रन माहि । हथ्थ वाहै वर हथ्थिय ॥
कियौ कन्ह मूरछाह । वियौ कायमास समथ्थिय ॥
हनियौ सैन हजार । रुंड नाच्यौ विन सीसह ॥
मानि जोर पृथिराज । पील मार्यौ करि रीसह ॥
कीनौ कहाव रन साझ कढ़ि । लोह लहरि खँड मार करि ॥

जंपी सुचंद बानी बरनि । भाट टाट कीनौ कहर ॥
छं० ॥ ७७४ ॥

अत्ताताई और आल्हा का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ आताताई आल्ह पर । हंकि चल्यौ बलवान ॥
बतैं बनाफर आय कें । झिल्ल्यौ वीच झिलान ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

रसावला ॥ वीर जागे बलं । पील पागे हलं ॥
कौन ताछे कलं । होय काछे हलं ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

कौन जोरे कलं । सीस छेदे छलं ॥
व्याल रचं बलं । चीर नंचे नलं ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

डील बिरचे बलं । हंक सारे हलं ॥
ताकि सीसं करं । बिप्फुरो संमरं ॥
छं० ॥ ७७८ ॥

धाक होये धरं । नेह न्यारे धरं ॥
घाव करते घनं । जाय जुरते जनं ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

दाय देते दयं । तलप करते वयं ॥
घाव करते घटं । उल्लघीते लटं ॥
छं० ॥ ७८० ॥

चोट करते चटं । पग्ग पाटे पगं ॥
मार मारं रटं । सार सुद्दं सटं ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

सार झारं रटं । काट करते कटं ॥
झारि श्रोनं मथं । भान पंच्यौ रथं ॥
छं० ॥ ७८२ ॥

चाव बड्ढे हयं । लेह लथ्थं वथं ॥
जंगरा रंगरं । भाम भंडे भरं ॥ छं० ॥ ७८३ ॥

अंग भारी सच्यौ । वीर नादं नच्यौ ॥
भोमि लोहं मच्यौ । ईस नंदी सच्यौ ॥

छं० ॥ ७८४ ॥

फाग पग्गं षिल्यौ । भूमि अंगं मिल्यौ ॥
सत्तवारं जिह्नं । घाय घूमे दुह्नं ॥

छं० ॥ ७८५ ॥

वीर वाहै अरैं । धुक्कि धरनी गिरैं ॥
भीम की चक्कही । पाव साचो वही ॥

छं० ॥ ७८६ ॥

देवं देते दुह्नं । पाई माचे तिह्नं ॥
आल्ह संग्या गई । मार भारी भई ॥

छं० ॥ ७८७ ॥

आल्हा का मूर्छित होजाना ।

दूहा ॥ भए मूरछा आल्ह रन । आताताई इंद ॥
ता समये प्रिथीराज पुनि । वानी बुल्यौ चंद ॥

छं० ॥ ७८८ ॥

कविचंद का कहना कि आल्हा की मूरछा छूटने के पहले ब्रह्माजीत को मारलो ।

चौपाई ॥ आल्हा गिरे मुरछा पाई । दोउ वीर गिरे धर आई ॥
ब्रह्मादिति कौ बेगे मारौ । नातर आल्ह उठौ रन हारौ ॥

छं० ॥ ७८९ ॥

दूहा ॥ ब्रह्माजित सौं जंग करि । संभरि राव सम्हारि ॥
जब जगिहै आल्हन सुभट । तब हारोगे रारि ॥

छं० ॥ ७९० ॥

पृथ्वीराज का हाथी बढाकर कुंवर ब्रह्माजीत पर वाण चलाना ।

कवित्त ॥ हंकि पील प्रथिराज । चल्यौ चंदेल सनम्मुष ॥
इष्ट मंच उचारि । वीरवर धारि जंचरुष ॥

नरपति आप हुँकारि । वान संधान पान किय ॥
षेंचि राज कोदंड । कान लगि वान पिड दिय ॥
भेदंत हीय छेदंत तन । फुटि सनाह हय धरनि लिय ॥
सायक्क वाहि संभरि धनिय । षग्ग षोलि ढीलनि पिलिय ॥
छं० ॥ ७६१ ॥

दूहा ॥ तीर लग्यौ चंदेल उर । फूटि सनाह प्रवीन ॥
हय पाषर वेधे दुहों । गगन सरत वे कीन ॥
छं० ॥ ७६२ ॥

तीर लगतेही ब्रह्माजीत का पृथ्वीराज पर सांग चलाना ।

कवित्त ॥ लग्यौ तीर चंदेल । धर्‌यौ प्रिथिराज सनम्मुष ॥
कहि वायक हंकारि । वीर सहाय सहाव दुष ॥
आव आव प्रिथिराज । चाव षग्गनि सौं षेलव ॥
करौ जुड विसुद्ध । जुद्ध सामंतनि ठेलव ॥
किरवान कुँवर धरि कर पकर । प्रिथियराज पर चल्लियव ॥
हंकंत वीर चमलाय यह । लहरि लहरि भर मिल्लियव ॥
छं० ॥ ७६३ ॥

पृथ्वीराज और ब्रह्माजीत का युद्ध।ब्रह्माजीत का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ चलायौ चंदेल मुष चाहुवानं । पिथा वान अगं उमंग उठानं ॥
लई सांगि गहियं हनी राजहीकं। भाई पार हीकं सुअंगं सुपीकं ॥
छं० ॥ ७६४ ॥

निदे कंगलं देह पूनी सलाकं । मनो नट्ट वानट्ट षेले कलाकं ॥
घुमायौ वियं सांगि लगि चाहवानं । करी मूठराजं जर्‌यौ पूरवानं ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

लग्यौ वान धायौ ब्रह्मादिति सूरौ। हन्यौ राज किरवान मथ्थं करूरौ॥
लष्यौ चंद वरदाय नैनं सहूतैं। लग्यौ हीक चंदेल की पार हूतैं ॥
छं० ॥ ७६६ ॥

कियौ मंच सज्जीवनी भट्टराजं। तवै वीर चहुवान चल्यौ समाजं ॥
लियौ अरधचंद्रं चितौ वान हथ्थं।हन्यौ तीन चहुवान कै आय मथ्थं॥

छं० ॥ ७६७ ॥

पर्‌यौ सील धरनी कुमारं नवीनौ। लियौ ईस धायं वरंसेल कीनौ॥
भगी फौज पाखी चहुवानं जीतौ। हतौ सोरहा जंग आल्हन चीतौ॥

छं० ॥ ७६८ ॥

आल्हा का अत्यंत कुपित होकर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और मंत्र अस्त्र प्रयोग करना पर कवि चंद का उन्हें काट देना।

भयो चेत आल्हा इतें अत्त ताई। लियौ षग्ग हथ्थं मिले लोह आई॥
हन्यौ अन्य वारे करे दोय अंगं। उसट्टै अछुट्टै नहो जोध जंगं॥

छं० ॥ ७६६ ॥

करी पील आल्हं चल्यौ राजमुष्षं। धरै स्वामि धर्मं उरं सूर सुष्षं॥
चल्यौ सूर वानी प्रिथीराज रूपं। हरीस्यंघ कनकेस पाल्हन भूपं॥

छं० ॥ ८०० ॥

वलीराम परिहार अचलेस भट्टी। निडुरराय भौहां हमीरं सुरट्टी॥
गम्हीरं प्रसंगं सुजादौ जवानं। तहां वग्गरी देव षेला सयानं॥

छं० ॥ ८०१ ॥

तहां जन धावन्नं डरौरे जवानं। तहां हाहुली राव संड्‌यौ उठानं॥
तहां चालुके चेति सारंग धायौ। इतै सेखि सामंत आल्हन चलायौ॥

छं० ॥ ८०२ ॥

परे मूरछा जोग कयमास चंदं। वलीराय पज्जौन वाहं सु दंदं॥
जहां निड्डुरं राय तोंवर पहारं। पर्‌यौ पील पीपा वर स्यंघ भारं॥

छं० ॥ ८०३ ॥

इतें सूर सूते अचेतं उठानं। उतै संज्जम राय गोला कुटानं॥
विय आय सामंत आल्हन संकं। पचारैं विय नंसवै उच्च कुक्कं॥

छं० ॥ ८०४ ॥

लषे सावँतं आल्ह वानं वरंसे। महावीर जोधान के प्रान ग्रंसे॥
कियौ गोरिषं ध्यान विघन पहारी। प्रयोगं गिरे सरव सावंत भारी॥

छं० ॥ ८०५ ॥

गुरुराज वरदाय आल्हन रायौ । लगाए सरं और हस्ती फिरायौ ॥
बली राज विद्या अनेकं उपाई । गुरू चंद आगैं न जान्न पाई ॥
छं० ॥ ८०६ ॥

भई इक्क बानी सुआनंद आई । अहो आल्ह गुरु भट्ट जीते न जाई ॥
छं० ॥ ८०७ ॥

चौपाई ॥ आल्ह मंच करिवान सँजूते । लगि लगि उर सामँत सब सूते ॥
भए मूरछा सब बरदाई । गोरिष की विद्या फैलाई ॥
छं० ॥ ८०८ ॥

चंद राम गुर आयस पूते । रुकै आल्ह सन्हर मंह तेते ॥
दाव अनेक करि हरि थक्के । अंतरीछ गोरिष हैं वक्कै ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

गोरखनाथ का संमुख आकर आल्हा को अपने साथ लिवा ले जाना ।

बोले गोरिष सुन रे भाई । बाल्हन भाट न जीते जाई ॥
संमर छोडि जोग पथ लीजै । काया काजै अमर सुकीजै ॥
छं० ॥ ८१० ॥

फिरे आल्ह सम्मर तजि सूर । गोरिष नैं मत दीनै पूर ॥
देह अमर करि बन कौ धाये । छाड्यौ भोग जोग मन लाये ॥
छं० ॥ ८११ ॥

दूहा ॥ आल्ह फिरे तजि समर को । छाडि भोग को वास ॥
गोरिष संग चलिक्कैं गये । धीर निरंजन आस ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

पृथ्वीराज के मूर्छित होने पर गिद्धिनी का उसकी आँख निकालने लगना और संजम राय का उसे अपना मांस देकर राजा को बचाना ।

कवित्त ॥ लोह लागि चहुवान । परे मूरछा है धरतिय ॥
उड, गीधनि वैठि कै । चुंच वाहैति विरत्तिय ॥

देष्यौ संजम राय । नृपति दृग दाढति पंछिन ॥
अपनैं तन कौ मांस । काटि भषु दियौ ततच्छिन ॥
अपनैं सु नयन देष्यौ नृपति । अंत समैं ध्रम मल्लियव ॥
आयो बिवान वैकुंठ के । देह सहत धरि चल्लियव ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

संजमराय का प्राणान्त।

दूहा ॥ गीधनि कौं पलभषु दियौ । नृप कौ नैन बचाय ॥
देह हँसत वैकुंठ कौं । पहुंच्यो संजम राय ॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चावंडराय का परिमाल को कालिंजर से पकड़ कर ले आना ॥

कवित्त ॥ चावँड राय चलाय । जाय कालींजर वैठिव ॥
दरवाजे करि वंधनारि । पौरनि सध वंधिव ॥
पौंछ लागि दाहिमा । जाय चंदेल हकारिव ॥
आगें आये सूर । मारि कीने वट धारिव ॥
पकरियौ हथ्थ ढिल्ली द्रवनि । हय पैं डारि सु चल्लियौ ॥
तीसरैं दिवस मध्यान दिन । चाहुवान सों मिल्लयौ ॥
छं० ॥ ८१५ ॥

चामंड का कालिंजर के किले को लूटकर वहां चौहान के नाम का निशान रोप देना।

पद्धरी ॥ चावंड जीति परिमाल ल्याय। परिहार सथ्थ सवही पिपाय ॥
भोपत्ति पकरि पग पटकि भूमि। लीनौ सुनेज झंडा सुझूमि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

लीनौ सुहथ्थ चंदेल धाय। तीसरैं दिवस रन मध्य आय ॥
दाहिमा लागि चहुवान पाय। दीनौं सु पकरि चंदेल आय ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

हाथी सुतीस गाजंत मद्द। घोरे हजार इकतीस सद्द ॥
पांच सौ ऊंट रोकंत दाम । पच्चास लाष लाये सुताम ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

मानिक्क हेम पन्ना प्रवाल । हीरा अनेक अम्मोल लाज ॥
सत कोटि द्रव्य कीनौं सुलार । दाहिमा ल्याय सब जीति सार ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

चहुवान काज कीनी सलास । समप्पियौ आय चंदेल ठाम ॥
गुरराज डंड चामुंड आय । उच्चाय नृपति पाटे बंधाय ॥
छं० ॥ ८२० ॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाकर घायल सामंतों को उठवाना ।

चहुवान हुकम कीनौ सुफेरि । ढुंढौ सम्भर सामंत हेरि ॥
कयमास कन्ह पज्जौन जैत । नरसंघ वीर जामिनि सलेत ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

तौंवर पहार पुंडीर चंद । धावर सुधीर वह परे दंद ॥
षेता षंगार हाड़ा हमीर । हाहुली राय धरि परिग वीर ॥
छं० ॥ ८२२ ॥

सब सुभट सूर रन पर अचेत । भयौ विषम जुद्ध रचि श्रौन षेत ॥
वरदाय चंद गुरु राम देव । पढि मंच सजीवन सरब भेव ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

जग्गे सु सरब सामंत सूर । दल मलि असंषि झलहलत नूर ॥
करि कूंच नृपति दिल्ली दिसान । पज्जौन बोलि हज्जूर आनि ॥
छं० ॥ ८२४ ॥

तुम रहौ महोबे सुभट थान । धर सौंपि भार हय गय प्रमान ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को महोबे का थानापति नियत करके दिल्ली को आना ।

दूहा ॥ दियौ भार पज्जौन भुज । राषि महोबै थान ॥
डंड छंडि परिमाल कौ । कीयौ नृपत्ति पयान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥

चाहुवान दिल्ली नगर । कीनौ नृपति प्रवेस ॥

घर घर मंगल हेल हुव । आयौ जीति नरेस ॥
छं० ॥ ८२७ ॥

पृथ्वीराज का संजम राय के पुत्र को आधी गद्दी का आसन और आधे राज का पट्टा देना ॥

संजम राय कुंवर कौ । वोलि हजूर नरेस ॥
हय गय मनि मानिक वकसि । अध आसन अध देस ॥
छं० ॥ ८२८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथिराज रासके महोवा को समयौ संपूर्णम् ॥



पृथ्वीराज रासो।

छठां भाग।

अथ बान बेध प्रस्ताव लिष्यते।

[सड़सठवां समय।]

देवी जालपा के मन्दिर के कपाट खुलने पर कविचन्द्र का दिल्ली को जाना।

दूहा ॥ कहै चंद बलिभद्र सम। अहो वीर जटजात ॥
इह विभ्रम सुभ्रम सुमन। वज्रपाट विघघाट ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ वज्रपाट विघघाट। पाठ उघ्घारिग सबद सुनि ॥
घंट घोर संक्रमन। भइय आकास सवन[1] धुनि ॥
तष्पि त्रिविध गुन तीन। छीन जोगिनि पुर थानह ॥
गहन चंद विष अंध। सुनिय संचरि किलकानह ॥
परिनाम विरत उर तन्न मन। आस वास आसन तज्यौ ॥
रस राज सपिम्मह मित्त तन। अम्म छांडि भ्रम्मह भज्यौ। छं० ॥ २ ॥

मोतीदाम ॥ चल्यौ रह ईस अलक्कह थान। छहक्किय अम्मर घट्ट करान ॥
कम्यौ रह सथ्थ बलीभद्र बीर। प्रसंसिय चंदह चित्त सुधीर ॥ छं० ॥ ३ ॥

चल्यौ रह जोगिनि थान सुभट्ट। परी हिय गंठि सनों परि पट्ट ॥
सुरत्तह चित्त निरंजन अप्प। धर्‌यौ हिय ध्यान अजप्पह जप्प ॥ छं० ॥ ४ ॥

चल्यौ रह अप्पन मग्गह सुतंन। रच्यौ निरकारवि लीयन मंन ॥
धर्‌यौ मन अप्पन ह्वनि सुभाइ। सुषंपति धाम धर्‌यौ निज साय ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) ए० कृ० को०—सबद।

धरी रह मग्ग अमग्ग सुथान । न मंनहि उंचरु नीच नियान ॥
न सुझ्झहि छुद्ध पिपास सुमंन । तरस्सहि सीतरु ताप सुतंन ॥
छं० ॥ ६ ॥
अपुच्छहि कोय न उतर देय । उलट्टिय जीह सुधारस खेइ ॥
न लष्षहि ग्राम न थान उद्यान । तरस्सहि ताप न सुष्प नमान[1] ॥
छं० ॥ ७ ॥
न बूझहि ताप न तम्म सरम्म । निजाभन वासुर तास विरम्म ॥
भयौ कवि ग्यान ग्रथस्थित रूप । न मंनहि अंतर अम्मरु भूप ॥
छं० ॥ ८ ॥
नहीं सुष नंषत ताप असीस । चरन्न उलास सुमंनन दीस ॥
सजै सुविराम भिरामइ सुष्प । चले चकि दिल्लिय रोह सरुष्प ॥
छं० ॥ ९ ॥
चल्यौ निज मग्ग सुमन्न उल्हास । सँपत्त सुदिल्लिय सारध मास ॥
छं० ॥ १० ॥
दूहा । कवि आयौ दिल्ली पुरह । देष्यौ नयर विरूप ॥
बिन आश्रन नर नारि सब । बिना तेज ग्रह भूप ॥छं०॥ ११ ॥

श्रीहीन दिल्ली नगर की दुर्दशा देख कवि का हार्दिक विचार वर्णन ।

ग्रेह गयौ कविचंद तब । मन गज्जनिय दिसान ॥
पुच कलच मिल्लंत कवि । सित जट्टं हित जान ॥ छं० ॥ १२ ॥
बर पुरन्न लोइय सघन । कन दिट्ठ नहि राज ॥
मन माया छंडै ग्रहौं । प्रान प्रमुक्कन काज ॥ छं० ॥ १३ ॥
प्रथम वैर भंजन मनह । दुति सांई उद्धार ॥
लोक जोग कित्तिय कहैं । सुकीय चंद सुद्धार ॥ छं० ॥ १४ ॥
कवित्त ॥ इक्कि चित्त कवि अप्प । पेम राजन पर अत्यौ ॥
नयन मंडि सब निरषि । दिष्षि सब लोक विरत्यौ ॥
लषि आयौ कविचंद । नयर नर नारि सबनि मिलि ॥

(१) ए० कृ० को०—समान ।

मनहु मधुर मधु माल। अहो अचिज्ज चित्त वलि ॥
पुच्छै न कोय उत्तर दियै। नयन झरै गिर विस्फुरन ॥
उच्चै न वच्च आपूर कंठ। स्वेदस कंपै तास मन ॥

छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ निरषे कवि सव सोक सुनि। दुरज काल गति मान ॥
राम प्रेम अति चास उर। चल्यौ अप्प गृह गाम ॥

छं० ॥ १६ ॥

कवि की स्त्री का सब हाल कहना और राजा का बंधन सुन कर कवि का दुखित होना।

इम कवि आयौ जात करि। गृह सुपिष्षि द्रिग काज ॥
पुछ्यौ सुत्त सुतीय तिहि। कहा करै प्रथिराज ॥

छं० ॥ १७ ॥

तव सुचिया उत्तर दियौ। बोलि सुहावने बैन ॥
गोरी दल नृप संग्रह्यौ। कियौ साह बिन नैन ॥ छं० ॥ १८ ॥
सुनत श्रवन धरनिय परिग। हरि हरि हरि मुष जंपि ॥
उठ्यौ मनह विस्रास करि। भयौ विभ्रिन[1] मन कंपि ॥

छं० ॥ १९ ॥

कवि का राजा के उद्धार का निश्चय विचार करके योग धारण करना।

मन राजन उद्धार मति। मान काल क्षत नद्धि ॥
भसम अंग औ धूल किय। जोग रूप जट बंधि ॥

छं० ॥ २० ॥

पुचि पुच पारस फिरिग। तव तरसे कवि तंपि ॥
छंडि वसन दिषि रूप दुर। मन विरत्त रत अंपि ॥

चंद वाक्य ॥ छं० ॥ २१ ॥

वृथा गवह संसार सुष। गवह सत्ति अविनास ॥
आषेपित आतम सरिस। करौं गवह गुर भास ॥ छं० ॥ २२ ॥

(१) ए० कृ० को०—विभ्रम।

कवि का भवानी की स्तुति करके निर्विघ्न ग्रंथ की पूर्ति के लिये विनय करना।

भुजंगी॥*ऊँकारं नमौ कल्यानी सु कमला। कला रूपिनी काम दाई सु विमला॥
कुमारी करुना कमंक्षा कराली। जया विज्जया भद्र काली कँकाली॥
छं० ॥ २३ ॥

शिवा शंकरी विष्णु वीमोहनीयं। वराही चमुंडा दुर्गा जोगिनीयं॥
महालच्छमी मंगला रत्त अंबी। महामाइ पारवत्ती ज्वालमुखी॥
छं० ॥ २४ ॥

तुहीं गंग गोदावरी गोमतीयं। तुहीं नर्वदा जमना सरस्वतीयं॥
तुहीं द्वारिका मथुरा रूप कासी। तुहीं तीरथं अव्व मद्धे निवासी॥
छं० ॥ २५ ॥

तुहीं कोटि सूरिज्ज जोइं प्रकासा। तुहीं चंद कोटिक्कआनन्न भासा॥
तुहीं कोटि सामुद्र हीयै गंभीरा। तुहीं कोटि म्राकम्म जीयै समीरा॥
छं० ॥ २६ ॥

तुहीं कोटि आकास विस्तार धारा। तुहीं कोटि सुम्मेर छाया अपारा।
तुहीं कोटि दावानलं ज्वालमाला। तुहीं कोटि भैमीत जंमं कराला॥
छं० ॥ २७ ॥

तुहीं कोटि सिंगार लावन्य कारी। तुहीं राधिका रूप रीझे मुरारी॥
तुहीं विश्वकर्ता तुहीं विश्वहर्ता। तुहीं थावरं जंगमं में प्रवर्ता॥
छं० ॥ २८ ॥

तुहीं पातिकं नासिनी नारसिंघी। तुहीं जग्गमाता अनेकं सुरंगी॥
तुहीं साकिनी डाकिनी रूप धारे। तुहीं आप लग्गे तुहीं यै उवारे॥
छं० ॥ २९ ॥

तुहीं तौहि जाने सुतेरे किरत्तं। कहां लग्गि चंदं लषे तो चरित्तं॥
अज्जमेर थानं सिकारं भुलायो। तहां बीर वावन्न सिद्ध मिलायो॥
छं० ॥ ३० ॥

*इस छन्द के कई चरण भुजंगी छन्द के प्रस्तार के विरुद्ध पड़ते हैं परन्तु पाठ चारों प्रतियों में समान है।

पहिल्लै उमा कासती भट्ट किन्नौ । वलं सेवरा मंच छंडाय दिन्नौ ॥
वहै वाद आयौ सुदुग्गा केदारं । तहां अंबिका अंब रष्यौ अपारं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
बिना पून पछैं किए एह बालं गयौ रुद्धि सा द्रोह मक्क्रक्षि दिवालं।
पठायौ नृपं कंगुरानी पुकारं । उठी बाहरं ठाहरं फेरि धारं ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सकत्ती हरी तैं सकत्ती सुभाटं । ग्रह्यौ मेछ सोईन पुल्लै कपाटं ॥
गयौ गज्जनैं पाति की पत्ति लीयैं । कलन्ना न आई पलं दुष्ट हीयैं ॥
छं० ॥ ३३ ॥
परं पत्ति कड्ढी कुपे पिष्ष अंधी । पर्‌यौ पंजरै जानि बेहाल पंषी॥
दई गत्ति राजं गती कौन जानै । कहा लेष लेष्यौ अजू चाहुआनै॥
छं० ॥ ३४ ॥
जिनै हथ्थलं सिंघ हस्ती निपातै । तिनैं घेरि मारै कुरंगी सुलातै॥
जिनै बाज सिक्कार पिल्लौ लवा कौ।तिनैं चष्ष लावै दिपावै दवा कौ॥
छं० ॥ ३५ ॥
इसी गत्ति तेरी अलष्षं बषानी।कहां लों गिनाऊँ कहौं बागवानी॥
करौ राव तैं रंक रंकं सुरावं । कहा हाथ आवै किएं ए सुभावं॥
छं० ॥ ३६ ॥
परक्कम्म छत्ते अछत्तें भए क्यों । दिल्लीपत्ति से बंधि के मां दए क्यों ॥
हुए भक्क्रक्ष वैरीन की जित्ति दिष्षौ।किना चाहियै सेवकं कौन पिष्षौ
छं० ॥ ३७ ॥
बुरे सुष्प वारें लंगूरै सुहानै । सुरं सारिषे सूर सामंत भानै ॥
करं जोरि जंपौ सुनौ श्रीभवानी। भली किन्न साहाय संसार जानी॥
छं० ॥ ३८ ॥
करौं पूरनं पुस्तकं अब्ब जौ लौं । बिघन्नं हरौ संभरी राव तौ लौं ॥
छं० ॥ ३९ ॥
दूहा । मीत करन कारज चल्यौ । जौ मात प्रसादै भोग ॥
करि रासो प्रथिराज कौ । कित्ति चलाऔं जोग ।
छं० ॥ ४० ॥

अन्न पान पोनीय सुक्कि। षुध पिपास तजि मोह ॥
देव द्रुग्ग सों चंद कवि। गय राजन वर छोह ॥

छं० ॥ ४१ ॥

कविचन्द का कोरी पोथी हाथ में लेकर भवानी का ध्यान करना।

कवित्त ॥ भट्ट ग्याति नप पिष्म। मित्त सामंत सूर सब ॥
उभय सुरिन प्रिथिराज। तेनै निवृत्त करौं अब ॥
प्रान कालपि पति काज। एक दिन एम उधारौं ॥
जीह गंठि गुन गरुअ। उभै दिन नाम उतारौं ॥
इम चिंत चिंते कविचंद उर। अप्प थान जुग्गिन गयौ ॥
आकृस्स मंच देवी सुकवि। विन अष्षर पुस्तक लयौ ॥

छं० ॥ ४२ ॥

रासो की छंद संख्या वर्णन।

ग्रहि पुस्तक कविचंद। मंच सरसै उच्चरिय ॥
सुष निवास किय जाम। ग्रन्थ सुर वर विस्तारिय ॥
लिषि पुस्तक कविचंद। सहस सत्तह नष सिष उभ ॥
सूत भयछ्यत वृत्त। सबै भूत वंस क्रम सुभ ॥
इम करिय ग्रंथ पूरन सुकवि। पढ़िय पुच हथ्थं दियन ॥
लिषि मंच पढ्य कवि जल्ह सुअ। अप्प मग्ग गज्जन लियन ॥

छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ इम चिंतिन कविचंद करि। भौमन वच क्रम एक ॥
सारद सुभ मति ध्यान धरि। वानी वचन विवेक ॥

छं० ॥ ४४ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का वर मांगना।

अरिल्ल ॥ लै पुस्तक पढ़ि मंच घनं। करि कविचंद सुवेद धुनं ॥
बहु भंति अनेक अलाप कियं। बहु जाप सु संचय होम वियं ॥

छं० ॥ ४५ ॥

दूहा ॥ बानि उमा माधुर धुनी । पढ़ि अनेक रस भंति ॥
देवि दरसि कविचंद कौं । झलहलंत दीसंत ॥ छं० ॥ ४६ ॥

सरस्वती वाक्य ॥

जाहु अचिंतिय कवि कहय । वर सुभट्ट गुन वीर ॥
जौ प्रसाद वर मांगिहै । दीय वयन सुह तीर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

कवित्त ॥ बाल समंपिय सत्ति । भट्ट लिन्नौ संपुत करि ॥
सोगुन सुह अप्पयौ । जिहि सगुन विस्तरै राज धुरि ॥
चलैं किति जग मग्ग । चंद चंदान देव वर ॥
धरन राज अप्पन्न । वास न्निम्मान अप्प कर ॥
जे देव मनत तरवारि तन । तिहि अप्पन चहुआन रिन ॥
तं तत्त वान जानै सकल । अकल किति जंपी सुमन ॥
॥ छं० ॥ ४८ ॥

रासो के रचना समय की सीमा ।

दूहा ॥ उभै मास दिन अट्ठ वर । किय रासौ चहुआन ॥
रसना भट्ट सुचंद की । बोलि उमा परमान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
सहस सत्त रूपक सरस । गुन सुंदर बहु वित्त ॥
ले पुस्तक कविचंद कौ । दिय माता बहु रित्त ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवि का अपने पुत्र जल्ह को रासो पढ़ाना और स्त्री से विदा मांगना ।

फिरिय आय जोगिनि पुरह । रासौ गुन दै पुत्त ॥
पुच्छि चीय परिवार सब । कहौ तौ साधौं सुत्ति ॥ छं० ॥ ५१ ॥
मिलन चंद चहुआन वर । पुच्छि सुचिय मत चार ॥
दंपति गंठि अछेह वंधि । अरु न कि अछिनन चार ॥ छं० ॥ ५२ ॥
वरनिय वर पुछ्यौ सुवर । मम तजि जिय तर जीय ॥
सो ग्रहि वर पावन्न करि । सो ढिल्लिय अन पीय ॥ छं० ॥ ५३ ॥

कवि का अपनी स्त्री से कहना कि संसार में एकमात्र कीर्ति ही सार है।

कविचंद वाक्य।

कवित्त ॥ न रहैं तन धन तरुनि। तरुनि किरनह उदै अस्तं ॥
चंद कला परिपष्ष। राह करि ग्रस्त विगस्तं ॥
न रहै सुर नर नाग। जोग भग्गै जुग भग्गै ॥
न रहैं बापी कूप। संत सायर गिर लग्गै ॥
जानै सुजान अष्षर अमर। विवरि विषरि पूछत रहैं ॥
भषि काल व्याल कलि काल सब। रहैं तौ गुर गल्हां रहै ॥
छं० ॥ ५४ ॥

रहैं जुगें जुग गल्ह। द्रुग्ग परहरे अष्ट गिरि ॥
दिष्टि मान विनसिहै। इंद्र तुटि राह सुसंकरि ॥
तहां छहंत जप वली। बंध नन नाटिक काष्यं ॥
माया तन' चुक्कयौ। चंपि काल पंच सु हथ्यं ॥
अब कित्ति कित्ति भाजै नहीं। गयौ प्रान सें संग्रहै ॥
दो एंस एंस संजोगि सौं। मिलन हथ्थ अग्गी दहै ॥
छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ लुभ विसाह न करौ चिय। गुर गल्हां गुन संचि ॥
जो दिष्षिय सो भज्जिहै। कखन करौ वर वंचि ॥
छं० ॥ ५६ ॥

कवि का योगी भेष धारन करना और स्त्री का पुछना कि योग की पराकाष्ठा क्या है।

द्रष्षन लैं वंदै सु कवि। तच दिषावन चीय ॥
जुग गहँनौ माया तजन। चित गज्जन दिस कीय ॥
छं० ॥ ५७ ॥

(१) ए०—तेन।

मोतीदाम ॥ अधि वर द्रप्पन तत्त प्रकार । रसी रस निघ सुविघ सुभार ॥
सयौ कलना वर बीर सुभट्ट । छिनं तत पत्त सुतत्त अघट्ट ॥
छं०॥ ५८ ॥

सुगम्भ बिना छिय बीर सुभट्ट । धर्यौ सिर केसन जट्ट सुकट्ट ॥
छिनं छिन द्रप्पन लै कर तथ्य । करै प्रतिब्यंब सुरंगिय कथ्य ॥
छं० ॥ ५९ ॥

कहंतुअ कंत तु पत्तुअ कौन । सुनंत सु सद्द रहै करि मौन ॥
कहौ तुअ जाति सुभंतिय नाम । कहौ तिहि जोति प्रगट्टय काम ॥
छं० ॥ ६० ॥

अगम्म गयान कहौ गुर गत्ति । सुषं दुष भोगिय कौ जिय पत्ति ॥
सु कौ प्रभु कौन पुरौ कह वास । कहौ अविनासिय काहि विनास ॥
छं० ॥ ६१ ॥

सु कौ सुविदायनि दायन कौन । सु कौ वर तद्व्य कौन समौन ॥
कहौ रत रत्त विरत्त प्रकार । कौ जोग तरन्न बुझै नन भार ॥
छं० ॥ ६२ ॥

कहौ कहि सग्ग पिया पिय जोति । कहौ कहि कम्म सुगत्ति सुहोति ॥
अहौ कथि कथ्थि कवी जल विंदु । सु उत्तर ताहि दियै कविचंद ॥
छं० ॥ ६३ ॥

कवि का स्त्री को योग साधना की बिधि और उस की सिद्धि संक्षेप में बतलाना ।

दोधक ॥ द्रप्पन लै प्रतिब्यंब सु सद्दय । चंद सुचंदकला प्रति बद्दय ॥
द्वादस दून तितंन तें जंनिय । पंचनि आस प्रक्रित्ति सु ठंनिय ॥
छं० ॥ ६४ ॥

ता सर एक कवल्ल प्रगासिय । देषत ताहि गयौ भ्रम नासिय ॥
नीलहि नील चरन्न सु मुत्तिय । जुत्तिय मान प्रमान सु जुत्तिय ॥
छं० ॥ ६५ ॥

तापर सद्द अनाहद होइय । ब्रह्म अनंत अनंद सु जोइय ।

रेचक कुंभक पूरक पूरय । नाभि बटै जुग वह संजूरय[1] ।
छं० ॥ ६६ ॥

उट्ठय बीर कलंकल वानिय । भैरं सुभट्ट भयानक जानिय ॥
छं०॥ ६७ ॥

अरिल्ल ॥ बेद अभट्ट सुतत्त प्रकारं । पंचय बीर प्रकित्ति सुभारं ॥
सुष प्रति तीन जयं गुनवासी । बिंदुग लद्धिय सुगति सुरासी ॥
छं० ॥ ६८ ॥

नीसल नील बरन्न सुजोती । प्रोति प्रमान प्रमान सुजोती ॥
श्रुम्भि द्रवै द्रिग अंमर भीजै । ह भृगुटी रविमंडल[2] लीजै ॥
छं० ॥ ६९ ॥

नासिक अग्र दिठै दिठ रष्षै । है उर मंझ अलष्य सुलष्षै ॥
काम बिराम पगें पग षंडय । जीरन वस्च जेम तन छंडय ॥
छं० ॥ ७० ॥

जैसौ नीर मनसा निध पायौ । तौ ब्रह्म अनंद अनंदह जायौ ॥
पंच दमै मनसा दम मारै । कुम्भ सवै सिर तै भर डारै ॥
छं० ॥ ७१ ॥

आसन इष्ट बिभूति सुदीसन । ग्यान सु ध्यान बिग्यानन सीसन ॥
श्रीमन मच्छर मारहि मारं । तौ भ्रम दाह तिरै भव सारं ॥
छं० ॥ ७२ ॥

मारुत रस भोगंतत भंती । ग्यान पग्ग बिस्तर कर दित्ती ॥
कढ्ढै संकि तजि संक न भट्टं । चलै चंद सुगती वर वट्टं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जो जग दिष्ष सु दिष्षन कव्वी । ज्यौ घटिका पट दम्भ झहि हव्वी ॥
है घट घट्ट घटं बहु जानै । पूरन ब्रह्म ब्रह्म पहिचानै ॥
छं० ॥ ७४ ॥

जोति मैं जोति सु तोहि बतायौ । सोइ चंद बिरलै किहि पायौ ॥
छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ वपु बिभूत बहु विंटयौ । जट बंधी जम जूत ॥
मन माया मुक्कवि चष्यौ । को पूजै अवधूत ॥ छं० ॥ ७६ ॥

(१) ए० कृ० को-पूरय। (२) ए० कृ० को०-लीजै।

चंदप्रिया वाक्य ॥

कवित्त ॥ सुनौ चंद पाषंड । केस लोचैं जट धारैं ॥
कीय भसम ऋतु[१] काम । अन्न तापसी विचारैं ॥
वेद कुरान पुरान । ने ब्रम्हा सुर नर ध्यानं ॥
चरम मंस रावर भगत । कव्वि सुनि सेवि सुजानं ॥
त्रिषु म सवद्द इक गहए कहि । मंत्र जंपक वेदंत पुन ॥
की धूत रत्त अनरत्त कौ । सबै तथ्य माया तपन ॥छं०॥७७॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ इन विध जोग जुगति लिपि । प्रिय बुझ्झी तन ग्यान ॥
क्रोध मोह[२] माया तजै । और विटंबन ज्ञान ॥ छं० ॥ ७८ ॥

कवि की स्त्री का शंका करना कि एक पंथ दो काज कैसे सध सकते हैं।

चंदप्रिया वाक्य ॥

चौपाई ॥ उत्तर जानि प्रिया पय लग्गी । तुम पिय नाद अनाहद जग्गी ॥
जोग[३] जुगति उद्धार न सामं । दो दो गहए सरै किम कामं ॥
छं० ॥ ७९ ॥

कविचन्द का उत्तर ।

चंद वाक्य ॥

दूहा ॥ सकल जोग सांई सुभ्रम । तप जप सांई भ्रंम ॥
मोहि सुगति सूझत मरम । सुजस कित्ति गुन क्रंम ॥छं०॥८०॥
दिवस रयन राजन सुमति । अरु गज्जन वै रोस ॥
मन वच क्रंम एकंग हीय । सामि उधारौ दोस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
[४]उभै सत्त नव रस त्रिगुन । किय पूरन गुन तत्त ॥
रासौ नाम उदद्धि श्रुति । गहौ मत्ति मैं सत्ति ॥ छं० ॥ ८२ ॥

(१) ए० कृ० को०- ऋ । [२] मो०-लोभ ।
[३) ए०-जोर । (४) मो०-उभय सत्तर नौ रस त्रिगुन ।

कविचन्द्र के पुत्रों के नाम औ भर्व श्रेष्ठ जल्ह को कवि का रासो पढ़ा कर रवाना होना।

कवित्त ॥ दहति पुच कविचंद । ह्वर सुंदर सुज्जानं ॥
घवह वसह वलिभद्र । कविय केहरि वष्यानं ॥
वीर चंद अवधूत । दसम नंदन गुनराजं ॥
अप्प अप्प क्रम जोग । वुद्धि भिन भिन करि काजं ॥
जल्हन जिहाज गुन साज कवि । चंद छंद सायर तिरन ॥
अप्यौ सुचित्त रासो सरस । चल्यौ अप्प राजन सरन ॥
छं० ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ दहति पुच कविचंद कौ । सुंदर रूप सुजान ॥
इक्क जल्लह गुन वांवरौ । गुन समंद ससि मान ॥ छं० ॥ ८४ ॥
आदि अंत लगि वृत्त मन । वृन्नि गुनी गुन राज ॥
पुस्तक जल्हन हथ्थ दै । चलि गज्जन न्रप काज ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कविचन्द्र का अपनी धुन में मस्त होकर गजनी की राह लेना।

कवित्त ॥ वपु विभूति विंटियौ । केस जस्सन विधि वंधी ॥
वहु वियोग अप जोग । चित्त जुग जुग्गए संधी ॥
छुध पिपास दम मोह । छोह विंध्यौ वर सांई ॥
पर विग्रह चिंतयौ । सुक्कि विग्रए गुरुकाई ॥
वरदाय चंद दुब्बल अवल । वपु सुपेम सुछंद धुत ॥
सुंकयौ मान पिमान वस । इह अजुत्त जो पैत जुत ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ एकाकी सह संग तजि । मिलि राजन सुत सोम ॥
[1]तपत तुंग तो व्रत्त जहि । है इह जग पग नोम ॥ छं० ॥ ८७ ॥
इह कहि कवि चल्ल्यौ भवन । गवन कियौ दिसि साहि ॥
दुसह जम्म सज्जन मिलै । धर गज्जनी सुगाह ॥ छं० ॥ ८८ ॥
सरसैं वर अरु कंठ वर । अरु सु हियै वर वीर ॥
हिंदु कहैं हम देव[2] हैं । मेछ कहैं हम पीर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए० कृ० को०—तपत तुंग जो वृत्त काहि । (२) मो०—दीन ।

चिंति ठाम प्रथिराज कौ । बालप्पन निज नेह ॥
चल्यौ भट्ट सजि जोग तन । ता न्त्रिबहन अछेह ॥ छं० ॥ ६० ॥

चल्यौ चंद बरदाय वर । तजि समुद्र वर मोह ॥
चट्ट बरन भर भट्ट कौ । दहि बिरह वर छोह ॥ छं० ॥ ६१ ॥

गहिग चंद रह गज्जनी । जट पट बंधि बिधान ॥
प्रान हरौं साधौं सुगति । जो मिलिहौं[1] चहुआन ॥ छं० ॥ ६२ ॥

गहिग चंद गज्जन सुरह । जहं सज्जन सु नरिंद ॥
कबहौ नैन निरप्पि हौं । मनो सूर अरविंद ॥ छं० ॥ ६३ ॥

जोग जानि लग्यौ सुमन । जोति साद जिय लीन ॥
अगम निरंजन आदि सुनि[2] । तिहि अचिंत चित चीन ॥छं० ॥६४॥

सूर सबर अरु कंठ वर । हिय रोहे वर वीर ॥
सब देवन में देव है । मेछ महंमद पीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

दुर्गम मार्ग की कठिनता का वर्णन और कवि का क्लान्तचित्त होना ।

पद्धरी ॥ सम चल्यौ भट्ट गज्जन सुराह । बन विषम सुषम उग्गाह गाह ॥
रह उंच नीच सम विषम थान । गह बरन सैल रन जल थलान॥
छं० ॥ ६६ ॥

द्रिग जोति लग्ग मन सब्द भीन । भुल्ल्यौ सरीर निज मग्ग चीन[3]॥
रत्तौ सुजोग मग्गह सरुव । जग मगत जोति आयास भूव ॥
छं० ॥ ६७ ॥

भिद्यौ सुप्रीति प्रथिराज अंग । निरकार जीय रत्तौ सुरंग ॥
भुल्ल्यौ सुमग्ग गज्जनह भट्ट । बन चल्यौ थान उद्यान थट्ट ॥
छं० ॥ ६८ ॥

उब्भरत इब्भ सम अब्भ नद्द । के लरत भिरत भज्जत समद्द ॥
उद्यान तज्जि संग्रहै एक । गुंजहिति बध्घ मग्गए अनेक ॥
छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए० कृ० को०—मिलि । (२) ए० कृ० को०—मेछ कहै हम पीर । (३) मो०—छीन ।

जुग देत दंति सिंघहि सुरम्भ । म्रिग बघ्घ पंषि अजगर अदम्भ ॥
सा पंच चिवद संग्रहै सास । सा वह वनंचर विषम भास ॥
छं० ॥ १०० ॥

गुंजरत द्रिय सम्मीर सद्द । निझ्झरत झरत नद रोर नद्द ॥
वन विकट रंध ज्यौ चक्र राह । सद्दहि सु ताम संमीर गाह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

उल्लुत उरग्ग धर तर सुलग्ग । सुझ्झहि न विदिसि दिसि मझ्झ मग्ग ॥
वन चल्यौ मझ्झ भट्टह भयंक । रत्तौ सुजोति सज्जे निसंक ॥
छं० ॥ १०२ ॥

निझ्झरहि झरिय झरहर कहूर। उभ्भरहि सलित सलिता सपूर ॥
कलरव करंत द्रुज नेह भास । तर विकट सघन पंषिनि हुलास ॥
छं० ॥ १०३ ॥

निसि दिवस भट्ट वन चल्यौ जाम । संभर्यो राज भौ अस्म ताम ॥
वेध्यौ सुअंग छुद्दा पियास । तर धवह देषि लग्गे अयास ॥
छं० ॥ १०४ ॥

बैठौ सुतक्कि भौ संझ स्याम । चितै सुचिंत्ति चंडी भिरास ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ षट पुरान पारसि निपुन । निगम अगम नह चंद ॥
अद्व निसा कानन कुहर । भयौ भट्ट गति मंद ॥ छं० ॥ १०६ ॥
छुध पिपास लग्गी तनह । निद्रा भै मिटि गैन ॥
नहीं कहूं चंहु दिसि सुगम । दिसि दिष्षियै जसौन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

दिवस तीन पंथह षहिग । गनी न अह निसि संझ ॥
षट दिन नयन असुझ्झ भय । थक्कि रहतौ वन मंझ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कविचन्द का भगवती का स्मरण और स्तुति करना ।

मन वच क्रम चित्तै सुचित । वरदाई वर देव ॥
तुअ कारन तारन तवन । नमो नमो सुर देव ॥ छं० ॥ १०९ ॥

भुजंगी ॥ नमोह नमोह नमोह सुचंडी । सथानं चिसंच सष्ट पंच मंडी ॥
निकारं अकारं सकारं सरूपं । सदा तत्त सौ तत्त चौवीस नूपं ॥
छं० ॥ ११० ॥
चयं मंस चेयं गुनं चेय थानं । चयं पाय वामंन चेयं किसानं ॥
कला पोड़स रूप पोड़स्स राया । दुअं चीस रूपं हलंछं[1] पराया॥
छं० ॥ १११ ॥
हचं पंच वानं दहंसं समीरं । दहं नारि दुआरि वाह समीरं ॥
ऊंकार सारं श्रींकार सज्जै । ह्रींकार हुंकारि सारूप रज्जै ॥
छं० ॥ ११२ ॥
क्लिंकार ह्रूंकार[2] कुंकार कारी । स्फ्रींकार स्फूकार श्रींकार सारी ॥
श्रींकार छूंकार सामाच माई । नमस्ते नमस्ते नमो जग्ग जाई[3] ॥
छं० ॥ ११३ ॥
जहां संगटं दुग्घटं निज्ज सेवं । नहीं मात तातं नहीं बंध देवं ॥
नहीं को सहायं जहां कौन धायं । तहां तौ स्वरूपै निजं सेव सायं ॥
छं० ॥ ११४ ॥
हरौ मुझ्झ चिंता तनं तप्पि भारी । दियौ चिंत ता सह सायं कुमारी॥
छं० ॥ ११५ ॥
दूहा ॥ सुमरि देव वरदाय बर । मझ्झि वन वीस्भ भयंक ॥
लहौ न दिस अरु विदिस निस । जग्गि नहीं मन संक ॥
छं० ॥ ११६ ॥
तिहि पिपास लग्गिय बहुल । धव ढुंढन वन जग्गि ॥
तहां सुइक्क वड़ तट निकट । कलयल सिंघ सुलग्गि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का अपनी सब विपति निवेदन करके सहायता के लिये वर मांगना ।

तिन सिंघह मझ्झह तरुनि । कह कह जंपिय संत ॥
मनहु धुंम्म मझ्झ अगनि । झलहलंत दीसंत ॥
छं० ॥ ११८ ॥

(१) ए० कृ० को०—हलवं । (२) मो०-ञ्जं । (३) ए० कृ० को०-माई ।

कवित्त ॥ देष्यि चंद मन मंद । वृषभ बल सहिय सिंघ घन[1] ॥
सिव सिवात सुभ्भयौ । बजे डक्क डकल गज्जि बन ॥
दरस बान सिंध घोर । बियै जम धाम पंच मल ॥
कुध तुंबरगि बंद्धि । बज्जि तारीक तूर रस ॥
मंचह सुजंपि बरदाय बर । चंद पट्टि जंपै रहसि ॥
सह्वेव ध्यान नर कवन ते । बर मनुच्छ उभ्भै बहसि ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दूहा ॥ तौं जानै सब देव भ्रम । नर नागिंद्र विचार ॥
ओई असुरां अपहरन । इह विरदावलि सार ॥ छं० ॥ १२० ॥
दरस देवि किय भट्ट बर । कर सिर मंडिन संत ॥
सो पसाव[2] कवि सुंदरीय । जिहि जप संग सुअंत ॥ छं० । १२१ ॥
तौ जानै सह देवपुर । षित प्रकृतीय सुतथ्य ॥
जौ हौं जंपि जानंत तौ । देवि जानयौ नथ्य ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पुच्छि मात कविचंद बर । सुह दुह कहि बर भट्ट ॥
जो जस[3] संग सुमंगी कवि । कहत काज इहि घट्ट[4] ॥ छं० ॥ १२३ ॥
तुम मनुच्छ राजन सकल । अकल अपूरब कथ्य ॥
कहौं सबैं आरथ्य कथ । जौ सुनौ छिनक रुकि रथ्य । छं० ॥ १२४ ॥

कवित्त ॥ पच्छै ही सुरतान । बिंदु दल जोर अहुट्टै ।
सुनी कहौं रबि ग्रहन । तदिन आरथ्थ सजुट्टै ॥
उभै बीह[5] बर दीह । भान अच्छै दिन चल्यौ ॥
सुनिधर राव सब्बह । बीर ब्रहमंड सुहल्यौ ॥
चहुआन सेन रावर समर । भीर भगै प्रथिराज गहि ॥
बर भट्ट रुक्कि छाहुलीय भ्रम । जालंधर बर थान रहि ॥
छं० ॥ १२५ ॥
सुनिय धुनिय बर सीस । उभय उमया पति पुच्छिय ॥
सुनिय ग्रहन विग्रहन । जुद्ध मंड्यौ मति अच्छिय ॥
भव भवस्य निम्मांन । जान मत अच्छ विचारिय ॥

(१) मो०—सम। (२) ए० कृ० को०—पसाच। (३) ए० कृ० को०—जग।
(४) ए० कृ० को०—रम घट्ट। (५) ए० कृ० को०—वाह।

नरन नाग अरु देव । सुवर अरु दुष्ट प्रकारिय ॥
सिवसिवा जित जित अदि सिवर वर । हेमदान सोभै सुलछि ॥
जौं[1] होय प्रेम तो न्हिबहै । सोय किति पावन्न अछि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

भगवती का प्रसन्न होकर कवि को अँचल का चीर देना ।

दूहा ॥ हँसि हर सिद्धय सुद्ध सुष्ष । नृप दुष दहौ भट्ट ॥
परचि चीर अंचल धजा । दिय सिर वंदन[2] पट्ट ॥छं०॥ १२७ ॥

देवी की स्तुति ।

मोतीदाम ॥ हसी हस सिद्ध तवै सुष पाय । जयज्जय सद्द कहैं वरदाय ॥
तुहीं सुभ्भ तारन सारन काम । तुहीं प्रक्रिती[3] धुर धंधर नाम ॥
छं० ॥ १२८ ॥

तुहीं ईक्क अनेक अचभम आय । तुहीं मति ग्यान तुहीं रज साय ॥
तुहीं गति काम तुहीं मुनि धाम । तुहीं धुर वेद तुहीं जुठठाम ॥
छं० ॥ १२९ ॥

तुहीं कृत कारन तारन देव । तुहीं सिध साधक सारन सेव ॥
तुहीं धर सोषन पोषन मात । तुहीं ससि सूर तुहीं सरसात ॥
छं० ॥ १३० ॥

तुहीं सिसु जोवन बाल रु वृद्ध । तुहीं घट भाष नवै रस सुद्ध ॥
तुहीं विष अंमृत संमृत सार । तुहीं घट औघट रप्पन हार ॥
छं० ॥ १३१ ॥

तुहीं नर नागिंद इंद सुरेस । तुहीं जुग आदि तुहीं लवलेस ॥
तुहीं तत पंच चलावन हार । तुह गुन तीन करै उपचार ॥
छं० ॥ १३२ ॥

अलेष अगोचर तुंनर दंद । तुहीं नट नाट नचावन छंद ॥
तुहीं ब्रज नारि तुहीं ब्रज नाय । तुहीं गिरधार अँधारन[4] पाय ।
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए० कृ० को०—जो । (२) ए०—पदन । (३) मो०—प्रकर्त । (४) मो०—अतारन ।

तुहीं धर गंग उधारन सेव । तुहीं चय बेनी सुतीरथ देव ॥
आकास प्रकास तरायन तेज । नवग्रह नाम तुहीं सम रेज ॥
छं० ॥ १३४ ॥
तुहीं सब संचन आगम मांहि । कहै सब ठौर बिना तुम्र नाहिं ॥
धरै कर आवध दंड छचीस । तुहीं तुं नाम तुहीं कर बीस ॥
छं० ॥ १३५ ॥
तुहीं अब चंद सुधारन आस । तुहीं चहुआन भुजा करि वास ॥
तुहीं पिथ अंत सुधारन काम । तुहीं यवनेस संघारन नाम ॥
छं० ॥ १३६ ॥
तुंही तन सुभ्भ उवारि उवारि । कह्यौ अब कारन संकट टारि ॥
छं० ॥ १३७ ॥
दूहा ॥ वर संकट कविचंद को । पुर भारे कुर भीर ॥
जु कछु मनोरथ चिंतयै । सत्य होय वर बीर ॥
छं० ॥ १३८ ॥
खुगति सुगति जस स्वामि क्रित । रिन भग्गै क्रम भग्गि ॥
छिन छिन पायौ दरसनह । मिटि चलि चंद सुअग्गि ॥
छं० ॥ १३९ ॥

देवी की कृपा से कवि का प्रसन्नता पूर्व्वक गजनी पहुंचना ।

सिर पट्टर भट्टर सुभट । भव भै भग्गौ तास ॥
परम तत्त रत्तौ वघट । नयर सपत्तौ तास ॥
छं० ॥ १४० ॥
इहि विधि पत्तौ गज्जनै । जहं गोरी सुरतान ॥
तपै सेछ इछ अप्पनी । मनों भान मध्यान ॥
छं० ॥ १४१ ॥
चौपाई ॥ इह अरंभ जुग्गिनी पुर अत्तौ । गुर नियान जोगह मन रत्तौ ॥
दिसि विचारि बोवह अवलोकिय । गोरिय धर गज्जन वै सोषिय ॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ छैगै अमृत सुभृत गति । नठ नाटक बहु वार ॥
इह चरित्त पिष्पन नयन । गयौ चंद दरबार ॥ छं० ॥ १४३ ॥

गजनी नगर की शोभा और प्रतिभा वर्णन ।

वृद्धनाराच ॥ हयं गयं अनेक भंति जोध जोध राजयं ॥
म्लेच्छ दुष्ट तेज ताम ता कुरान साजयं ॥
पढंत मीर पारसी गियान सामि भ्रम्मयं ॥
नसंत चंद वीय चंद पीर सीस नामयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
निमाज तंत अंत तीर नीत राज राजयं ॥
वहंत गज्ज वारुनी सुवारनी न साजयं ॥
केस्तूत हट्ट हट्ट कंक सेर के मनुच्छयं ॥
अलच्छि लोइ लच्छनं विनान लोल लच्छियं ॥ छं० ॥ १४५ ॥
सुनै न चंद वेद सद्द वद्द तं कोल मयो ॥
सरोरि सुंछ उग्र मेछ दिष्पयौ विलंमयो ॥
कमान वीर पंचयौ सुटंक जो अढारयौ ॥
समान मेछ दिष्पियै सुजम्म तैसु ढारयौ ॥ छं० ॥ १४६ ॥
विपास वीर चातुरी सुढारह हट्ट सोहयं ॥
विभास नम्भ सामि कौ सुमिड्डि मोह सोहयं ॥
कटंत ते सुनार हे सतार तार राजही ॥
मयूष सांझ प्रात की किरन्न भान लाजही ॥ छं० ॥ १४७ ॥
घमग्ग हट्ट पट्टनं सुरंग सुग्र सोभयं ॥
ग्रिहं ग्रिहं सुदिष्पियं तुरंग तंग लोभयं ॥ छं० ॥ १४८ ॥
लघुनाराच ॥ संपत्त भट्ट गज्जनं । विभूति घट्ट गज्जनं ॥
सुकट्ट जट्ट वंधयं । प्रगट्ट रूप सिद्धयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
सुघट्ट कट्टि तुट्टयं । मृगंतु चारु पट्टयं ॥
सुभोव छंडि रुद्रयं । विराग को समुद्रयं ॥ छं० ॥ १५० ॥
हुतौ मनों कविंदयं । अनादि कौ जुगिंदयं ॥
गयंद नेम घुम्मतौ । पगं पगं विरंमतौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥
[1]निरष्षि मंदिरं सुम्झयो । सुवास रास उग्गयौ ॥

(१) मो०—निरष्प इक्क मंदिरं ।

गवष्य अच्छ उच्चयं । कनक्क ढारि वाच्चयं ॥ छं० ॥ १५२ ॥
जरे जराव थंभयं । जगंमगे अचंभयं ॥
अनेक तथ्य वालयं । रमंत चित्त स लयं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
परे चचिग्ग ओटयं । उगें कि चंद कोटयं ॥
जुगिंद ते निरंषयं । हिरन्न लज्जि झंपियं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
तमोर कोर रत्तियं । दसन्न लैं सुभत्तियं ॥
मनों कि डार पक्कियं । अनार ते दरक्कियं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
हलैं अलक्क लंबियं । उरोज सों बिलंबियं ॥
मनों कि ते उरग्गियं । कली कुमुद लग्गियं ॥ छं० ॥ १५६ ॥
जुबन्न मद्द मत्तियं । जुगिंद[1] को छरत्तियं ॥
रयन्न की उनिंदयं । पवन्न सों झकंदियं ॥ छं० ॥ १५७ ॥
हरे हरे हसंतियं[2] । विलोकि रुप चंदियं ॥
समान की सहेलियं । रही सुहथ्थ झेलियं ॥ छं० ॥ १५८ ॥
मनों कनक्क वेलियं । लपट्टियं चमेलियं ॥
सकोमलं सुरंगियं । पकी मनो नरंगियं ॥ छं० ॥ १५९ ॥
जवादि कासमीरयं । चरच्चि अंग चीरयं ॥
*सुमन्न सत्त भीगयं । सुकेस पास चिंगयं ॥ छं० ॥ १६० ॥
अभूषनं अलंकियं । चलंत सिंघ लंकियं ॥
गुमान लज्ज घेरियं । पयं पती पहेरियं ॥ छं० ॥ १६१ ॥
फिरे न दिट्ठ फेरियं । हैरान भत्ति हेरियं ॥
चल्यौ सुचंद सग्गयं । डगं मगंत पग्गयं ॥ छं० ॥ १६२ ॥
तुही तुही अलष्षियं । सबद्द सुष्ष भष्षयं ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवि का शाही दरबार को जाना ।

दूहा ॥ नैर निरष्षि परष्षि कवि । धरकि हरष्षि न चित ॥
मात प्रसन्न प्रसन्न पय । तौं मिलियै वर मित्त ॥ छं० ॥ १६४ ॥

(१) ए० कृ० को०—कविंदं । (२) ए० कृ० को०—हसंदियं ।

* इस पंक्ति के दोनों चरण मो० प्रति में नहीं हैं आगे दो चरण बढते भी हैं इससे मालूम होता है कि ये दोनों चरण क्षेपक हैं ।

उभै ग्राम वर उत्तरी। पढ़ि सुमंच वर चंद ॥
गय गोरी दरवार वर। बुझ्झयौ जगावन दंद। छं० ॥ १६५ ॥

दरबारियों का वर्णन।

रसावला ॥ दरब्बार गोरी, भरं भीर जोरी। उड़ें रेन झोनं, करे बत्त सेनं ॥
छं० ॥ १६६ ॥

सुषं सेख दट्ठी, पयं पेम चट्ठी। कटिं तोन ठानं, कसे कस्स मानं ॥
छं० ॥ १६७ ।

हसैं के हलक्कें, मह्हीने श्रधिक्कें। फरी तेग झारं, गने के दिहारं॥
छं० ॥ १६८ ॥

वहै मोन रज्जी, करै केन वज्जी। तसव्वी तुसानं, पढ़ै के कुरानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

पढै पत्ति सोही, सुरत्तान दोही। मरोरंत मुच्छं, गुरं ग्यान तुच्छं ॥
छं० १७० ॥

दिठी दिट्ठ भट्टं, हियो पट्टि फट्टं। क्रमं चंपि पानं, दरब्बार थानं ॥
छं० ॥ १७१ ॥

कवि के विषय में लोगों की कल्पना।

कवित्त ॥ प्रथम मुक्कि दरवार। लज्ज संकर सुरतानी ॥
है गै नट नाटक। भ्रम्म दिष्षिय परमानी ॥
एक कहै इह भट्ट। इक कहै सिद्ध प्रमान ॥
एक कहै ठग ठोठ। एक वेताल सुजान ॥
इक कहैं जोग पाषंड इह। भ्रम लग्यौ रोकंन कवि ॥
तब लगि चंद वरदाय वर। गयौ थान दरवार हवि। छं० ॥ १७२ ॥

कवि का राजद्वार पर जाकर द्वारपाल से अपना परिचय देना।

तह अग्गै गय निरषि। कनक लकुटीय नग जटित ॥
हयं गय नर असरान। थान इंद्रा सम थट्टित ॥

(१) ए० कृ० को०—फाहि। (२) ए० कृ० को०—चिभूति।
(३) ए० कृ० को०—अरु। (२) मो०—सैल।

गज्जनवै सुरतान । भान सम तेज सुदिट्टौ ॥
लुछ अमर संमरन । अहित चित बुज्झि सुमिट्टौ ॥
बुझ्यौ विभूति वपु भंति बहु । चंद धूत सिर बंधि पट ॥
भव भोग भवन रह छंडि कैं । किम जोगी भय भट्ट नट ॥
छं० ॥ १७३ ॥

वथूश्रा ॥ हौं सु जोगिय हौं सुजोगिय जनन पर द्वार ॥
जोग जम जोगिनि पुरंदर सुरस चविधि कल कवित्त जानौं सव छंद्र
सरस रसायन भायनह गीय गाह गुन ग्यान ॥
छैल इच्छ अच्छौ कहौं जो पूछै सलतान ॥ छं० ॥ १७४ ॥

द्वारपाल का कवि का सादर आसन देना।

दूहा ॥ हैजम हिय वासी सुवर । दिष्ट परष्षिय भट्ट ॥
बहु आदर आसन दियौ । पाय अरचि दिय पट्ट ॥छं०॥१७५ ॥

कवि का अपनी विद्याओं का बखान करना।

पद्धरी ॥ कविचंद कहै सुनि जमन मीर। झलमलहि तेज तुम सुमनमीर ॥
हौं लहौं विद्य बल अनत अथ्थि । देषिय जुसाह साहाव तथ्थ ॥
छं० ॥ १७६ ॥
दस अट्ठ च्यार उच्चार भेद । लघु दिग्घ रुप आनूप छेद ॥
गज अस्व सस्त्र विद्या गुनाह । लुक अंज गुटिक साजं सुराह ॥
छं० ॥ १७७ ॥
रथभनी भेद तिथि लह्ह अप्प । भारनह मोह वसीह जप्प ॥
जच्चंग भेद विधि धिर विचार । रस धात पीत उद्धार सार ॥
छं० ॥ १७८ ॥
षट भाष रस्स नव नट्टनाद । जानौ विवेक विचार वाद ॥
हय दिष्षि जोति जोतिक्क भेद । गारुड़ह मंच द्रिग पंष षेद ॥
छं० ॥ १७९ ॥
इतिहास अट्ठ दह अंक माल । पौरान पृथक बुझ्झौं विसाल ॥
नाटक भरह पिंगल प्रबंध । जानौं सुअरथ उद्धार संध ॥
छं० ॥ १८० ॥

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-21

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

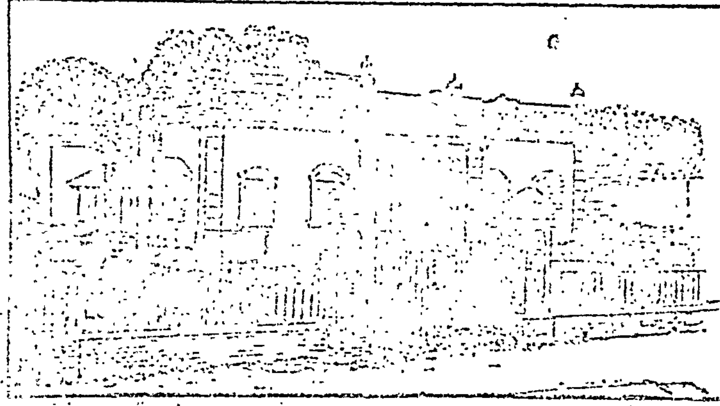
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Jú.

CANTOS LXVII-LXIX.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व ६७-६९

PRINTED BY PT. BAIJNATH JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1913.

मूल्य १।)   Issued 8th January 1913.   *Price Rs. 1/4/.*

सूचीपत्र।

——:o:——



विद्याह चतुर दस चित्त मोहि । बुज्झ्झ सुकहो त्रिभुवंन होहि ॥
मिट्टै जु एक पिन मोहि साहि । मन उकति[1] अच्छ पुज्जों सुआहि ॥
छं० ॥ १८१ ॥

द्वारपाल का कहना कि कविचन्द मैं तुझे पहचानता हूं जरा ठहर इत्तला होती है ।

दूहा ॥ इस्यौ जमन परदार तव । तुहि जानौ कविचंद ॥
छिन इक दरह विलंबियौ । कवि न करहु मन मंद ॥
छं० ॥ १८२ ॥

हों रमून जानों सकल । तुहिं जानों कविचंद ॥
परसादह तुहि देविहै । पढि आनंद सुकंद ॥
छं० ॥ १८३ ॥

वथुआ ॥ तुह रमूजि सह जम[2] नरिंद । निपुन वेद सह सकल समझ्झन ॥
तु लहंत गुन भेद जान जानन गुनिक जन । तू लज्ज रूर माया अभूप धन ॥
धन पारयन सजन तुंवर बुद्धि विनान । जान को नाहिन तज्जन ॥
छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ हित अहित सनमुष पहिचानी । भावी गति आगति सब जानी ॥
अंतर दंद[3] चंद मति सज्जिय । छुटन अंग संकर गढ लज्जिय ॥
छं० ॥ १८५ ॥

पद्धरी ॥ परदार मुष्ष लष्षिय सुचंद । तू किय[4] विभूति सिर धरै बंद ॥
मुष फेरि हसति दस्तक निपानि । उठि भेद भट्ट जनों पुव पिछानि ॥
छं० ॥ १८६ ॥

कवि का अपना प्रगट होना जान कर वहां से चल देना ।

दूहा ॥ तव विरम्म कवियन करिग[5] । रुचित अप्पनी इच्छ ॥
सह सहाव दर दिष्षियै । जि कछु भुंमि परि मिच्छ ॥
छं० ॥ १८७ ॥

---

(१) ए० कृ० को०— उगत ।
(२) ए० कृ० को०—मझ्झे ।
(३) ए० कृ० को०—दंत ।
(४) ए० कृ० को०—वूकी ।
(५) मो०—करिय ।

गाथा ॥ साजति अनेक मत्ती । पुरसान षान सुविहानं ॥
गोरी गुर तुरकानं । दानवं दैव दुरवाहं ॥ छं० ॥ १८८ ॥

शाही पासवान सरदारों का और शाही ड्योढा का औसाफ वर्णन ।

भुजंगी ॥ रुहंमी रुहंगी सुहिल्ली सुरोगी तरन्नी तियोजी[1] सुहन्नी कुरोमी ॥
धरंते तरंते सुधारे सुसल्ले । दरव्वी सहेवी सरंते गुसल्ले ॥
छं० ॥ १८९ ॥

सकान्नी तिषन्नी पुरन्नी पुरेसी । सरव्वान भट्टी जिलंगार गोसी ॥
धरन्नी धरंती ससल्ले सुसल्ली । तुरक्कान चिंतं चिगत्तं तु सल्ली ॥
छं० ॥ १९० ॥

हबस्सी सुगोरी सुकव्वी सुपन्नी । प्रकारं प्रवानं प्रवानी तिवन्नी[2] ॥
नियाजी सुवाजी सुकाजी कुसल्लै । तजे जस्स तेजं वारं वज्ज मल्ले ॥
छं० ॥ १९१ ॥

तुरक्की ममक्की सनं मेज[3] लल्ले । पवंगे पवन्ने वनं चार गल्ले ॥
सुभं सेषजादे अवादे पठाने । महा मंच जुङ्गंग सुङ्गंग जाने ॥
छं० ॥ १९२ ॥

निमाजं सुरोजं नमो पंच बानं । पढै अथ्थि कौरान सोरान जानं[4] ॥
सिपारा चिबोरा पढै तीस तामं । धरै राह अप्पं सुतप्पं सुधामं ॥
छं० ॥ १९३ ॥

चलै अग्गि ओसीमि अप्पं सुराहं । तिनं गात लघ्यै गुरंजीव गाहं ॥
नही ग्रेह माया निराया विरागं । तिनं राह वंछै धनं तीय तागं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

इसे देस देसं सुबेसं सुरेसं । दिष्यौ साहि गोरी दरब्बार सेसं ॥
अनेकं वरं ब्रंन ब्रंने वियाने । दिठै साहि गोरी गरज्जे सुहाने ॥
छं० ॥ १९५ ॥

बली जिह्व बानी पवीरज्ज लावी । तुलंगा हरासे हरंमी सुतावी ॥
गनै कौन इच्छै जिते मेछ जाती । ग्रहै आय जानं दरं दिष्षि भाती ॥
छं० ॥ १९६ ॥

(१) ए० कृ० को०— निराजी । (२) ए० कृ० को०—निवन्नी ।
(३) ए० कृ० को०—तेज । (४) ए० कृ० को०—बानं ।

कवित्त ॥ दिष्षि थान सुरतान । षान सुबिहान मसंदलि ॥
तीन लष्ष निसि दिवस । रष्षि वज्जंग वज्ज झलि ॥
वर बज्जै नीसान । सद्द कन्नारव भग्गा ॥
सूर तेज तप साहि । गोर गोरी गुर लग्गा ॥
सुरतान सुबर चित पति चढ़ै । पाय बिलग्गी चंग गति ॥
तहिनह चंद बरदाय कौ । रस संकर संकर विपति ॥छं०॥१९७॥

दिन के तीसरे पहर शाह का हुदफ खेलने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ इह विध जाम दु बित्ति गय । भयौ त्रतीय पहरान ॥
हुदफ साहि षिल्लन चढ़न । दियौ आप फुरमान ॥छं०॥१९८॥

हुदफ खेल के लिये शाही सवारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रथम बज्जि घरियार । बज्जि नवबत्ति पलान सजि ॥
दस दिसि वर धाए नकीब । साहि गजराज बीर गजि ॥
दुतिय बज्जि नीसान । सबे चतुरंगनि सज्जिय ॥
षानषि भर षुरसान[1] । आय दरबार सुरज्जिय ॥
वाज तंतीन नीसान वर । बर गोरी वर वीर चढि ॥
आलम अदब्ब देषंत[2] कवि । बाम कोद बर भट्ट ठढि ॥
छं० ॥ १९९ ॥

चौपाई ॥ उठि उठि भट्ट कहै हम जानं । बषत अनंद रह्यो सुविहानं ॥
विस लज्जह बोल्यौ मेछानं । कहिहै सो करिहै सुविहानं ॥
छं०॥ २०० ॥

दूहा ॥ बढ़ि अवाज आलम सघन । बहु अदब्ब जमनेस ॥
दिसि दष्षिन लघु बंध नृप । चलै अग्ग हुअ मेस ॥छं०॥२०१॥

शाही सवारी का निकलना और कवि का शाह को हाथ उठा कर आशीर्वाद देना ।

पद्धरी ॥ चढि चल्यो साहि गोरी प्रमान । जानै कि ग्रीव ग्रीषम्म भान ॥

(१) ए० कृ० को०—सुरतान । (२) ए० कृ० को०—देषंन ।

तब सह सलाम मंडहित मीर । फिरि बंधि फौज रहै तीर तीर ॥
छं० ॥ २०२ ॥

अंगुलि अधरनि[1] करि करि मलंद । सिर नाइ भई जब निजर मंद ॥
पारस सहस्स लकरीय लाल । वरनंत सोभ मानहु प्रवाल ॥
छं० ॥ २०३ ॥

अग्ग सुवंध निसुरत्ति षान । दरस पंच हय उत्त सुव्रिहान ॥
[2]गोरीय सुअह तत्तार साह । पुच्छंत वत्त चढ़ि पातिसाह ॥
छं० ॥ २०४ ॥

को गिने साह षानह असंष । दिष्ये सहाव जुग जुगति अंषि ॥
आसनह अंस ताजी सुहाय । नग जटित जीन रवि ससिय थाय ॥
छं० ॥ २०५ ॥

कंचन्न लोल करनीय जग्ग । चित रहिय चुंधि मन भ्रमय लग्ग ॥
रँग रँग पीत वनि सेत लाल । प्रगटें सु प्रगट मान पिनमाल॥
छं० ॥ २०६ ॥

रँग रंग रंग अंमर सुचंग । दिष्यियै एक चंदह विरंग ॥
आलम अदव्व दिष्यौ न जाय । रुक्यौ सुमग्ग कविचंद धाय ॥
छं० ॥ २०७ ॥

लक्करिय लाल अड्डिय करंत । उम्भौ[3] सुदिट्ठ दिष्यौ तुरंत ॥
पर दुअन देस जानै अकाज । निय सामि चढ्ढ अप्पन काज ॥
छं० ॥ २०८

सुर एक घटी चित्तत तंम । आवाज साह किन्नौ हुकंम ॥
तब अली वेग आलंम सज्जि । घन भेस भद्द नीसान बज्जि ॥
छं० ॥ २०९ ॥

भननंकि भेरि भारथ्थ सज्जि । सुरपत्ति कंपि द्रिग झंपि रज्जि ॥
दिसि दिसा मिले सद्दे सद्दान । धर धमकि बंध बंधव अद्दान ॥
छं० ॥ २१० ॥

(१) ए० कृ० को०—अधरति ।
(२) मो०-गोरी सुसोहि तत्तार नाम । (३) ए० कृ० को०—लम्भौ ।

सोभंत पांवरी सनौ सल्ल । है कंप होत अमुघुरी हल्ल ॥
लहरी लाल इतसांम तान[1] । ओपंम चंद जंपै सुवान ॥
छं० ॥ २११ ॥

जानैं कि साह रिजि सब्र रूप । निकस्यौ अंग धरि कोठि रूप ॥
सुनि हय्य राज किलकार कोर । यौं चल्यौ अग्ग सुरतान जोर ॥
छं० ॥ २१२ ॥

सानौ किरीट वैं[2] सीस[3] भान । दुहुं परी होडकिर निट्ठ जान ॥
पक्खरीय वृंन गंभीर ओप । [4]जान्यौ कि मंडौ मौनज सु कोप ॥
छं० ॥ २१३ ॥

वारून निसा अष्टि छुट्टि[5] विवाह । जाने कि रूप बहु करै राह ॥
संज्यौ सु छच सुरतान सीस । सुरतान जित्ति चहुआन रीस ॥
छं० ॥ २१४ ॥

सनौं भान सूर सह हरे छांह । चल्ले जुकाम धरि रूप वाह ॥
दुहु पास वाह चालुक्क हीर । तिन दिष्य रूप सुरतान मीर ॥
छं० ॥ २१५ ॥

लीयज्जपान निज वंध मान । सामुद्द धरी लज इंद्र जान ॥
वंधै सुअंग दै दै कुवान । उप्पंम चंद जंपै निदान ॥
छं० ॥ २१६ ॥

कटि किसल सूर सब बार तोन । जमनेस भेस धन पत्ति द्रोन ॥
सिंगिन सवद्द वेधी सुपान । भारथ्य वेर अरजुन समान ॥
छं० ॥ २१७ ॥

दह वेर सूर सूरन सलाम । बर हुकुम चढ़न देपन्न ताम ॥
वर भट्ट भेप पथ अनिव होत । पै भूप जानि सचे समोत ॥
छं० ॥ २१८ ॥

विसुत्ति तनह अवधूत दीस । वर दून उन्न दीनौ असीस ॥
छं० ॥ २१९ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—ताम, वाम । (२) ए० कृ० को०—कैं ।
(३) मो०—सिस । (४) ए० कृ० को०—जागैं कि मंडौं चहु करिव कोप ।
(५) ए० कृ० को०—त्रुटि ।

कवि का शाह की विरद पढ़ना ।

वचनिका ॥ साहि स्वार साहि विभार । वेरिआ[1] सोह बंद कुहार ॥
सबर साह सान मरदन । * * * ॥
निवर साह थापना चारिज । अषिल रीत दल्लाख आरिज ॥
दुरवेस साह धारी तरक । नीरन्न साह श्रींगै अरक ॥
लोभीन साह उर अंकुसाह । उत्तर दष्षिन दिस साह गाह ॥
ईसै कुरान मूसे मुलान । महमंद दीन ईमान आन ॥
हजरति साह आलम जलोल । साहिब कुरान गाजीय लाल ॥
आषंड जमी कंटक विडार । आदल्ल रीति जालम निडार ॥
फकर फरीद रिज कान दार । बगलीस पंनाम कास दार ॥
औलिया पीर पैगंम रार । इक बीस च्यारि कामति कार ॥
दावा दरिद्र भंजन विस्तार । साहन समंद विरदै पगार ॥
तबल तबल घालि तवलेश्वर । अंग उपांग भोग भोगेश्वर[2] ॥
कालि कृतांत कलह कोहेश्वर । अैयौ ईस सुरतान साहवेश्वर ॥
छं० ॥ २२० ॥

शाह का कवि की तरफ मुतवज्जह होना और कवि का अपना परिचय देना ।

दूहा ॥ देत असीसह सिर नयौ । विन अष्पन फुरमान ॥
दुसह भट्ट दिष्यौ नयन । वेपुच्छे सुलतान ॥
छं० ॥ २२१ ॥

पातिसाह साहाब दीन वाक्यं ।
साटक ॥ दृष्टं तो सुविहाल तेज तरुनं भूपाल जपालयो[3] ॥
तो चट्ठे वर बीर जोति जुधयं जित्तंधरं जालयो ॥
विवौ षान पुरेस बीर बलनं कारनं वधं जंमयो ॥
जुद्धं तो जलि क्रंन बीर उपमा भट्टं सि चद्दो मया ॥
छं० ॥ २२२ ॥

(१) ए० कृ० को०—बेरियां । (२) ए०—भोगेश्वर ।
(३) ए० कृ० को०—नृपालयोः ।

शाह का कवि को पास बुलाकर सब हाल पूछना। कवि का सब बातों का उत्तर देना और शाह का उसे ठहरने के लिये कहना।

कवित्त ॥ देषि चंद मन मंद। साहि आनंद उपन्नौ ॥
　निजरि अप्प सुविहान। बोलि आलम अप लिन्नौ ॥
　उघ्घ अग्गि दस तक्क[1]। बत्त पुच्छी दुप सुष्य-वर ॥
　बिधि बिधान न्रिम्मयौ। कारन उदेस कविय वर ॥
　संग्राम स्वाम क्यौं मुक्कयौ। क्यों कविंद्र भारथ्थ तजि ॥
　किहि थान लोइ संभरि धनी। कहौं सुवत्त लज्जौ न लजि ॥
छं० ॥ २२३ ॥

पद्धरी ॥ सुरतान पान सईति मीर। तहां बोलि चंद मन मंद वीर ॥
　बिन बोल बोल बुल्यौ सुछंद। हौं सुनौ साहि बर भट्ट चंद ॥
छं० ॥ २२४ ॥

　अवतार लीन प्रथिराज साथ। वह ग्रह्यौ हौं व अच्छौ अनाथ ॥
　संग्राम धाम मोकलि वसीठ। जालंध राव हम्मीर धीठ ॥
छं० ॥ २२५ ॥

　तिहिं होत बीर सुरतान संधि। जालंध थान मो चंद बंधि ॥
　संग्राम राज भारथ्थ कीन। सुरतान बंधि जस जीति लीन ॥
छं० ॥ २२६ ॥

　सुलतान बंधि सुविहान सार। आहुट्ठ समर षग छीन धार ॥
　हिंदवान षंभ दोउ असत बीर। सध्यो मुकाम तहिन सरीर ॥
छं० ॥ २२७ ॥

　मैं सुन्यौ साहि बिन अंषि कीन। तजि भोग जोग मैं तप्प लीन ॥
　वह पनग विष्प सुरतान छानि। भै अट्ठ राज मन अनत पान ॥
छं० ॥ २२८ ॥

　हूं मंच जंभ पालै न जाउं। वैराग राग धुअ लेहि पांउ ॥

(१) ए० कृ० को०—कन्त।

सुरतान आन तप अघन काज । अस भट्ट सज्जि जोगिंद राज ॥
छं० ॥ २२९ ॥

सें तक्यौ तप्प बद्री सुथान । थिर रह्यौ सुनत सुरतान कान ॥
धरि एक सोचि बोल्यौ सुसाहि । दिस अंग अग्गि पच्छी बुझाइ ॥
छं० ॥ २३० ॥

वे चंद अंध सें रिस न कीन । वर वंक दिष्ट छंडै न भीन ॥
सुविहान थान रष्षे[1] अदब्ब । करतार हथ्थ सक्करिय सब्ब ॥
छं० ॥ २३१ ॥

करतार केलि जानी न जाइ । चिंतवै आन आनह सुथाइ ॥
बलिराइ कीन जीतन सुइंद । बंध्यौ विधान थानह फुलिंद ॥
छं० । २३२ ॥

धरि अद्ध रह्यौ तिन बार तब्ब । सुरतान बोलि वर कहिग सब्ब ॥
हम जाहिं चंद देखनह दप्प । दोय गलह कहिह करि चलहु तप्प ॥
छं० ॥ २३३ ॥

सुरतान हरन साया सुभट्ट । जिहि काज चंद सिर बंधिय जट्ट ॥
षट सुर पंचवि जो लग्गि घट्ट । सुरतान प्रात बन गह्यौ[2] बट्ट ॥
छं० ॥ २३४ ॥

दूहा ॥ जु कछु न्रप्पयौ भट्ट वर । तुम जानौ बहु बुद्धि ॥
सो टरै न विधुना सुहथ[3] । सहत न दुष्प अलुद्ध ॥
छं० ॥ २३५ ॥

शाह का पीरोज खां हबसी को कवि की खातिर करने की आज्ञा देना ।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुवीर सुविहान जान । हबसी सबोलि सुविहान पान ।
फिरि सोहि ताहि फुरमान दीन । हम बहुत चंद महमान कीन ॥
छं० ॥ २३६ ॥

(१) ए० कृ० को०—निरपै । (२) ए० कृ० को०—गसौ ।
(३) ए० कृ० को०—विहथ ।

कवित्त ॥ वर फुनसी पीरोज । रच्यो सुविहान भट्ट हिय ॥
पुत्र दिसा पच्छिय हुजाब । अनुकृति ससल्ल किय ॥
सुप सुपंग सिष्टान । पान सुगंध धूप घन ॥
द्दिव्य धाम दह वास । कुसति पाकार सुद्द सन ॥
वसतर सुरंग घन सुमन दुति । दुतिन वढिय वर चंद की ॥
आनंद कंद वट्टन दुतिय । दुति वढ्ढिय वर दंद की ॥
छं० ॥ २३७ ॥

दूहा ॥ फिरि सुचंद चलि नगर कौं । दियौ साहि फुरमान ॥
विधि उदय कमुदिनि सुदय । गयौ अस्तमित भान ॥छं०॥२३८॥
वरत चंद महिमान सव । अगर धूप दिय देह ॥
भिदै न सुप तन दुष्य वढ़ि । ज्यौं अतक वरंगनि नेह ॥छं०॥२३९॥
निसासा ससपिन विसुप । पिन रैंनी नन वित्त ॥
साहि सहाव अंदर गयौ । मीर ससोधन पित्त ॥छं०॥२४०॥
है हदङ्क करि पेदगौ । ग्रह आयौ सुरतान ॥
आपत चंद मन में सुनिसि । इम अप्पै[1] सुविहान ॥छं०॥२४१॥

कवि का भीम नामक खत्री के घर डेरा दिया जाना ।

पद्धरी ॥ हुजाब चंद दोउ एक सथ्य । आए सुग्रेह पचीय तथ्य ॥
बोलयौ भीम हुज्जाब तास । वे आम कब्बि रष्यौ सुसास ॥
छं० ॥ २४२ ॥

सुनि भीम अत्ति आनंद अप्प । लग्यौ सुपाइ पचौ सुतप्प ॥
हुज्जाब फिर्यौ कवि प्रेरि तास । लै गयौ भीम क्रित संगि कास ॥
छं० ॥ २४३ ॥

किय अर्घ पाद पची सुकब्बि । उपचार विमल वानी सुतब्बि ॥
आसनह सुप्प अति सेव सज्जि । उपचार देषि कवि क्रित्त रज्जि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

अग्गिया मांगि पच्छिय अहारि । सम रुच्चिय[2] भाव रच्यौ सहार ॥
छं० ॥ २४५ ॥

(१) मो०—अप्पै । (२) मो०—साच्चि ।

कविचन्द का भीम से एक एकान्त स्थान मांगना और कवि की रुचि के अनुसार भीम का एकान्त स्थान देना।

दूहा ॥ रंजि सुकविता षिचि सम। कही सत्ति साभिष्टि ॥
देहु निरंतर ग्रेह इक। हम सुक्रक्ष जुनि[1] इष्ट ॥छं०॥ २४६ ॥
तब षची कर जोरि कहि। कहो सुकवि आरोह ॥
अत्ति निरंतर ग्रेह इक। तुम आश्रमहु तेह ॥छं० ॥ २४७ ॥
अद्भुत कवि षिचिय जगति। ग्रिह देषवि मन ल्लास ॥
एक सिंघ अरु पष्परयौ। अब मन पूरौं आस ॥छं० ॥ २४८ ॥

सुरिल्ल ॥ कवियन मद्धि तास आयासह। संपनौ जहाँ भासन भासह ॥
देषि अवास रीझि उर वासह[2]। अति निरमल कज्जल सुर रासह[3]॥
छं० ॥ २४९ ॥
तहं विरम्म किन्नौ कविरामह। बोलि कवी षिची बर तामह ॥
मंगे परिकर होम प्रचारं। होम जोग प्रति पूजा सारं ॥
छं० ॥ २५० ॥
जे जे परिकर मंगिय कव्वी। ते ते आनि भीम दिय तव्वीं ॥
करि आसन कविचंद महामय। बैठो धारन धयान सज्जि सय ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पूजन की सामग्री जुटा कर कवि का हवन करना।

करे जाप सा मंच बीज वर। लग्गो करन होम सा विधि पर।
करे ध्यान पूरन जप कव्वी। सनमुष तोन प्रगट्टी हव्वी ॥
छं० ॥ २५२ ॥
संनिय षेद कविय जन तामं। लग्गे करन मंच स्तुति कामं ॥
न्यास षडंग अंग रष्या करि। बैठो मग वच काया संवरि ॥
छं० ॥ २५३ ॥
क्रूर करंक कपट करि दूरं। इन विधि मंडप कुंड सपूरं ॥
ग्रित गुग्गल कनयर जा फूलं। मधु दधि दुगध मिश्र जा मूलं ॥
छं० ॥ २५४ ॥

(१) ए० कृ० को०—अति। (२) ए० कृ० को०—भासह। (३) मो०—राजह।

जुग जातक सेवा बहु भंती । श्रीफल पट्ट पितांबर दंती ॥
ससिध द्रिप्प अह्लह सनमानी । चाटुति[1] अंगुल जुग नपजानी ॥
छं० ॥ २५५ ॥

एक पट्ट पहिरन भट्टानं । बैठौ कारन अंत तुरकानं ॥
प्रानायाम करै आचमनं । दल द्रिगपाल बेचपति सुमनं ॥
छं० ॥ २५६ ॥

अग्रज दंती देव अराधी । इस करि मात उमा कवि साधी ॥
अप्पर आदि अनादि उचारं । बीज गुपत जिय काया धारं ॥
छं० ॥ २५७ ॥

कवि का वीज मंत्र का जाप करना ।

दूहा ॥ प्रनव आदि षोड़स वरन । नाम अनंत विचार ॥
इन मैं त्रिभुवन साधनी । विद्या नेक प्रकार ॥ छं० ॥ २५८ ॥

वीज मंत्र के जाप की विधि और ध्यान ।

लघुनाराज ॥ अहो प्रनव्व रूपयं । जगत्त बीज रूपयं ॥
त्रिय सरूपयं सयं । समीर तेजयं तयं ॥ छं० ॥ २५९ ॥
सवास बीज साइयं । सुवाग बीज ताइयं ॥
प्रभास सूर वासयं । अनंग बीज रासयं ॥ छं० ॥ २६० ॥
विधान बीज सारयं । सुधा सुसोम कारयं ॥
स्वरं सरूप षोड़सं । वरन्न वन्न जोड़सं ॥ छं० ॥ २६१ ॥
सकत्ति रूपयं तयं । प्रचार चार चित्तयं ॥
कनक्क रूप साइयं । प्रकार जग्ग ताइयं ॥ छं० ॥ २६२ ॥
निबंध बंध बंधयं । विलोम लोम संदयं ॥
वरन्न रूप सन्नयं । विनड्डि विजनं मयं ॥ छं० ॥ २६३ ॥
अकल्ल रूप मायियं । न बुद्ध पार पाइयं ॥
पुरस्स देव कज्जयं । अनेक रूप रज्जयं ॥ छं० ॥ २६४ ॥
अहंस सद्द सेवयं । निबद्ध नेह एवयं ॥
दरस्स रूप देवियं । सुवाल वद्ध ते वयं ॥ छं० ॥ २६५ ॥

(१) ए० कृ० को ।—चाटुनि ।

देवी का प्रगट होकर वर देना कि शाह पृथ्वीराज और तूं तीनों एकही घड़ी अन्त को प्राप्त होंगे।

गाथो ॥ सुनि देवी कवि कव्वं । दीय हुंकार अप्प आयासं ॥
सम करि दुष्ष सुभट्टं । दरसन समय नथ्थ लहि बुद्धं ॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ निसि निसह उत्तरिय । चंद जग्गे रचि होमं ॥
वेद मंच आरंभ । जाप पूरन पढ़ि सोमं ॥
दियसु[1] मात हुंकार । ईवि धुनि सुनिय वीर भट ॥
छंद बंध उच्चार । जंच जंची[2] सुमंच पट ॥
उच्चार भट्ट चित करन वरं । वीर प्रबंधन छंद किय ॥
चिंतयो जोग वंछै मरन । और न तात विचार विय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

गाथा ॥ साह बदी सुलतानं । तो प्रथिराज अंत दिन एकं ॥
तो चहुआन स कित्ती । वद्दै वर वेलि पुहमि परचोरं[3] ॥
छं० ॥ २६८ ॥

करि साहास रचि बुद्धी । सिद्धी सिद्ध संडि सा क्रज्जं[4] ॥
उद्दिम सुद्दिम सारं । करि कविराज चित्त थिर थप्पं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

तब कहि चंद सुकव्वी । सुनि जग मात सुभ्रु[5] विग्यानं ॥
बालप्पन निज नेहं । सो न्रिव्वाहे नेह सा देवी ॥छं०॥२७० ॥

अरिल्ल ॥ सुनि सा सकति किद्ध हुंकारं । झमके विज्जल तेज सभारं ॥
सुनि वरदाय धीर मय सारं । मकरि मोह मय षेद अपारं ॥
छं० ॥ २७१ ॥

जे न्रिम्मान विधानं भावं । सो निम्मान मिटै नह ठावं ॥
वेली कित्ति बंध राजानं । उरध लोक तुम पावै प्रानं ॥
छं० ॥ २७२ ॥

(१) ए० कृ० को०—दियत। (२) ए० कृ० को०—मंत्री। (३) मो०—परिवारं।
(४) मो०—कज्जं। (५) ए० कृ० को०—बुद्धि विज्ञातं।

दूहा ॥ रीझि उमा कहि हरन करि । दरस सिद्धि कविराज ॥
बैठि रसन सुलतान कौं । चंद करन कित काज ॥
छं० ॥ २७३ ॥

सुनि मानंधौ कवि जिय । धरिय चित्त मन ध्यान ॥
सिद्धौ कारन जानि जिय । विरतौ प्रेम पुरान ॥
छं० ॥ २७४ ॥

कवि के पूजन समाप्त करने पर भीम का पूछना कि आप अपनी इच्छा को क्यों कर पूर्ण कर सकते हैं तब कवि का उसको देवी के दर्शन कराना ।

कवित्त ॥ प्रान कलपि पति काज । चित्त सर वेद भेद उर ॥
आसन वासन तजिय । पूजि दुग्गा पूरन करि ॥
तब दिपि बोल्यौ भीम । एक विग्यान सुरूक्ष सुनि ॥
तुम राजिंद सुभट्ट । अस्म अप्पित इप्पित मन ॥
जल उस्न आनि कुंकुम सकित । पर ज्यालन तन ताम किय ॥
वसनह सुदिव्य आछादि सुनि । अति आनंदिय भीम जिय ॥
छं० ॥ २७५॥

दूहा । उमरि साहि घन घाइ इहि । रस रेती करि दाय ॥
तमनि किरनि लग्गत विषम । वीर मंच परदाय ॥ छं० ॥ २७६ ॥

देवी की स्तुति ।

भुजंगी । निराधार विद्या देवी देहि चंदं । जपौ तुम्भ तूंही ज तूंही प्रबंधं॥
कहां साहि गोरी असंमान सूरं । कहां भट्ट फक्कीर लोटंत धूरं ॥
छं० ॥ २७७ ॥

कहां राज अंधान बंधं विधायं । कहां कोस कम्मान आवै न दायं॥
जंही वान आतम्म मातंग भारी । तुहीं वीर रूपी विराजी करारी॥
छं० ॥ २७८ ॥

तुंही सत्य सत्यं वदै वेद मंचं । तुंही भेद अभ्भेद जायालि तंचं॥
तुंही तेज सूरज्जि सो वेलि चंदं । तुंही आसमानं तुंही भीम नंदं॥
छं० ॥ २७९ ॥

तुंही प्रक्कति पार' अपार' सुरप्पं । तुंही अजै अरधंग अजपादि सिप्पं
करामाति कंधं करत्तार काया । तुंही कामनी काम संसोर जाया॥
छं० ॥ २८० ॥
कली काल चालंत चामंड आली । तुंही बाल जोवन्न ब्रद्दंति काली॥
रटै नाट रागं विराजी विराली। इरै मोह रंगं बजै वज्र तालो ॥
छं० ॥ २८१ ॥
इरै लच्छ बुद्धीं कमिच' जयंती । जपै तोय सायं प्रली लागियंती ॥
बध्यौ तप्प तेजं जयौ अद्ध मुंडं । अजै वा विजै वासही देह छुंडं ॥
छं० ॥ २८२ ॥
घरी पंचली देवि को तिग्ग देष्यौ। सती साहसी सिद्ध तूंही विसेष्यौ
धरी ध्यान देषी वढी वीर रूपं। चढी जोति देषी विमानं अनूपं ॥
छं० ॥ २८३ ॥
जमी अंत सोहंत जालंधरानी । सरै सव्व काजं वरदाय वानी ॥
उमा सो विसासो परत्तीत पाई । जहां छवि सासी तहां देविन ई॥
छं० ॥ २८४ ॥
नियं देह देषै विरूपं रिसानं । तजै मोह माया गई आसमानं ॥
निसा पंग रंगी अरंगी सुजायं । सुभं सुब्भ जानै लियै हथ्य हाय'॥
छं० ॥ २८५ ॥
सकुन्नं जनंने मरन्नं विहाने । बजै दुंदुभी देवि भूमी निसाने ॥
छं० ॥ २८६ ॥
दूहा । भई सबद आयास धुनि । भय सुकाम तुह सत्त ॥
तब विचिच चिंत्यौ सुमन । नीति न रष्यौ चित्त ॥
छं० ॥ २८७ ॥

उस रात्रि को मुसलमानी जंत्र मंत्र का न चलना और मुल्लाओं के मन में विस्मय होना ।

भुजंगी । महल साह साहाब सुरतान गोरी । जगी जलनि किरनानि संमान जोरी ॥
किते वे कुराने कुसी कान लग्गे । डरे देव बानी नहीं मंत जग्गे ॥
छं० ॥ २८८ ॥

डरे दान दीये सुखीर फकीरे। तहा कारि सकै कौन ग्रह साहपीरे॥
फिरस्ते न हस्ते न मुला पुकारे। उठै सुट्टि दिट्ठी तहां गातक्कारे॥
छं० ॥ २८९ ॥

चलो सेष सीषी भषे दंड लीधा। रहै सब मिचे गुरू ग्यान बीधा॥
[1]हितं अन हित्तं दिषै जा उलष्षै। सतं दूअ विद्या परं जीव लष्षै॥
छं० ॥ २९० ॥

सयंते धनंते तवी वेव तेहा। चितं अन्न पानै नही जाव जेहा॥
नियं अस्सधारी धुरं पासवानं। सदा सुष्प सेवै जनं गातवानं॥
छं० ॥ २९१ ॥

पकें पक्क पानं समानंत नेहं। अपं अप्प रष्षै जिसे देह देहं॥
वसं विस्तरं सा पवासं सहथ्थं। अभुत्तं सु ज्योतीतगं हेम तथ्थं॥
छं० ॥ २९२ ॥

सुछं चुंन पूगी कथा पान धारी। जिके अग्रवाहे जिसे भूप भारी॥
जहां मंच साषी चिया चेय लोपै। वरं किंकरै दुष्ट वै रीति कोपै॥
छं० ॥ २९३ ॥

जितै पान पंधार अनुकूल सारे। मनं कपट घरियार चित्तं विचारे॥
छं० ॥ २९४ ॥

दुहा॥ भय विहान सुविहान दर। वजि नवबत्ति निसान।
तम चूरन जूरन किरन। प्रगटि दिसान दिसान॥
छं ॥ २९५ ॥

प्रातःकाल होतेही शाह का कवि को बुलाने की इच्छा करना।

कवित्त। भय विहान सुविहान। सहि वंदगी निरामय॥
वजि नवबत्ति निहाय। घाय वज्जिय घरियारय॥
नट्ठि तिमर तपि सूर। हवर रह दीन तत्त मति॥
जग्गि साहि सांहाव। काज किन्नौ नित्यह गति॥
आरोहि बसन उस्नीष रजि। षां पियारि धरि आदरस॥
निरषंत निवासह[2] मंडिकिय। चंडिय कारन चंड रस॥
छं० ॥ २९६ ॥

(१) मो०—हितं अनाहितं देषि जाषं उलष्षं। (२) ए० कृ० को०—हिरषंत निवारह।

दूहा। हरफ हदकरि गिलयौ। घर आयौ सु विहान॥
रूपत चंद मन संझ निसि। नीठ सु भयौ विहान॥छं०॥२९७॥

शाह का हुजाब को कवि के लाने की आज्ञा देना और ततार का उसे मना करना।

किय आदरस निवास। द्रुग्ग सधि सेव सधारन॥
तब चित्तह चढि चंदु। मिलन मन किन्नौ धारन॥
तिहि सु समय सल्लास। आय ततार षान तब॥
षां रुस्तम षां गमन। आय वर पास सेव सब॥
उच्चार्यौ साहि हुज्जाब सों। बोलि भट्ट चहुआन तत[1]॥
सिर धर्यौ बोल हुज्जाब जब। तब बुल्ल्यौ ततार तत[2]॥
छं० ॥ २९८॥

चौपाई। इम चिंतत चिंत्यौ सुलतान। वे कहां भट्ट निसुरत्ति षान॥
वैराग राज बन जाय चंद। दोह करै गल्ह दुनिया सदंद॥
छं० ॥ २९९ ॥

कवित्त। सुनिय हुकम निसुरति। करिय तसलीम साहब॥
बंदो की इह नाहि। करै सुविहान जुबाब॥
अबिचारी करि बत्त। हाय पीछै पछितावा॥
मंत संति किज्जियै। होस दुनिया नह आवा॥
हित कहै खासि सेवक सुभ्रम। अवर बोलि मत पुच्छियै।
जानौ न बत्त कपटी करह। क्यों बिसास नस[3] इच्छियै॥
छं० ॥ ३०० ॥

शाह का कहना कि देखें तो उसमें क्या रहस्य है, बातों बातों में बड़े रहस्य प्रगट होते हैं।

बैठि मत्त सुरतान। रसनि व्रिस्मयौ करन बर॥
अम्म राज दिन पुज्ज। चंद प्रानेस काल चर॥

(१) ए० कृ० को०—बत। (३) ए० कृ० को०—तस।
(२) ए० कृ० को०—तस।

सूर उदै विन भेद । फंद सुरतान संभरिय ॥
बोलि षान निसुरत्ति । षान हुज्जाब उच्चरिय ॥
सट्टहि सु तत्त जानन सकल । नवि अकाल गति बुज्झियै ॥
जानै न कोय इह लोक में । कौन भेद कत सुज्झियै ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

सुनिय षान निसुरत्ति । षान ततार पंधारिय ॥
गरुह दंद टारियै । गरुह आनंद उचारिय ॥
निंदा कुल संघात । काल गच्छै अबुद्धि मति ॥
सिद्धि बोध जिहि होय । काल गच्छै जु गरुह मति ॥
इक रहै गरुह सोई ग्रहन । रहन सोय सो ग्रह नही ॥
इहि रोज साहि साइति कुफर । कारहि अरज आनंन गहि ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु और सर्प का विश्वास करना उचित नहीं ।

तब तातर निसुरत्ति । पानि वर जोर समीपं ॥
वे अदब्ब सुलितान । [2]नेक जंपी पुब अप्पं ॥
अदब रष्षि दै दान । निजरि दिष्षियै न दुर अरि ॥
वर कुरान काजी कहंत । अदब सुविहान पुब्ब करि ॥
नट भट्ट सद्द डंकनि[3] डहर । अप्प षेल दुस्समन दरस ॥
विष वाद वाद पाषंड विय । करि न साहि आलम परस ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

सुनि ततार हुज्जाब । करन जुल्लि साहि सिकंदर ॥
कीय बहुत अरिजंग । फेरि अग्गा सब बंदरि[4] ॥
हिंदवान घर कही । कह्यौ सेना सब साजिय ॥
मिले राह बिच आनि । स्याह चौंटिय दल माजिय ॥
महिमान साहि दल सबै करि । तब पुच्छिय इह कौन गति ॥

---

(१) ए० कृ० को०—कहै भट्ट। (२) ए० कृ० को०—नेक पुब्ब सुजंप आप ।
(३) ए० कृ० को०—मंकनि । (४) मो०—दंदिर ।

मुक्काम कीय मोदी दियन[1]। पर्यौ पान लीनौ सुभति ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

तत्तार खां का कहना कि खाड़ा खुदा कर तब कवि को बुलाओ।

दूहा। फिर्यौ सिकंदर बात सुनि। तब कहं काजि किताब ॥
खाड़ा हथ्थ षुदाय कौ। आनौ अट्ट सिताब ॥ छं० ॥ ३०५ ॥
फुनि ततार अरदास करि। अप्प अहित जो चल्ल ॥
कालिह स पिष्यौं विकट वित। साहि न कीजै गल्ह ॥छं०॥३०६॥
फिरि ततार अरदास करि। वे आलम सु विहान ॥
नट नाटक डिंभी[2] डमरू। ना बूझंहि सुलतान ॥छं०॥३०७॥
वे फकीर अरु जाइ तप। हम करामाति सुलतान ॥
कहिग गल्ह दीय पुच्छियै। अरु जु लेइ कछु दान ॥छं०॥३०८॥
कवित्त। सुनहु साहि साहाब। बचत या गहिय अम गुर ॥
समय करीम कुरान। सजहु निमाज बंदिधुर ॥
इह अदीन कफरान। कान तस नाम न लिज्जै।
जितै आनि अप्पनी। तितैं या रहन न दिज्जै ॥
तुम जान ग्यान अति सुनि गरुअ। दैन सीष को तुम समन ॥
अति मान जान गोरी गरुअ। समय विचारौ सत्ति मन ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

शाह का कहना कि वह गुणी पुरुष है मैं उससे अवश्य मिलूंगा तू मूर्ख क्या जाने।

तब जंपै साहाब। सुनहि ततार षान तत ॥
इह सु चंड मति मंडि। दीन मंदित सदा हित ॥
छंद प्रबंध कवित्त। पढहि आलम मन रंजै ॥
विषम बैर उद्धार। ताहि सुनि बोत समुझ्झै ॥
बुझ्झवल बत्त जोरन जुगति। इय बरदाइय ग्यान गुर ॥

(१) ए० कृ० को०—दियत। (२) ए० कृ० को०—डंभी।

चिहु देस[1] चंद संदै सहिर । रसन प्रेम रस अस्स धर ॥
छं० ॥ ३१० ॥

तनि जो तत्तार । साहि पानौ स निहि वर ॥
इह सु चंद कोफर कुराह । नजह षरियन दुर ॥
इह सु सेव सज द्रुग्ग । संच जानै अति आगम ॥
तंच संच सुद्धिय प्रमान । बूक्षिय बीरागम ॥
कीजै न वत्त इह जुगति मिलि । जो बुझै घन चंड सव[2] ॥
पूछौ जु साहि गुनियन गरुअ । तौ बहु आनौं भट्ट अब ॥
छं० ॥ ३११ ॥

दूहा । तब जंपै साहाब तमि । रे सुनि षान ततार ॥
जे निस प्रेही गुन गरुअ । सुन्यो सयल मति सार ॥छं०॥३१२॥

तत्तार खां का पुनः मना करना परंतु शाह का न मानना ।

षां ततार तब उच्चर्यौ । सुनि सुलतान सुभास ॥
षरियन गन जेवल हो । क्यों मिलियै नर तास ॥छं०॥३१३॥
जिहि छंड्यो संसार सुष । जिहि छंड्यौ ग्रह वास ।
ता पुरष कौ दुज्जनह । जो सज्जन को आस ॥ छं० ॥३१४ ॥
इह सुभट्ट चहुआन को । सुन्यौ बीर वरसत्त ॥
अरजु साहि आलम करै । सु कहै बनै छत्रपत्ति ॥छं०॥३१५॥
[3]वे ततार गोसर गुमर । वत्त न बुझ्झै तत्त ॥
विधि विधिना भंजन मतै । को रष्षै हित गत्ति॥छं०॥३१६॥
सुनि कक्कस वर बेन न्त्रिप । बरजि अप्प दरवान ॥
गो फकीर वर है सुभट । दुष्प बहुत चहुआन ॥छं० ॥ ३१७ ॥

कवि का दरवाजे पर आना परंतु तत्तार खां के इशारे के अनुसार दरवान का उसे भीतर जाने से रोकना ।

कवित्त । बोलि षान पचिय हजाब । षान पीरोज बुलाइय ॥
कहा भट्ट कविचंद । हथ्थ अप्पै बरदाइय ॥

(१) ए० कृ० को०—तिहु देस । (२) ए० कृ० को०—जुव ।
(३) ए० कृ० को०— वे ततार गुम रप्प गुर सुनन बुझै तत यत्त ।

जोग जुगति पुच्छियै । तंत पुच्छियै सुभग्गा ॥
कहि गरुहा लै द्वान । प्रान संतोष सुजग्गा[1] ॥
बर सित्त असप्पति भट्ट वह । को भंजै न्त्रिम्मान गति ॥
तत्तार पान षुरसान षां । हमति जान जानै सुभति ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

दूहा । तब सहाब सुष उच्चर्‌यौ । सियां मल्लिक जै षान ॥
दौरि चंद संमुह चलै । वे बुल्लै सुलितान ॥ छं० ॥ ३१९ ॥
चल्यौ चंद सम्मुहाय तब । मीर मल्लिक न सथ्थ ॥
देषि रूप दर जोग कौ । रुकि दरबानन तथ्थ ॥ छं० ॥ ३२० ॥
आवत जान्यौ चंद जब । तब मति षान ततार ॥
साहि अजानै अप्प मति । रुक्कायौ दरबार ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

कविचन्द का रोके जाने पर देवी का स्मरण करना ।

जब रक्यौ कविचंद दर । तब चिंतिय हिय धीर ॥
संच रूप अस्तुति करन । लग्गो बर विधि बीर ॥छं० ॥३२२ ॥

भुजंगी ॥ नमो देव देवंस वीरोधि बीरं । स्वयं जापिनोकं स्वयं ना कसीरं ॥
चयं[2] काल रूअं चिगुन्नं चिधासं । हुअं[3] कारनं क्रित अन्नेक नासं॥
छं० ॥ ३२३ ॥
रूअं लघ्घु थूलं सु आयास तूलं । बरं अग्र काली स्वरं सद्दिसूलं॥
सदा भैरवं रूप बीरं बिराजं । बरं अग्र काली सुधारी सुकाजं ॥
छं० ॥ ३२४ ॥
जहा संकटं[4] सेव मानै अपारं । तहा आप[5] आयं निय[6] काल सारं॥
रमं बीर लोकं चिलोकं चिसूलं । गदाचक्र बाहं[7] हथ्थं धंनु जूयं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥
मदग्गं चिसूलं परीघं सुघासं । ग्रहै ब्रह्म संक्रीति संगी दुरोसं ॥
करै कुंत कत्ती पुरस्सी कुठारं । धरै सब्बलं सेल नाली कनारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

---

(१) मो०– सुभग्गा । (२) ए० कृ० को०—अयं । (३) ए० कृ० को०—हुकं ।
(४) ए० कृ० को०—संकया । (५) मो०—अयं । (६) मो०–निजं । (७) मो–बानं ।

हल मूसल भिंडि पाली फरिक्का। जमं दड्ढ निड्ढ परस्सं छुरिक्का॥
धरै आवधं एक अन्नेक नामं। जहां संक सेवं तहां आय कामं॥
छं० ॥ ३२७ ॥

अहं संकटं आय लुक्कयौ अनूपं। करौ आज काजं अग्हं[1] आय जूपं॥
करौ आज माया प्रगट्टं सरूपं। महा मोहनं आसुरं शब्व नूपं॥
छं० ॥ ३२८ ॥

सुने आइयं वीर असतुत्ति चंदं। भई आसुरानं सबै बुद्धि मंदं॥
भयौ आय वीरं स हुंकार सद्दं। धरा धम्म धम्मं उड़ी रैन रद्दं॥
छं० ॥ ३२९ ॥

फटी पौरि परदार झंमी झमीरं। भई हाय हायं महा साहि मीरं॥
छं० ॥ ३३० ॥

शाह के आज्ञानुसार हुज्जाव का कवि को शाह के संमुख लिवा जाना।

पोतिसाह वाक्यं।

चौपाई॥ तब सहाब बोल्यो हुज्जावह। अहो भट्ट आनो सित्तावह॥
तब हुजाव आयौ कवि पासह। बोलि चल्यौ कवि अंदर तासह॥
छं० ॥ ३३१ ॥

उस स्थान का वर्णन जहां पर कवि शाह के संमुख गया।

पद्धरी। सम कहिय वत्त पर दार साहि। हित अहित चित्त दिष्यौ सताहि॥
आलम्म कहइ सो करहि तथ्य। आवन्न देहि कै रुकहि पथ्य॥
छं० । ३३२ ॥

बुल्यौ सुचंद हज्जूर साह। बुभझन्न वत्त अप पातिसाह॥
बैराग चंद तुम जोग रत्त। जोगह विरुद्ध हम मिलन[2] मत्त॥
छं० ॥ ३३३ ॥

संग्रह्यौ पान पानह हुजाव। तम चलयौ चंड बुल्ले[3] सहाव॥
लै रष्पि मद्धि ठड्ढो महल्ल। सुव्वास रास अंदर चहल्ल॥
छं० ॥ ३३४ ॥

(१) मो-अमं। (२) ए० कृ० को०—मिनव। (३) मो०—बोलै।

बैठक सुरंग सुभ चित्त साल। सोहंत अति उज्जास भाल ॥
विस्साल महल वर रंग भोम। प्रासाद उंच मंडप सिरोम ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

वात्यानि[1] जाल पति मत्ति नूप। हिम थंभ जोति जग मग सरूप ॥
झलकंत कनक कुंदन सुमाल। एकेक रूप रंजत रसाल ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

जग्गहि सजोति नग जटित जास। राजंत रवनि दसकंध वास ॥
चयकाल रूप तरुनी महल्ल। दह दूक्क झुम्मि रोचित रहल्ल ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

जालीय वार छज्जि सुत्ति दाम। नग जंबु बद्द सज्जे सु काम ॥
सत पन्न उंच साखा सु एक। तहां मयन सयन सुष सेज नेक ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

वनि गोष पट्ट सज्जे सुथाल। आछादि साम आसन उछाल ॥
मूढाव गादि मंडी सुथान। बैठा सु[2] साहि आसन उतान ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

दस पंच हथ्थ अधि चित्रसाल। सम फिरत मंडि सह मत्त[3] आल॥
उमराव मीर बैठे सुतथ्थ। कुलवंत सूर संग्राम हथ्थ ॥
छं० ॥ ३४० ॥

उंचे उतान बंधे अनूप। घनि ग्रिज्ज[4] मनहु मंडे सरूप ॥
ठट्ठौ सु कियौ कविचंद आनि। उम्मरा मीर सब अग्गि मानि ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

दूहा। दिष्षन रूप सु जोग कौ। आए सब नर नारि ॥
अंदर बासी अथ्थि सह। मिलि निरष्षन हार। छं० ॥ ३४२ ॥

चोटक। मिलि साह हरम्म हरम्म चढ़ी। प्रिथीराजह अंत अनंत बढ़ी ॥
जर कंबर अंबर से पटयं। झमि जानि भुमंकत ता तटयं ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

मिलि तुंगत सासिक ताटकयं। जनु देव विमान सुरा सकयं ॥

(१) ए० कृ० को०—वासानि। (२) मो०—जु।
(३) ए० कृ० को०—सहसत्त। (४) ए० कृ० को०—घनग्रज्जि।

दिपिनं घन सासि कविंद इहं । नव रासित भासि सवद्द कहं ॥
छं० ॥ ३४४ ॥

दूहा ॥ चिंत[1] रूप कविचंद कौ । जै जगि गोरिय राव ॥
जिहि दुचित्त अरि गंजियै । सो अथवै उग्गाव ॥छं० ॥ ३४५ ॥

गाथा । निरषे रूप सुभट्टं । तन विभूति जट्ट जूटायं ॥
कल पानी चय पानी । निरषे अदभुत तेज विद्यानं ॥
छं० ॥ ३४६ ॥

पातिसाह वाक्य ।

शाह का कवि से योग के विषय में प्रश्न करना ।

पद्धरी । बुल्लाइ चंद हजूर साह । बूझै सुवत्त अप पातिसाह ॥
वैराग जिंद कहो जोग गत्ति । जोगहि विरुद्ध हम मिलन मत्ति ॥
छं० ॥ ३४७ ॥

कविचंद वाक्य ।

मुरिल्ल ॥ एक महूरत रूप निरष्षे । बुल्लौ साह कवी सम सष्षे ॥
माया मोह सुष्ष संसारं । दारा पुत्र पौत्र परिवारं ॥
छं० ॥ ३४८ ॥

धन धामं चौपय अनि अष्षी । मोह जाल विलसन विस वष्षी ।
नह छुट्टै कलि क्रम्म प्रकारं । जोग भ्रंम जनु षंडाधारं ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

बंधे पंच इंद्री परिवारं । बंधे पंच धारना धारं ॥
कंचन जेम उपल अवि लष्षे । बंधे गंठि आतमा सष्षै ॥
छं० ॥ ३५० ॥

झंगर विप्पन गिरिवर वासं । मिलन एक आतमा सहासं ॥
इहि विधि विवरि सु जोगह जित्तै । अवर उभै चुक्कै सुह रत्तै ॥
छं० ॥ ३५१ ॥

तव जंपै कविचंद महामय । सुनि गोरी साहब गज्जन वय ॥
दरस जात सव लोक समष्षय । दरसन कारन तीरथ अष्षय ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चित्त ।

धरपति दरस सहि करतारं । तिहि पहु दरसन बंचि बिचारं ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

कवित्त । सो जोगी परिमान । लेय अहार इन सुभति ॥
ज्यौं लेपन लिसि ग्रहै । अधिक नन लेप अप्प छति ॥
से राजन परिनास । कबहुं चपै नन लच्छिय ।
ज्यौं अंपि रूप नन चपै । सोय राजन सन अच्छिय ॥
पंडित सु विनय विद्या चपै । चिपाति स्वामी त्रिय चपै ।
सुत सोय तात रिन उद्धरै । पिता सोय अध्यहु अप्पै ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

पतिसाह वाक्यं ।

पद्धरी । कविचंद कही जब इह सुकथ । पतिसाह तबै अप्पिय सुबत्त ॥
शृंगार वीर जौ जोग सत्त । जोगह विरुद्ध हम मिलन मत्त ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

दूहा । हमहि मिलैं जैचंद सुनि । विरह दरिद्रीय लोभ ॥
अरु जु दुनौ महि संचरहि । हम सौं मिलत न सोभ ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

चन्द वाक्यं ।

तबही चंद कवि उच्चर्‌यौ । सुभ पुच्छहु सुलतान ॥
जोग भोग इहि रीति तौ । सब जानौ सु विहान ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

पातिसाह वाक्यं ।

कवित्त । जोग सुनौ वरदाय । इक्क संतोष तत्त गुर ॥
अप्प पावन रहैं प्रान । ग्रहै संतोष संच उर ॥
कंद मूल फिन पच । रहै मुनि अरघन कालं ॥
वन गज कीटी अंग । अंग संतोष सुपालं ॥
संतोष रतन पर मन्नि नर । तजि संतोष हम चिंतियै ॥
जोगह विरुद्ध हम मिलन मति । इह अवुद्धि इह संतियै ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ हम अबुद्धि सुरतान इहं । भट्ट भाष सुष काज ॥
नव रस सें रस अप्परस । इहै जोग सुष काज ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

कवित्त ॥ जोय सुष्य कविचंद । होय वितराग देह घत ॥
सुषनि सोय मुनि रुद्र । चक्रवरती न लहुं छित[1] ॥
सो न सुष्य हरि हरन । ब्रह्म पावै न नाग नर ॥
लहि न सुष्य ससि सूर । सुष्य लहै न काल वर ॥
लहौ न सुष्य सुर असुर नर । नह लहौ द्रिगपाल किहि ॥
सो सुष्य जोग क्यों सुक्किये । क्यौं कविंद्र आयौ सुइहि[2] ॥
छं० ॥ ३६० ॥

चंद वाक्य ॥

चौपाई । वीतराग सह चित्त सहायौ । सुषह काज तज्जे सुष भायौ ॥
इक जपूई[3] अरदास नरिंदं । करै साहि तौ सुक्कौं[4] दंदं[5] ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

दोहा ॥ जो कछु मंगहु भट्ट वर । करै बनै सुविहान ॥
भुम्मि लच्छि द्यौं चंद तुहि । नह अप्पौं चहुआन ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

चंद वाक्य ॥

नह मंगै कविचंद नृप । कहौं न रसना छंडि ॥
कथ्य पुब्ब आलम कहौ । छिनक श्रवन जो मंडि ॥
छं० ॥ ३६३ ॥

बालपनै प्रथिराज सम । अति मित्त तन कीन ॥
जुकछु स्वाद मन मैं भयौ । इच्छा रस मँगि लीन ॥
छं० ॥ ३६४ ॥

(१) मो० छिन ।
(२) ए० कृ० को०—द्रह ।
(३) ए० कृ० को०—जपौंई ।
(४) ए० कृ० को०—मुक्कौं ।
(५) ए०—दिंद ।

पुब्ब पराक्रम राज किय । कछु जंपो तुछ ग्यान ॥
अरु जु कछू तुछ जंपिहौं । सब जानौ सुविहान ॥
छं० ॥ ३६५ ॥

इक्क सुदिन प्रथिराज रस । सुष कही तिहि वार ॥
सिंगिनि सरवर इच्छिविन । सत्त हनन घरियार ॥
छं० ॥ ३६६ ॥

वर सुनंत कंपै हियौ । दिल न रहैं सुरतान ॥
सुद्दरोग भौ रोग मन । कहून कौं सुविहान ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

तौं[1] आयो तुहि आस करि । तो पासे चहुआन ॥
सो दरोग दिल लग्गि सुझ । कहून को सुविहान
छं० ॥ ३६८ ॥

मैं जान्यो अचरिज्ज मन । नृपति संच की लीह ॥
तब लगि इहि विधिनग लषो । आय संपत्ते दीह ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

अरिल ॥ कहून कौं पतिसाह तुही । मनमंझ रह्यौ कविसाल जुही ॥
आयौ सु आज करि पैज तही । बन जांउ सुसाह सहाव गही ॥
छं० ॥ ३७० ॥

पातिसाह वाक्य ।

दूहा ॥ सुनि सिहाब गह गह हस्यौ । बे बे भट्ट सुभट्ट ॥
अंषिहीन मति हीन भौ । कहा मग्गै[2] मति नट्ट ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

अंषिहीन सौं बल घट्यौ । मति नट्ठी सुरतान ॥
जु कछु मोहि अप्पन कह्यौ । बोल होय परिमान ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

चंद वाक्य ।

तबैं भट्ट अरदास करि । सच कही सुविहान ॥

(१) ए० कृ० को०—तिहि ।
(२) ए० कृ० को०-मंगौ ।

जु कछु कहीं कविचंद कौं। सो दिज्जय सुविहान ॥

छं० ॥ ३७३ ॥

पातिसाह वाक्य ।

कवित्त ॥ आवे चंद मन मंद। नंच भग्गो मृदंग भगि ॥
गयौ सुरह मिटि तार। पंथ जंची जचह लगि ॥
रहै ¹ इक औंसाफ। पंथ लग्गे पंथी सह ॥
अप्प वाट लग्गयौ। पंथ कट्टै कहि गह गह ॥
को मात तात को पुत्त को। को सेवक सांई सुहुअ ॥
साजंस संत लम्भौ रवनि। गयौ राज बल राज तुअ॥

छं० ॥ ३७४ ॥

चंद वाक्य ।

दूहा ॥ सब विधि घटी नरिंद की। हम जाचक नह पीर ॥
वचन परें सिर कट्टि दै। ते पिचो कुल धीर ॥

छं० ॥ ३७५ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

तब चिंतिय साहाब मन। हंसि बुल्यौ सम चंद ॥
जाय संगि सम राज सौं। हम दिष्पहि आनंद ॥ छं० ३७६ ॥

पद्धरी * ॥ सुरतान जाँम फुरमान किन्न। हुज्जाब षान तिहि सथ्थ दिन्न ॥
ले जाहु चंद प्रथिराज पास। तू मंग हम्म दिष्पैं तमास ॥

छं० ॥ ३७७ ॥

दूहा ॥ तब गोरी हुज्जाब प्रति। कहै सुकवि लै जाँहु ॥
अरस परस बिन दूरि तैं। लै आसीस कहाउ ॥

छं० ॥ ३७८ ॥

हुजावषान वाक्य ।

कवित्त ॥ वोल्लि षान पठ्ठी हुजाब। वोल्लि पीरोज षान वर ॥
दस हथ्थनि प्रिथिराज। निजरि रष्यौ श्रवन कर ॥
दरस द्रिगन अप्पियौ। परस दरस नन पावै ॥

(१) ए० इहै ।

* इस छन्द को ए० कृ० को० तीन प्रतियों में मुरिल्ल और मो० में अरिल्ल करके लिखा है।

जु कछु कहै संभरी । संगि सोई यह आवै ॥
घरियार हनन मंगै वरह । अकल अपूरव वत्त इह ॥
दिष्षियै चित्त अंपिन सुचित । कहौं साह अग्गैं सु कह ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के पास जाना ।

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट चित सज्जि कल । संकट तज्जन प्रान ॥
फुट्टत नन[1] दिष्षत नयन । इन अवस्थ चहुआन ॥छं०॥३८०॥
अग्या सज्जि हुजाब पहु । लै चल्लिय कवि सथ्थ ॥
प्रथम राज पासह गयौ । तब रुक्यौ दह[2] हथ्थ ॥ छं० ॥३८१॥

दर्शकों के बीच कवि का कौतुक करना ।

अरिल्ल ॥ बाल वृद्ध मिलि सत्त तमासै । मनौं इंद्र मिलि मेछ छमासै[3] ॥
गुर जंबू नट नाटक किन्ने । आचिज परषस रासिक भिन्ने[4] ॥
छं० ॥ ३८२ ॥
तारी तीन दई तिन बारह । बज्जन मिसि बुल्ल्यौ विहु बारह ॥
इहि वेरह कवि रेन उछारिय । टग टग लग्गि रहे नर नारिय ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

भुजंगी ॥ टगे टग्ग लग्गी हरम्मी सुभीरं । नटी नट्ट बुल्लै सुवाने गँभीरं ॥
ठटी दुग्ग रष्षी घरी पंच नीरं । बटी घट्टि घरियार वंधे सु वीरं ॥
छं० ॥ ३८४ ॥
हहक्कंत कौतूहलं धाम धामं । भई भुम्मि छाया विमानंन जानं ॥
ग्रहं सुत्ति लालं विहारंत वीरं । ग्रहै पानि उज्जाव बुल्यौ सुधीरं ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

चंद वाक्यं ।

कवित्त ॥ सुनि हुजाब सुष आव । ज्वाब पुच्छै सुदि उंतुहि ।

---

(१) ए० कृ० को०—नेन ।
(२) मो०—दस ।
(३) ए० कृ० को०—छडासै ।
(४) ए० कृ० को०—सिन्ने ।

छंडि पानि सुनि वानि । हानि जिन देइ अंस सुहि ॥
सेत पीत कहरिय । लाल पुत्तरीय सुअंबर ॥
तहां उचारत वत्त । हनै गोरीधर उस्सर ॥
आचंभ एक नजरहि निरष । हम सीषह हंसिय दसम[1] ॥
अस लष्य असंग उचित्त कर । तब सुभट्ट दिष्यौ असम ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

दूहा ॥ जब निरष्यौ हुज्जाब उध । मंच थंभि उचरष्यि ॥
चलि कारन प्रथिराज कौ । कह्यौ सुमीत समष्यि ॥
छं० ॥ ३८७ ॥

कवि का राजा की करुणामय मूर्ति देखकर आशीर्वाद देना परन्तु राजा का कवि को सिर न नवाना ।

पद्धरी ॥ तब गयौ चंद नृप तथ्य थाह । जहां मिच बयट्टो दिट्ठ चाह ॥
दस हथ्थ रष्यि दिनी असीस । सिर नयौ नहीं मन करिय रीस ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

दूहा ॥ चष्प हीन द्रुब्बल न्नपति । दस बंभन रहै पास ॥
रोस अगनि तन प्रज्जरै । चिन्ता अतिहि उदास॥ छं० ॥३८९॥

कवित्त ॥ निम्मिल जीय वर सिंघ । दई तन दुष्ट भाव करि ॥
रोस अगनि प्रजरंत । जाय आक्रित अग्गि झर ॥
मौक्रित तत्त निकाम । वीर तन छीन सु पंजर ॥
अरि[2] तित्तै चिंत्यौ सुक्रन्न । संभर्यौ चंद सुर ॥
घत सिंचि वीर पावक्क झर । रीस रवत तन प्रज्जर्यौ ॥
कहि भट्ट वीर विरदावली । देत राज रज संभर्यौ ॥
छं० ॥ ३९० ॥

कवि का विरदावली पढ़ना और राजा का कवि की वाणी पहिचान कर क्रोधित हो उसे धिक्कारना ।

पद्धरी ॥ धर पंथ राय आजान वाह । [3]दुरजनन मरि घर राय दाह ॥

(१) मो०—हसम ।　　(२) ए० कृ० को०—अति ।
(३) ए० कृ० को०—दुरजन नरीद्र रा वीर दाह ।

चालुक्क राय पर पँज पार । पंगुरे राय जग जग्य ढार ॥

छं० ॥ ३९१ ॥

वर वीर जित्ति ससिवृत लिन्नि । कमधज्ज राय सिरदार किन्नि ॥
संभरे वत्त संभरि नरेस । सुर बंधि बंध जिहि कियौ भेस ॥

छं० ॥ ३९२ ॥

रनथंभ थंभ जस मंडि थान । चालुक्क चंपि जालौर थान ॥
धनु धनुष धीर अर्जुन नरेस । जित्तया वीर दष्षिन सुदेस ॥

छं० ॥ ३९३ ॥

मन सध्य राय अवधूत धूत । संभरीय राव सोमेस पूत ॥
जग रष्षि नाम जर जर सरीर । चलि संगि संगि आयौ सुधीर ॥

छं० ॥ ३९४ ॥

पहिचानि चंद सिर धुन्यौ राय । संगह सरन्न बुल्यौ जुवाय

छं० ॥ ३९५ ॥

दूहा ॥ सुनि कवित्त चलि चित्त किय । अद्भुत भट्ट सरीर ॥
मोहि उलंघ्यो जानि कै । चिंतत प्रबुधुन धीर ॥

छं० ॥ ३९६ ॥

कवि का कहना कि मैं होनहार को क्या जानूं।

भवति न सुझ्झयौ मोहि पै । हैं क्यों कंगुर जांउ ॥
हम तुम छेहौ इह भयौ । भावी देवह थांउ ॥

छं० ॥ ३९७ ॥

चौपाई ॥ बोलि चंद संकर वर दाइय । ग्रहै रहैं ज्यौं मनसा धाइय ॥
मत्ति कविंद कविंद उपावै । एक चोट षग मग्ग दिषावै ॥

छं० ॥ ३९८ ॥

कवित्त ॥ दिष्षत षान पीरोज । अग्ग चल्लै बिमान वर ॥
स्याम सेत अरु रत्त । पीत धज भिस्ति देव धर ॥
पीर फेर तौ जाइ । जाय अच्छरी प्रगुंस्सर ॥
इह अचिज्ज दिषियै । इंद्र इंद्रान चंद वर ॥
चवरुष उचोर बर मंच किय । हब्बेन बन बन रुकि मुष ॥

तिहि घरी भट्ट सुप सामि तन । कही बत्त मंडीत[1] रुप ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का गला भर कर राजा को समझाना परन्तु राजा का फिर भी सिर न नवाना ।

दूहा ॥ नेह[2] नीर रुकि कंठ कवि । नैंन झलक्कझल पानि ॥
बिन बोमत[3] बोल्यौ नृपति । चंद चिंति वर बानि ॥छं०॥४००॥
समझि राज मन मंझ तुअ । ग्रेह निसा मझ्झ[4] बैठि ॥
उलुक अद्ध निसि अंत की । ग्यान सवद्दह दिट्ठ ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

पद्धरी ॥ विग्रह सुदेव नवत नह अग्गि । ढरि अंपि पानि मन चित्तह लग्गि॥
पहिचानि चंद वर धुनिग सीस । सिर नयौ नहीं मन करिय रीस॥
छं० ॥ ४०२ ॥

कवित्त ॥ संभरि नरेस करि रीस । सीस धुनिन धनु सज्जहि ॥
ईहिं मित्त तन चित्त । चित चिंतत सोइ सज्जहि ॥
निकट सुनैं सुरतान । वाम दिसि हथ्थ उंच सौ ॥
जस अवसर सत नंचि । अथि लुट्टहि न करिन भौ ॥

कवि का राजा से कहना कि तू वह वरदान दे जो तूने देने को कहा था ।

दै दान जानि संभरि धनी । उहि गड्डहि तुहि जलहि हवि ॥
दित अदित हंस दोउ उड़हि चलि । इह उप्पर कह करहि कवि ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

राजा का कहना कि मैं नेत्रहीन होकर अब कैसे निशाना बेध सकता हूं ।

दूहो ॥ चंद मंत पुनि जानयौ । एह अवस्थ कवि देषि ॥

(१ मो०—मंडिय सुरुप ।
(२) ए० कृ० को०—नेह ।
(३) ए० कृ० को—बोलत ।
(४) ए० कृ०—मै ।

दिष्टमान[1] सेवे सुकुन । विन दिठ हनै विसेषि ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

वे अंषिन हीनौ सु हों । तूं चव अंषि न चूक ॥
असुर वधों किम बिन सुरह । उर[2] सुर बध्यौ उलूक ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

कवि का कहना कि मैं शाह को बुलाऊंगा आप बचन दीजिए ।

चौपाई ॥[3] तूं राजा समरथ्थ सुजान । सुरग अरथ जानहि सग्यान ॥
अरथी दोष न पूछिय राय । बगसि नरिंद बुलाऊं साहि ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

राजा दनह सुरत्ति सुमेक । घरियार सत्त सर बंधन तेक ॥
अंषि पान मन चित्तव लग्ग । दोइ सुजस तुअ नरपति भग्ग ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

राजा का कवि का अभिप्राय समझ कर शोकित होना ।

दूहा ॥ सुनि कवित्त चल चित्त किय । हय गय भूमि न दब्ब ॥
असमै जो मंगै सुकवि । न्रिपति बिचारिय सब्ब ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

बहु बिचारि चिंते न्रपति । विपति तनह मन अंषि ॥
सर सरीर सुक्रत सुबर । तेजति उड्डहि पंष ॥ छं० ॥ ४०९ ॥
चित चिंतिय मिचह बयन । दह दिसि धूम पयाल ॥
सिर धुनि सीस निषेध करि । लभ्भै चंद सुहाल ॥
छं० ॥ ४१० ॥

कवि का पृथ्वीराज को प्रबोधन कराना ।

कवित्त ॥ अरे नरिंद वा वंध । पिंड कचौ सुर[5] सचौ ॥
अंब तेज संमीर । धरा आकासग पंचौ ॥

---

(१) ए०—मिष्टमान । (२) ए० कृ० को०—उह ।
(३) ए० कृ० को०—तू राजा समरथ्थह धीर । सुरग अरथ जानहि सब वीर ।
(४) ए० कृ० को०—भूप । (५) ए० कृ० को०—सर ।

जरा जोल विद्दयौ । काल आनन सहि पिल्लहि ॥
एतं पषि हं अगप । जंपि सरवर कारि मिल्लहि ॥
उड़ि चलै हंस हंसह सरस । छंडि नेह तन पंजरहि ॥
प्रथिराज आज सोमंत करि । [1]जस नरिंद जिहि उव्वरहि ॥
छं० ॥ ४११ ॥

राजा का कहना कि कवि सो सब संभव है वा असंभव है ।

दूहा ॥ समय सुपंती समय रन । समय भोग सुध जोग ॥
असमैं कोइ न आदरै । क्यौं आनौ संजोग ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

कवि वाक्य कि करतूत लेने को सब समय है ।

कवित्त ॥ अरे नरिंद नर मत्त । कूहकूहं निज रष्षं ॥
कंगुर गोल संग्रह्यौ । [2]काल भष्षै उन भष्षं ॥
काल पग्ग लै जम्म । काल गुरमंच उचारं ॥
विनति वित्त आवित्त । वित्त ते वित्त निहारं ॥
जो होय भेस तौ हाम वल । असमौ समौ परष्षियै ॥
ना रहै देव अहि देव वल । देव दहन हर पिष्षियै ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

राजा वाक्यं ।

दूहा ॥ अरे चंद असमैं समै । परष पुरिष दिग होइ ॥
उहै काल अंतर परै । नर निरवल पष जोइ ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

कविचंद वाक्यं ।

कवित्त ॥ सुनि नरिंद सब धंध । [3]कौन हतौत तुंज नर ॥
जीत वच संजोग । जोग जीवं[4] प्रमान वर ॥
जोग क पानी परत । उठै बुद बुद जोनी जिय ॥
पंच मूल बंध पंच । पंच गो वंधि सम्मि जिय ॥

(१) मो०-जेहि नरिंद जग उव्वरहिं ।
(२) मो.-कालपै उन भषं ।
(३) ए. क. को.-कौन हंतौ तनुजनर ।
(४) ए. क. को.-जिव जंत

इक रहै किति चिंती सुचिंत। चिचनहारी चिंतियै ॥
नचियै सुजोय अवसर बनै। अवसर नञ्चन मत्तियै ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

दूहा ॥ जल जीतन जुग बत्तड़ी। सह बत्तड़ी चकाष्य ॥
बोल रहै धर सष्यियै। बत्त तत्त वह अष्य ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

राजा वाक्यं ।

बार बार मोही कहै। एक वैन सों मान ॥
धाम धरत्ती जो लहौं। तौं अप्पौ तो दान ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

कविचंद वाक्य ।

कवित्त ॥ साठि हजार बरष्य। करत तप पलक चष्य षुलि ॥
गंगा जल महि मच्छ। देषि क्रीड़ंत चित्त डुलि ॥
मानधात पुत्रिका। वरिय प्रारष्थि पचासं ॥
पंच हजार कुमार। जनमि सुकदेव प्रकासं ॥
सो भरी रिष्य राजस रचे। भंति भंति सुष भोगवत ॥
कहि चंद ग्यान उपजि चल्यौ। माया छल तजि सुपन वत ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

षंडीवन प्रजलत। एक पष्पीलक निकसि ॥
जदुपति पेषि पयंपि। पथ सों कथ कपा वसि ॥
इह सुजीव करि जग्य। भयौ षटबार पुरंदर ॥
अजहूं कम्म लगि जोग। फिरत चौरासी अंदर ॥
कहि चंद मत्ति मेटै जगत। कीरति सा दाने बजत ॥
संभरि नरिंद संभरि कितक। ता कारन षिचवट तजत ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

पच पुरातन स्करिग। बहुरि नह चढ पल्लासह ॥
इह सुनि संभरि वार। बहुरि ना भोग विलासह ॥
असमै संभरि वार। प्रान जौ सत सों मुक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-बोध। (२) ए. कृ. को.-तनन वत्तन अथ्थ।

सुजस होय संसार । वान किम पथ्थह चुक्कै ॥
संसार लकाज इस उच्चरत । येही कंठह धवल हर ॥
अवसान गयैं सा पुरिस कौ । लष्यौ जीवो लष्प सर ॥
छं० ॥ ४२० ॥

रे नरिंद सह सुपन । अपन दिष्षिस अस जग्गन ॥
नरक राज किय साज । रंक भौ रज्ज सिकंमन ॥
जीव जंत सह रवनि । पंच मूलह प्रपंच वनि ॥
दिष्टमान विन रहौ । सुवात संसै न करै फ(१)नि ॥
सहदेव विस्न अग्या द्रवन । गति अगति संसौं न करि ॥
सह मुकति हथ्थ किति सथ्थ बंधि । ग्रिहत विना न्त्रिम्मान धरि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

एक वान कंवरी । एक सर एक ससुट्टी ॥
इय गुन विन जें जरै । इष्ष विन काम सु कट्टी ॥
श्रवन चष्षि कर साहि । साहि दिष्प दिसि वांई ॥
स्नूर रंध अरि वंध । चित चिंते वहु नाईं ॥
न्त्रप राज गलह रप्पै सुजुग । जीव दिसा सो सुक्कि वर ॥
न्त्रिप रहै जोंग तन छंडिहां । तन रष्यौ जुग रहन भर ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

श्लोक ॥ उलूको वक्षतो येन । तादृशं क्रियते वलं ॥
अनुसारं सु शब्द न । वाक्यं म्लेच्छाधिपं शृणु ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

चौपाई ॥ हों ससै अंध जम अंध प्रवीन । वैर अंध आतुर मति हीन ॥
अंधा दुष्प न देषै राइ । वगस नरिंद वुलाऊं साहि ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

दूहा ॥ प्रकृत पुरुष क्रिप्पन कहर । काम अंध चिक चिंत ॥
ए पर दुष जानै नहीं । तुं किन जानै मित्त ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

तीन वान चहुआन वर । प्रगट कहै सुलितान ॥

(१) ए० कृ० को०—फुरै तुनि ।

काल ग्रहै संभरि धनी । बर अप्पौ सुहि दान ॥

छं० ॥ ४२६ ॥

पृथ्वीराज वाक्य ।

सुनौ चंद बरदाय बर । कह न्रिम्मै न्रिम्मान ॥
सबद प्रगट गोरी कहै । तौं तुम्भ अप्पौं दान ॥

छं० ॥ ४२७ ॥

कविचंद वाक्य ।

जौ अप्पौ सुहि दान बर । चंद चित्त बहु धीर ॥
तौ न्रिमान सुनि न्रिम्मयौ । जीय नंतत्त सरीर ॥

छं० ॥ ४२८ ॥

आनंदे प्रथिराज जिय[1] । बंध कियौ कवि सथ्थ ॥
हनौं साहि घरियार सौं । उभै इथ्थ मिलि हथ्थ ॥

छं० ॥ ४२९ ॥

जिहि वेधै जग जित्तियै । जिहि वेधै जस होइ ॥
सो विद्धन[2] सोमेस सुअ । किति प्रगट्टै लोइ ॥

छं० ॥ ४३० ॥

हुजाब का कवि को लिवा कर शाह के पास आना ।

कवि बुझ्झवि प्रथिराज कौं । गह्यौ धाय हुज्जाब ॥
सबै रीति किहि राज क्रूं[4] । [5]जुगति सुवथ्थ जवाब ॥

छं० ॥ ४३१ ॥

पद्धरी ॥ साईं या विध आकर्षि जाम । बुझ्झै न कपट हुज्जाब[6] ताम ॥
घरियार घात हुंकार राज । करि फिर्‌यौ कब्बि हुज्जाब ज्वाब ॥

छं० ॥ ४३२ ॥

आए सुपास गोरी नरिंद । बुझ्झयौ अथ्थ घरियार भिंद ॥
बिकस्यौ उअर गोरी सहाव । मानहि सुहीन बलहीन आव ॥

छं० ॥ ४३३ ॥

(१) ए. कृ. को०-तीयन । (२) ए०-दिय । (३) मो०-वेधन ।
(४) ए० क० को०—तौं । (५) ए० कृ० को०- जुगति जुथ्थ जुवाब ।
(६) ए० कृ० को०-चहुआन ।

अग्गा सुदीन घरियोर साहि। दुर पुरष छोरि आनहु सुराहि ॥
घरिआर आज बंधन सुअत्त। कौतिग्ग काज[1] मिलि सब्ब सत्त ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का शाह से कहना कि यदि आप आज्ञा देना स्वीकार करें तो राजा दान देना स्वीकार करता है।

कवित्त ॥ तब सुचंद वरदाय। साहि अग्गे कर जोरे ॥
कृपन गंठि जिमि साहि। राज गंठि न अब छोरे ॥
नट नकोर नहि करहि। जांउ जिहि आस छंडि तब ॥
अद्भुत रस असमान। जाइ सुक्यौ न घनं[2] अब ॥
छंडौ सुलोभ जिय जंम कह। और अतिव अंतर रहै ॥
फुरमान साहि सत्तहि बंधौ। बिन फुरमान न सर गहै ॥
छं० ॥ ४३५ ॥

तत्तार खां का खिझकर कविचन्द को डपटना।

तब ततार झुकि उठौ। भट्ट जीवन पर रूठौ ॥
पातसाहि गोरी नरिंद। अग्गै भयौ झूठौ ॥
सत्त सुभर घरियार। अग्र बिन इक्क न बिद्धिय ॥
मरद सुसुष उच्चरहि। होइ अग्गै जो सिद्धिय ॥
फुरमान साहि तुहि तौ नहीं। जिय चहुआन न होइ काल ॥
इह बाह एह सिंगिन धरिय। ए घरियार न बिद्धि बल ॥
छं० ॥ ४३६ ॥

कवि का पुनः कहना कि यदि शाह बचन दे तो प्रत्यक्ष तमाशा देखलो।

दूहा ॥ जो फुरमानत अप्प सुष। दै तिह बेर हमीर ॥
घर घरियारन बज्जिहै। सर सौ सद्द गँभीर ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

(१) ए० कृ० को०—राज।
(२) ए० कृ० कौ०—बहू।

सपत घात घरियार घन। पंच घात हनि जान ॥
कठन काम गोरी हनन। अप्प देत फुरमान ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
साहि जलाल दुहाइ कहि। जल आनीत निवाज ॥
अप्प देइ फुरमान तिय। सुनै सुमत्तिय राज ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

शाह के शब्द देने पर सहमत होना और घरियार मंगा कर सजाया जाना।

सुनि ततार सुनि रुस्तमी। सुनि निसुरति हुज्जाव ॥
दिल्लियपति सो अप्पिहै। देय साहि जो आव ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ संगि साहि घरियार। दिसित मंडे उत्तर दिसि ॥
सौ कूरम नृपति घरीव। कूरम्म सत अद्ध साहि लिस ॥
सिंधु राग सहनाइ। पंच सद्दावर वद्द ॥
मेघ गज्ज आकूत। बीर नौसानति नद्द ॥
प्रजपत्ति षां षुरसान षां। चाव दिसा न्रिप विंटियौ ॥
चहुआन कलातक जग तपैं। किहि लष्यौ वर मिंटयौ ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

कौतुक देखने के लिये दर्शकों की भीड़ होना।

मोतीदाम ॥
[1]चढि बेगम सघ्य सुगोष हरम्म। चिगजारि न बाल सुवेसन रंम[2] ॥
सुभै थन थान प्रकार निनारि। मनं कूम चित्त चितंत सवार ॥
छं० ॥ ४४२ ॥
सकंगुर सोह कुरंग नयंन। किधौं गिरि कूट ससीक सवंन ॥
सितं सित कंगुर बाल उझक्कि। तिनं मझि नारि नरीर तलक्कि ॥
छं० ॥ ४४३ ॥
चढे वर पुब्ब उकत्ति हरे। मनु दंपति काम कलास धरे ॥
विकसंत नरी नर कित्ति मुहं। मनु अंक रका दिन अद्ध सुहं ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

(१) ए० कृ० को—चढ़ि बेग हरम्म सुगोष हरम्म।
(२) ए० कृ० को०—सुकेसन रम्म।

चिंह पास भुवंन हूरंम रजै।[1] छरियं हथ मंजु सुव्रन्न छजै ॥
मनु दैपन राज तमास गुरो। ससि सूर अप सन सुष्प जुरी ॥
छं० ॥ ४४५ ॥

उड़ि धूम बजी विषमं पवनं। परियौं दस मंदरवार मनं ॥
छं० ॥ ४४६ ॥

तत्तारखां का कहना कि आज जुमारात है आज रहने दीजिए।

दूहा ॥ देषि भूप नक पून वर। षां ततार कहि भांति ॥
आज रष्षि साहाव वर। पर्यौ दिवस जमांरति ॥
छं० ॥ ४४७ ॥

तत्तार खां का शाह से अपने स्वप्न का हाल कहना और समझाना।

कवित्त ॥ बोलि षान तत्तार। साहि सपनंमर अक्कहि ॥
अद्भुत चरित मैं दिट्ठ। सीस दिट्ठी न षोज लहि ॥
प्रहसार संसार। पीर पैगंवर रुट्ठं ॥
विन बद्दर उम्मरौ। मेघ आकूत सु वुट्ठं ॥
वर स्वान सिंघ जंबुक सयन। हरसिद्द बीबी झग्गरी ॥
पंजरत बारपट्टन सकल। अकल किित्त सम्हौ लरी ॥
छं० ॥ ४४८ ॥

दूहा ॥ सेत वस्त्र कत्ती रही। मों विंटे तिनि वार ॥
औ रन मुक्यौ दिष्षियै। राज निहि वड़सार ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कवित्त ॥ कहै षान तत्तार। साहि दुल्लभ मनुच्छ जम ॥
वार वार पावै न। बहुरि अवतार राज क्रम ॥
छिन मैं देह भजंत। प्रान धरिजै इह धत्त ॥
वर कोटर घरियार। उत न बट्ठे जुध तत्त ॥

(१) ए० कृ० को०—छरि हथ्थ सुव्रन्न सु हथ्थ छजै।

इह देह जतन करि पारियै। कहै पीर पैगंवरह ॥
षल भट्ट तद्दिन निधि अष्ष वह । सुनौ साहि कहि उम्मरह ॥
छं० ॥ ४५० ॥

छिनू वार धरि भेष । इंद्र हरि जात जग्य यह ॥
अश्ववाजीत कुँवार । कोपि मारंत षग्ग लग्र ॥
प्रथुराजा पहिचानि । आनि ग्रह मध्य सुमंडिय ॥
करे रूप तिन सहित । जियत सुरपति को छंडिय ॥
मघवान लाज लुप्पि न सकिय । कलियुग कारन रष्षए ॥
तत्तार कहत पतिसाह सों । ते प्रगट्ट अप पिष्षए ॥
छं० ॥ ४५१ ॥

शाह का कहना कि मैं तो अब कहा हुआ बचन नहीं पलट सकता ।

दूहा ॥ सुनौ षान ततार इह । गुर गरहां इत तत्त ॥
जु कछु बत्त मुष कढ्ढियै । करैं बनैं सुनि मित्त ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

उवन सूर संभरि अवन । न्त्रिप चिंती करतार ॥
उदति दीत[1] दो पंजरह । हंस सु उड्डन हार ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

कवित्त ॥ जीव सिंघ आसिंघ । सींह उज्जंत[2] तत्तनय ॥
या फुरमान अपीस । वाच चंदन वर दानय ॥
जोइ सिंघ आसिंघ । राज सिंघं नन जानं ॥
बच्च सिंघ सो सिंघ । सेन सिंघसि पुनि पानं ॥
छचीस अम्म छची धरै । वचन भट्ट जंपै लिया ॥
देहंन छीन अग्गै सया । भग्गै सा पंचन चिया ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

(१) ए० कृ० को०—दीव ।
(२) ए० कृ० को०—उज्जत लत ।

तत्तार खां का खिझकर दरबार से उठ जाना।

रूकि ततर षां उट्ठि। हाथ सिर झारि सीस धुनि॥
बर सुक्के दरवार। गई सुरतान मत्ति फुनि॥
विधि विधान नृस्सान। मत्ति छुट्टी पैगंबर॥
बोलि षान षुरसान। दिष्षि तत्तार भिस्ति घर॥
कविचंद राज चहुआन पै। सर अदभुत उच्चार पिय॥
घरियार एक सत सर इकै। बर बर बद भारे सरिय॥
छं० ॥ ४५३ ॥

शाह का कवि को पान देना कि हमने दिया तुम राजा से मांगो।

दूहा॥ उहै दैन न्रप्पति कह्यौ। उहि मंग्यौ फुरमान॥
सु कविचंद सरसें मिलै। पानि साहि चहुआन॥
छं० ॥ ४५४ ॥

कवित्त॥ भयौ चंद मुष चंद। दंद गय काम सपत्तौ॥
पाति साहि गोरी नरिंद। दियौ बोल निरत्तौ॥
तब्बहि चंद बरदाइ। बहुरि राजन पै आयौ॥
जु कछु तंत को मंत। अंति कहि कहि समझायौ॥
मैं दियौ दान चिंता न करि। छोड़ चंद सद्दे निरति॥
फुरमान कज्ज अग्गें धरौ। देहि साहि मंग्गे न्रिपति॥
छं० ॥ ४५५ ॥

कवि का राजा को लिवा कर रंगभूमि में आना।

पद्धरी॥ कवि चल्यौ राज प्रथिराज लेन। मिलि चले सुरथ सुर सवें गेन॥
बुझझवै राज लै चल्यौ भट्ट। उम्मरा[२] मीर सब मिले थट्ट॥
छं० ॥ ४५६ ॥

जान्यौ सुअंत प्रथिराज अप्प। किन्नौ जुगत्ति द्रुग्गा सुजप्प॥

(१) ए० कृ० को—वेद। (२) मो०—उमराव।

रोमंच अस्त्र उभ्भार अंग । हरंत अग्नि बव्यौ सुरंग ॥
छं० ॥ ४५७ ॥

चहुआन तेज देष्यौ अनूप । तिस भयौ[1] हित्त सुरतान रूप ॥
भुज धर्यौ चंद कवि चाहुआन । उल्लस्यौ सीस सजि आसमान ॥
छं० ॥ ४५८ ॥

सुरतान निजरि चहुआन आन । भैभीत कालसह सथ्थ जानि ॥
आकूत बर्जि वर क्रिसल बाग । जानयौ सथ्थ न्रिप वर विभाग ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

प्रथिराज सब्ब देष्यौ सु[2]आव । अंतक्क रूप सवगुन सहाव ॥
रुव्वयौ राज मधि[3] रंगभोम । कौतिग्ग सब्ब देषंत व्योम ॥
छं० ॥ ४६० ॥

संवत अट्ठावन माघ मास । अनसित्त पष्ष दसमी सुभास ॥
दिन घटिय पंच पल आदि जात । तारक्क मूल चिव तिथ्य पात ॥
छं० ॥ ४६१ ॥

प्रथिराज आनि मधि रंगभोम । साहाब उंच गहकंत व्योम ॥
घरियार घात बंधे समुष्य । पठई कमान साहाब पुष्य ॥
छं० । ४६२ ॥

हुजाब का राजा के हाथ में कमान देना और राजा का कई कमान तोड़ देना ।

कवित्त ॥ प्रथम राज कम्मान । आनि दिन्ही हुज्जाबं ॥
गहिय राज चहुआन । तानि भंजीं तर आवं ॥
अवर आनि कम्मान । सोन बलराज समानं ।
इम भंजिय दह पंच । अतिहि काठिन्य कमानं ॥
उच्चर्यौ षान मीरान इम । हयौ तात हम जेन रन ॥
अच्छै कमान हम ग्रह गरुअ । सोइ समप्पौ साहि इन ॥
छं० ॥ ४६३ ॥

(१) मो०—तिन्नयौ । (२) ए० कृ० को०—सु ।
(३) ए० कृ० को०—अंग ।

कवि का कहना कि राजा का निज कमान दिया जाय यही बहुत है।

चवै चंद बरदाइ इम । सुनि मीरन सुरतान ॥
दै कमान चौहान कौं । साहि दियै कछु दान ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

राजा को हुजाब का वही कमान देना और तत्तार का पुनः कहना कि यह तमाशा न देखो इस में मारे पड़ोगे।

कवित्त ॥ असद सुअन कम्मान । आनि दीनी हुज्जावं ॥
निरषि ताम गोरी नरिंद । तत्तार सितावं ॥
अति प्रमान उत्तान । भार अनभूत इष्षि वर ॥
गुन गुरान घन प्रान । टंक पच्चीस जोर जुर ॥
इष्षे विसाहि आचिज्ज मन । दैन राज प्रसंस किय ॥
उच्चरयौ ताम तत्तार तमि । धुन्नि सीस क्रत कंपि जिय ॥
छं० ॥ ४७० ॥

अहो साहि साहाब । सुनौ अरदास चित्त हर ॥
अरि हू[1] इहै आरिष्ट । दिष्षि अनभूत तेज नर[2] ॥
इह कमान उत्तान । जोर जुत्तान समानं ॥
नन दीजै या हथ्थ । चिंति प्राक्रम्म पुमागं[3] ॥
कम्मान[4] याहि संगह सजै । सु जनु नाग लड्डिय मनी ॥
सम पंष चिलह संगह मिलै । चिंति काल क्रत अप्पनी ॥
छं० । ४७१ ॥

काल व्याल दसा कराल । समपंष कोप सम ॥
ता आनन अंगुरी । कोइ मेलै सुमंत क्रम ॥
आय अभुत्त[5] उम्मरा । सोम पष्षलि सब सज्जै ॥
क्रोध सज्जि करिवान । मत्त मारहि[6] विन कज्जै ॥

(१) ए० कृ० को०—जु । (२) ए०—तर ।
(३) ए० कृ० को०—प्रमानं, पुरानं । (४) ए० कृ० को०—प्रम्मानं ।
(५) ए० कृ० को०-या अमुत्त । (६) ए० कृ० को०—मारन ।

कवि का कहना कि राजा का निज कमान दिया जाय यही बहुत है ।

चवै चंद बरदाइ इम । सुनि मीरन सुरतान ॥
दै कमान चौहान कौं । साहि दियै कछु दान ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

राजा को हुजाब का वही कमान देना और तत्तार का पुनः कहना कि यह तमाशा न देखो इस में मारे पड़ोगे ।

कवित्त ॥ असद सुअन कम्मान । आनि दीनी हुज्जावं ॥
निरषि तास गोरी नरिंद । तत्तार सितावं ॥
अति प्रमान उत्तान । भार अनभूत इष्पि वर ॥
गुन गुरान घन प्रान । टंक पचीस जोर जुर ॥
इष्पे विसाहि आचिज्ज मन । दैन राज प्रसंस किय ॥
उच्चर्यौ तास तत्तार तमि । धुन्नि सीस क्रत कंपि जिय ॥
छं० ॥ ४७० ॥

अहो साहि साहाब । सुनौ अरदास हित्त हर ॥
अरि ह्व[1] इहै आरिष्ट । दिष्षि अनभूत तेज नर[2] ॥
इह कमान उत्तान । जोर जुत्तान समानं ॥
नन दीजै या हथ्थ । चिंति प्राक्रम्म पुमानं[3] ॥
कम्मान[4] याहि संगह सजै । सु जनु नाग लड्डिय मनी ॥
सम पंष चिल्लह संगह मिलै । चिंति काल क्रत अप्पनी ॥
छं० । ४७१ ॥

काल व्याल दसा कराल । समपंष कोप सम ॥
ता आनन अंगुरी । कोइ मेलै सुमंत क्रम ॥
आय अमुत्त[5] उम्मरा । सोम पष्पलि सब सज्जै ॥
क्रोध सज्जि करिवान । मत्त मारहि[6] बिन कज्जै ॥

(१) ए० कृ० को०—जु । (२) ए०—तर ।
(३) ए० कृ० को०–प्रमानं, पुरानं । (४) ए० कृ० को०--प्रम्मानं ।
(५) ए० कृ० को०-पा अमुत्त । (६) ए० कृ० को०–मारन ।

वच्चै सुसाहि तत्तार तुअ । सम करि चिंत ततार जुअ ॥
विन नयन वान इच्छै गुनै । सो नन विद्वै घात तुअ ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

संकर वद्धयौ सिंघ । ताहि पोलिय रस पिल्लै ॥
कौन सुग्ग जग्गावै । कोप करि तासम पिल्लै ॥
याहि न रष्यौ साहि । रीस वट्टै सुरत्तन ॥
याहि न पेषौ निजरि । याहि नह मिलियै वत्तन ॥
पल दुष्ट एह चहुआन कौ । सम करि संग कमान ग्रम ॥
क्रित दुष्ट भट्ट संगह सज्यौ । जौ घन बुझ्झै मति मरम ॥
॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवि की उक्ति ।

तवहि साहि साहाव । हुज्जाव हजूर सदि ॥
दिय कमान तिहि हथ्थ । देहु चहुआन वाच वदि ॥
काल कला किय प्रान । तन्न वुझ्झिय सोह मन ॥
दिय दिल्लेसह पान । धरयौ जीवंनि साहि जन ॥
हिकमति अनेक वंचत कहत । जु कछु सांई न्निस्मान सुधि ॥
मेटैं न मिटै हाकिम हसम । वल अनेक जो करै वुधि ।
छं० ॥ ४७४ ॥

राजा का अपनी कमान पाकर परम प्रसन्न होना और निसुरत्त खां का राजा के हाथ में तरकस भी देना ।

पद्धरी ॥ संगहे पान कम्मान राज । उम्भरे अंग अंतर विराज ॥
आलिंग वुंवि उर चंपि अप्प । वढ्ढेव तेज तामंस दप्प ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

कर धरे स धनु आनंद चित्त । विछुरयै मिलयौ चिरकाल मित्त॥
कम्मान राज मिलि तेज ताय । अरि मंझि विंटि मिलि मनु सहाय॥
छं० ॥ ४७६ ॥

आवरे सूर अंगह असेस । मन ब्रिद्ध ब्रिद्धि वामन विसेसि ॥
तन जग्गि रोम उभ्भारि वीर । लग्गिय सुतप्प मन पास नीर ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

आवृत्त वरन सम किरन बैन । प्रवलष्य सप्य पारस्स नैन ॥
भरकंत अधर थरकंत बाह । संतक्कि छूर मंडल सुराह ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

चिंतै सु इष्ट मन जंपि जाप । तामंस तेम तन-तेज ताप ॥
कर रोहि पान धारै कमान । गुंधरै गयन धुंधरि दिसान ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

भ्रिष दाह विषम समवहि समीर । संपात चक्र उलका सभीर ॥
आसंन घट्टि सिखिअंत साहि । बुझ्झै न मोह मतिमंद ताह ॥
छं० ॥ ४८० ॥

आमूढ चित्त उस्सरा मीर । टगटगिय लग्गि अंतर उरीर ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अपार । ढंकेव मोह मैं काल भार ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

सनमुष्ष आनि सज्जे घरयार । भुअ पान असिय न्त्रिप अंतरार ॥
चढ़ि उंच कज्ज कौतिग हरस्स । सम बाल वृद्ध सज्जे सरस्स ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

उच्चर्यौ राज सम चंद ताम । मंगहु सु वान सस करि बिराम ॥
बरदाय साहि अरदास कीन । न्त्रप देहु बान कौतिग्ग चिन्ह ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

तब साहि ताम बच्च्यौ अभीर । निसुरत्ति देहु तरकस्स तीर ॥
निसुरत्ति आनि दिय साहि हथ्थ । तरकस्स तीर गोरी गुरथ्थ ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

राजा का कमान लेकर उसे संधानना, कविचंद का राजा को ज्ञान समझा कर दृढ़ता देना।

कवित्त ॥ ग्रहिय तीर गोरीस । कीन चिन इच्छ अप्प कर ॥
कोल अंत पल प्रेम । बुद्धि भग्गिय समोह भर ॥
दिषि नंष्यौ दिल्लीस । धरिय सज्जै सु सीस कवि ॥
कर दीनौ चहुआन । प्रान बद्ध्यौ सुईस तब ॥
तामंस रज्ज तन ताम तन । घन बीरत्त उभार भर ॥

सुरतान प्रान कारन प्रलय । जनु जम सज्ज्यौ दंड कर ॥
छं० ॥ ४८५ ॥

दूहा ॥ लगी टगटगी सोहि तन । अरु क्षत लग्गे मीर ॥
क्रित्त[1] रूप सुस्स्यौ व मन[2] । मदिय[3] घटी अति भीर ॥
छं० ॥ ४८६ ॥

ग्रहिय चंद दीनौ न्रपति । धर्‌यौ पानि प्रथिराज ॥
चंपि अग्र सुप सलित किया । कारन काल अरि काज ॥
छं० ॥ ४८७ ॥

इल घसि पानि पवित्र किय । सिंगिनि सर गुन बंधि ॥
चरचि चंद सुषचंद भय । मिलिय राज मन तंधि ॥
छं० ॥ ४८८ ॥

ख्रित सुधरै सब सुद्धरै । कहै राज अब धारि ॥
सुर नर सुनि वर जात सब । राजन सरन सुधारि ॥
छं० ॥ ४८९ ॥

कवित्त ॥ वचन सच्च तन कच्च । सिद्धि साधक इम अष्षय ॥
वापी कूप तटाक । देव सुर नर ख्रित भष्षय ॥
पंच तत्त किय पिंड । तथ्थ षोडस आधारं ॥
सुनि मंडल षट चक्र[4] । वाय मंडल अधिकारं[5] ॥
चिह्नै जु काल सिर उप्परै । कहि चंद तेन पटंतरै ॥
प्रथिराज नृपति धीरज्ज धरि । बोल राषि कलु अंतरै ॥
छं० ॥ ४९० ॥

चंद्रायना ॥ वात सबै प्रथिराज सुनी । सर इक्कै आईय ।
सर चुक्कै नृप पाछलौ । सामूर गमाइय ॥
कोरि पवारा[6] किद्वतें । अरि भंजे जट्ठ ॥
इहि सर आइ विलंबियौ । नहीं तर सह गट्ठे[7] ॥ छं० ॥ ४९१ ॥

(१) ए० कृ० को०-चाकित । (२) ए०-वंसन ।
(३) ए० कृ० को०-भइय ।
(४) मो०-चत्र । (५) ए० कृ० कौ०-पंठवर ।
(६) ए० क० को०-कौड़ि पवाड़ा ।
(७) ए० कृ० को०-नइ तरु गड्डे ।

दूहा ॥ कहि राजन मंहि संडलै । निसिपत्ती रवि सष्य ॥
जौ मारै सुरतान कों । सकल चाव तौ रष्यि ॥
छं० ॥ ४९२ ॥

सुनि राजन कविचंद कहि । षेल एक इह षेलि ॥
करि धीरज मारे बनै । रज पाछिली उवेलि ॥
छं० ॥ ४९३ ॥

वेली बहुरि न पाइहै । इहै जानि तुम बात ॥
दिल्लीपति जुग जुग अमर । उग्गारौ[१] अषियात ॥
छं० ॥ ४९४ ॥

कवित्त ॥ अहंकार मद मोह । लोभ माया घटि लग्गी ॥
काम क्रोध भय चिषा । पुधानीयं तन जग्गी ॥
दुष सुष बंध्यौं जीव । दुय्य अंतर सुष पावै ॥
सुष अंतर दुष होय । निगम सुर नर इम गावै ॥
सुष दुष रहइ घटिकासु जिम । राजन एह परंपरा ॥
करि सग्ग अचल संभरि धनी । गयौ जाबन आईय जुरा ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

राजा का कहना कि मित्र अब वह पुरुषार्थ नहीं है क्या करूं ।

दूहा ॥ अंषि विनट्ठी हीन मति । हुअ पुरषातन मंद ॥
सुग्रह सुट्ठि द्रिढ़ न रहै । क्यों मारहु कविचंद ॥
छं० ॥ ४९६ ॥

सिर तुट्टै षत्रिय न्रिपति । अरियन गहि दावंत ॥
गयन गज्ज सुनि सिंघ जिम । तलपि[२] तप्पि जिय दिंत ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

श्रवन सबद जौ संभरौं । अरिमुष बोलै सोइ ॥
तौ मारों कविचंद जौ । वह कमान बल होइ ॥
छं० ॥ ४९८ ॥

[१] ए० कृ० को:-उच्चारौ । (२) मो०-तलपि तप्पि जिय दंति ।

कवि का कहना कि तुम बाण संधानों में तुम्हें वैसाही न करूं तो कवि नहीं।

सह तीन सुरतान के। श्रवन सुनाऊं तुक्ख ॥
सोइ कमान सो वल करहुं। तौ जानै कवि सुक्ख ॥
छं० ॥ ५०० ॥

पुरुप बोल इक्कै कहै। वार वार वच दोप ॥
धरि धीरज मैं प्रथम कहि। साहि बुलाऊं सुप्प ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

कवि का राजा को पुनः समझाना और उत्कर्ष देना।

बुद्धिहीन फिरि फिरि वुझै। श्रम छंडिय धरि धीर ॥
श्रप्प सवारथ लेहि दै। परम तत्व गहि तीर ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

श्रप्प मरन सब कौ दियै। सज्जी जीय धरंत ॥
संभरेस कविचंद कहि। विरले मार मरंत ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

अरिग्रह जौ वासुर वसै। श्रप्प सुश्रारथ काज ॥
सो जीवत न्रप म्रतक सम। गत मजाद गत लाज ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

जौ पिच्छिय अरि सबद सुनि। जोइ लाज छोरंत ॥
ता जननी को दोप न्रप। कछुक जाति मति खंति[१] ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

तो तन सब सज्जिय न्रपति। सबद वेध श्रौ हाथ ॥
अरि रोपै घरियोर अप। मारि अमाने वात ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

सर फुट्टा बिन मास मति। वल पौरुष पड़ियोह ॥

(१) ए०-खंति।

झुकार ज्यों अरियन तनी । पापत खप्पडि योह ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

कवित्त ॥ पवन संधि धरि ध्यान । मंडि छल बल[१] करि भूपति ॥
जल थल महिल सुझंति । रहै सु सबद देवंगति ॥
इन पहिली किहि विजै । घरी ऐसी नह पाइय ॥
इह बासुर इह जास । तुरुक्क बपतें इह आइय ॥
दिढ़ राषि जीव संभरि धनी । सो संठी अरिसुष जड़ी ॥
सामंत नाथ कविचंद कहै । रहै जुगे जुग बत्तड़ी ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

पृथ्वीराज का उत्तेजित होकर कहना कि मैं शत्रु को अवश्य मार गिराऊंगा ।

दूहा ॥ लग्गा बोल सु लग्गना । घट उट्ठी घन अग्गि ॥
उस सेवर सुष बुल्लयौ । नृप गय नंगन खग्गि ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

चंद्रायना ॥ तो जानै कविचंद मौ सुष तीर लगाउं ।
गंग धरन रवि चंद खग्गि कलि बोलि रहाउं ॥
इह बासुर बेला घडी हौं बहुरि न पाउं ।
ताराइन जिम तूट तौ अरिधरनि धुकाउं ॥
छं० ॥ ५१० ॥

कवि का पुनः राजा को उत्तेजित करना ।

दूहा ॥ बार बेर असपति ग्रहिय । सब नृप लग्गे पाइ ॥
तुअ भुज बल अचरिज्ज कह । अब इह मारि गिराइ ॥
छं० ॥ ५११ ॥

कवित्त ॥ जस काजें कलि कन्न । भार सोव्रन नद अप्पौ ॥
सिवर कप्पि अप्पयौ । सीस जगदेव समप्पौ ॥

(१) ए० कृ० को—छरकर ।

विक्रम राव नरिंद। कट्टि पर दुप जस रुत्तै ॥
राजा रावल राव। सुजस कारज पपि चल्लै ॥
पायो न दूसौ तिनह' सुजस। कह्यौ चंद सों दिट्ठइय ॥
नर एक बीच दुरयो सुजस। डारि तीर किन कट्ठइय ॥
छं० ॥ ५१२ ॥

दूहा ॥ सुरतानह सुर सुवद दै। अब मिलि छथ्य कमान ॥
अब सूरप किं सोच मन। समक्ष संधि चहुआन ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

पृथ्वीराज वचन।

फेरि राज इह वत्त कहि। वरदिय दै वर कान ॥
हनौं साहि घरियार सों। जो अप्पौ विय बान ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ एक बान चहुआन। राम रावन उथप्पे ॥
एक बान चहुआन। करन सिर अर्जुन कप्पे ॥
एक बान चहुआन। त्रिपुर सिर संकर बिद्धिय ॥
एक बान चहुआन। भ्रमर लष्यन पारद्धिय।
सो एक बान संभरि धनी। बियो बान नए मुक्कियौ ॥
घरियार एक इक सुग्गरिय। एक बान नृप चुक्कियै ॥
छं० ॥ ५१५ ॥

पृथ्वीराज वचन।

दूहा ॥ कहै राज कविराज सुनि। मो वल सकति अपार ॥
अप्पै संभरि धीरहर। सत्त हनौं घरियार ॥ छं० ॥ ५१६ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ द्रोनाचारिज पास। बान विद्या पढ़ि पंडव ॥

परिक्रम पारष्य । लोह सै वष्प सु मंडव ॥
साधा सत्ताईस । सवा लष पच्च लोप प्रति ॥
पच्च पच्च परिमान । भार मन सवा लष्य धृति ॥
जिहि बान संच अरजुन तन । धनुष प्रंचि जंपिय सुबल ॥
कविचंद कहत प्रथिराज सुनि । पच्चि पच्चि छेदिय सकल ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

कविचन्द का राजा को समझाना कि सात नहीं एक को वेध ।

अरिल ॥ तिहि अर्जुन समान तूं रज्जन । जौ सर संधि हनै पति गज्जन ॥
सत्त घरयार तनौ अचरज्जन । अपरिज प्रान मान सम लज्जन ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

कवित्त ॥ इक्क फोरि संभरी । सत्त फोरै जस नासय ॥
ते दीहा संक्रमै । जे अंग सलयो गिर बासय ॥
[1]सिर हरयो भंपरै । उरह अरि समौ न बुझ्झै ॥
सूझौ न जीवे कोइ । मोहि परसप्पर सुझ्झै ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । वेहौ कंधै धवलहर ॥
औसांन न बुझ्झो रे हिया । इक्कन फोरै इक्क सर ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

पच्चि होय परधान । षाय षंडौ दिषलावै ॥
साह होय परधान । भरै घर राज थँभावै ॥
कायथ होय प्रधान । अहो निस रहै पियंतौ ॥
बंभन होय प्रधान । सदा रष्षवै[2] अचिंत्यौ ॥
नाई प्रधान कीजै नहीं । चंद बिरद सच्चौ चवै ॥
चहुआन बान गुन सट्ठवै । सम चुक्कि सोटै तवै ॥
छं० ॥ ५२० ॥

जेन बान आरष्थ । वाय पुत्तह पग बिंधयौ ॥

(१) ए०–सिर हयोप झंपै । (२) ए०-दष्पवै ।

जेन बान श्रियरथ्थ । धरा उप्पर हदि संध्यौ ॥
जेन बान भारथ्थ । ग्रहे कौरव कुल घोयौ ॥
षरदूषर ताड़िका । तास सुष श्रंत समोयौ ॥
सुरतान प्रान तिन बान गहि । सु कविचंद सचो चवै ॥
सोई जवान तुश्र कर चढ़ै । मम चुक्कि स मेटै तवै ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

श्लोक ॥ मादृहे चित्त पुरानानि । नीति कालानि संचये ॥
अप्पर बान बानानि । किं प्राण मुक्तन शंसए ॥ छं० ॥ ५२२ ॥

कवित्त ॥ संभरि नरेस करि रीस । सीस धुन्नहि नह संकहु ॥
चलहु चित्त नह करहि । मोहि अच्छरि मन अंकहि ॥
उत्तसंग कर असिय । वाह उप्पर बासन्नहि ॥
सैल वत्त संचरै । राय ध्रुअपति सब सुन्नहि ॥
सुरतान षान गुर ग्यान गहि । गुर अच्छिर चंदह भनिय ॥
सुक्कहि नसत्त सर सत्त कह । तूं सामंत सूरन धनिय ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

प्रथीराज कम्मान । बान दृढ़ मुट्टि गहिय कर ॥
जिन विसमौ मन करहि । करहि ध्रुअपत्ति अप्पु वर ॥
जु कछु दियौ कैमास । कियौ अप्पनो सु पायौ ॥
सोइ संभरिय सहाय । तुहिज अम्मरपुर आयौ ॥
विधिना विधान मेटै कवन । दीनमान दिन पाइयै ॥
सर इक्क फौज संभरि धनी । सत्तह जुग्ग रहाइयै ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

कवि के इशारे पर राजा का शाह की तरफ मुख करना ।

गिरनारा लगि गौड़ । देस जीता जंगल थल ॥
लंका गढ़ जित्तयौ । समद जित्तौ उर सलियल ॥
हथिना वर जित्तयौ । सीम कंधारा वंधिय ॥
मथुरापुर जित्तयौ । एक सुष धारन संधिय ॥

प्रथिराज सुनवि संभरि धनी । सुष्हिनैही मम जानि सुप ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । सजि जालंधर देस सुप[1] ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

दूहा ॥ जल बिन मद्दलु[2] भट्ट सें । करि घप्पहि सुप वन्न ॥
परम तत्त सुक्स्यौ न्नपति । मंगहि फुरमानंन ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

पृथ्वीराज का कमान ले सन्नद्ध होकर शाह के हुक्म की प्रतीक्षा करना ।

पद्धरी ॥ फुरमान मान मंग्यौ सु चंद । चपहु अति अंध चप भइय इंद ॥
ठगठगिय लगी बुधि भगिय साहि । फुरमान दियौ मनों कारज गाहि
छं० ॥ ५२७ ॥

कवि का डमरू बजाकर शाह से हुक्म देने के लिये प्रार्थना करना और राजा को उत्कर्ष देना ।

दूहा ॥ मानि न्नपति वरचंद कहि । डंवरू गहि वर हथ्थ ॥
महि सथ्थै गोरी सु वर । कहि कहि जंपि सु अथ्थ ॥ ५२८ ॥

कवित्त ॥ हुंकारै सु गिरद्ध । राम जल सायर बद्धौ ॥
गिर तोल्यौ हनवंत । देव हुंकारै दिद्धौ ॥
हुंकारै लषिमन्न । अवर गय नंगन पार्यौ ॥
हुंकारै कलि क्रन्न । मेर चिट अंगुलि चार्यौ ॥
चहुआन रान संभरि धनी । बढ सुबान तुअ कर लह्यौ ॥
छेदै न तीर सत्तह तवै । असपति हुंकारौ दयौ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

बादशाह की आज्ञा से पृथ्वीराज का सर संधानना और कवि का बिरदावली पढ़ना ।

हुकम साहि गोरी नरिंद । अप्पै फिरि दीनौ ॥

(१) मो०-सुप । (२) ए०-भट्टहि ।

वान सु वर प्रथिराज । काज आपनै सु लीनौ ॥
तब पढ़ि बीर नरिंद । छंद बिरदावलि पुब्बह ॥
सुनत भयौ ज्यौं नाग । नाग नंतर सुनि तब्बह ॥
आवद्दात पोर लभ्भय नहीं । जीहा सेस सहस कहि ॥
लवलेस मात्र कारन भनहु । छंद पद्धरिय जत्ति सहि ॥
छं० ॥ ५३० ॥

पद्धरी ॥ जित्तन जुद्ध गोरी नरिंद । पुरसान जीति गति करिय मंद ॥
आरत्त साल भजि मत्ति जीत । दिष्पियै रूप भै भै अभीत ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

जुलि जन्न जोग तुंही नरिंद । नष्ययो भीम उड़ि सूर दंद ॥
बंधयौ आप रथ[१] जुत्त बीर । जिहि बध्यौ तिमिरलिंगत्त मीर ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सुर जीति असुर सुर भौ प्रमान । सत समद वाच दिट्ठतु बषान ॥
चहुआन बंधि तिहि कियौ बंध । पुज्जौ जु साहि जिन पुट्ठि सुद्ध ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

चढ़ि जंग पंग जिहि भंग कीन । परवत्त पारि जिहि हेम लीन ॥
पिंदवान हद्द परवत प्रमान । तहां लग्गि कीन सुरतान आन ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

पुरसान हथ्थ नष्यौ पिछान । गजपत्ति बंधि कै बेर आनि ॥
पुरसान मीर पसु सम सतीन । सौ सूर जीत चतुरंग कीन ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

सुरतान टेक ढाहे सुपास । अदभुत चरित्त सुक्कै न गास ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

शाह के हुंकार देने पर राजा का उसके तालू पर निशाना लक्ष करना ।

दूहा ॥ बधन घरी चहुआन पै । बचन समप्पै साहि ॥
चित्त तोस तालुक रषि । सब्ब[२] संपत्तौ आय ॥ छं० ॥ ५३७ ॥

(१) ए० कृ० को०-नथ ।　　　(२) ए० कृ० को०-सच्च ।

पहिले हुक्म पर राजा का सर संधानना, दूसरे पर चढाना और तीसरे पर शाह का तालू वेध देना।

हनूफाल ॥ सुरतान अग्ग प्रथिराज । जनु मत्त मद गजराज ॥
बिन चष्प उभ्भौ मेर । चिहु कोद अरिगन फेर ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

कपि घटिय पान ततार । कविचंद बैन उचार ॥
कर करषि न्रप कोवंड । धर धरनि थर ब्रह्मंड ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

दिव देव जै जै बैन । व्योमान सुरछरि ऐन ॥
करि करपि धनु पर बान । सुत सक्र पानि प्रमान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

कहि चंद जंपत साहि । फुरमान धरहु सु वाहि ॥
लुप उच्चरै सुरतान । मैं देउं तिय फुरमान ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

सै अंग साहि जलाल । लुप उच्चरै सद आल ॥
फर फरकि उट्ट फराल । जनों सुपत गजवत काल ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

फिर चंद राजन पास । इक बान इक घरियास ॥
फुरमान इक भय साहि । सुनि सबद श्रवन्न चाहि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

भय उभय बर फुरमान । इक इष्प धनु कर कान ॥
सुनि चतिय बैन अतिंत । सुरतान भूमि पतंत ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

वरषंत अंबर ऐन । पहु पंजली बर गेंन ॥
सुर सूर सुरपति सोषि । दिन प्रबल प्रथुपति आषि ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

सुरतान गौ हरि साज । भिन करै आतम राज ॥
चहुआन भर सुरतान । इक जोति मद्धि समान ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

नव बाक नव रस छंद । सरसे मिले कविचंद ॥
छं० ॥ ५४७ ॥

दूहा ॥ चिंतिय साहि फुरमान सुप । जिम कह्यौ सुर काल ॥
हन्यौ तांमि प्रथिराज तमि । वचन वचन सुप ढाल ॥
छं० ॥ ५४८ ॥

कवित्त ॥ भयौ एक फुरमान । वान जोगिनिपुर संध्यौ ॥
सोइ सब्द अरु वान । अग्र अविचल करि बंध्यौ ॥
भयौ वियौ फुरमान । तानि रष्यौ श्रवनंतरि ॥
तियौ भयौ अनभयो । पर्यौ पतिसाहि धरंतरि ॥
तैं दलन रसन तालुअ सघन । सोस फट्टि दह दिसि गवन ॥
सुरतान पर्यो पां पुकरै । भरौ चंद राजन सरन ॥
छं० ॥ ५४९ ॥

शाह के प्राणहीन होकर गिर पड़ने पर कवि का राजा का हठयोग द्वारा प्राण त्याग करने को कहना।

दूहा ॥ सिलक वेधि फट्टिय प्रथुक । नयन तोल श्रुति सन्नि ॥
लवन कंठि किद्धिय विकल । टग्यो साहि सम धुन्नि ॥
छं० ॥ ५५० ॥

पर्यौ साहि धर देपि कवि । समझायौ नृप जाग ॥
आसन बंधि उलट्टि चक्क । छंडि प्रान उद्दलोक ॥
छं० ॥ ५५१ ॥

राजा का कहना कि यह मुझसे कैसे होसकता है।

तब राजन कविराज सौं । कहै भेद पर ग्यान ॥
राजस विच सातुक करन । क्यों आवै कवि जान ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

शाह के मरने पर महा हाहाकार होना।

कवित्त ॥ परत धरनि सुरतान । षान मिलि षलक पिट्टि सिर ॥
मैं बरज्यौ बहु बार । साहि दुसमन असंघ बर ॥

भवन भोग रहि जोग। पाल ग्रायौ रत तुम्र हरि ॥
बचन विहि तिहि सिद्धि। लियौ गोरी नरिंद हरि ॥
तिन मझ्झ भट्ट टूकह करी। तब तु साहि गोरी धरी ॥
हिंदवान पान इम उच्चरै। अब प्रतीत कोय जिन करी ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

कविचन्द्र का छूरी से अपना सिर काट कर राजा को भी छूरी सौंप देना।

कहै पान तत्तार। भट्टकरि टूक रज्ज सम ॥
मैं द्रिग देषत कहि भट्ट। दुष्ट देषियै काल स्रम ॥
धरी साहि अब गोरि। बिनै साहाव चरन लगि ॥
चंद राज वर घेरि। लोह छुट्टै न अंग लगि ॥
छुरिका कविंद जट मझ्झ थौ। कढ्ढि भट्ट कटि सीस अप ॥
ता पछै चंद वरदाय ने। दइय राज वर हथ्थ न्नप ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

दूहा ॥ सूत वृंत मन वृत्तयौ। भवछित पढि कविचंद ॥
गयौ अज्ज जीवंत करि। तजिय सुवर ग्रए दंद ॥
छं० ॥ ५५५ ॥

राजा पृथ्वीराज का प्राणान्त और रासो की इति।

कवित्त ॥ मरन चंद वरदाइ। राज पुनि सुनिग साहि हनि ॥
पुहपंजलि असमान। सीस छोड़ी[1] सुदेव तनि ॥
मेछ अवद्वित धरनि। धरनि सब तीय सोह सिग ॥
तिनहि तिनह संजोति। जोति जोतिहि संपातिग ॥
रासौ असंभ नव रस सरस। चंद छंद किय अमिय सम ॥
श्रृंगार बीर करुना बिभछ। भय अद्भुत्त हसंत सम ॥
छं० ॥ ५५६ ॥

पृथ्वीराज की पूर्व्व कथा और उनका गुण एवं सुयश गान।

कवित्त ॥ ढुंढ रूप दानव[2] उतंग। बोलि आना नरिंद दिय ॥

(१) ए. कृ. को.-साडी। (२) मो.-दादव।

अस्ति सकल सामंत । तेज प्रथिराज वीर विय ॥
वल विक्रम अति सूर । जीह कविचंद प्रमानं ॥
एक ठाम उपज्जै । एक थल मरन निधानं ॥
संग्राम काल ढिल्ली रहै । चौसट्टा टोडर समनि ॥
दैवत्त पह दैवान गति । दैव गत्ति जोगह सघनि ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

रिन जित्यौ कामधज्ज । साहि वंध्यौ गहि गोरी ॥
मैवाती मठ किद्ध । दौरि सो क्षत्तिय तोरी ॥
यट्टै भंज्यो भीम । धरा गुज्जर दिसि धायौ ॥
इहै करी अपियात । कलस कुल नृपति चढायौ ॥
कीयो न किहुं करिहै न को । जग जित्तै जुग जस लियौ ॥
संभलौ सकल भूपति वयन । कीजै ज्यौं पिथ्थल कियौ ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

भुजंग ॥ परयौ संभरी राइ दीसै उतंगा । मनो मेर वज्री किये श्रृंग भृंगा ॥
जिनैं वारवारं सुरत्तान साह्यौ । जिनै भंजि कै भीम चालुक्क गाह्यौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

जिनैं भंजि मैवात द्वै वार वंध्यौ । जिनैं नाहरं राइ गिरनार संध्यौं ॥
जिनैं भंजि यट्टा सु कढ्यौ निकंदं । जिनैं भंजि सहिपाल रिनथंभ दंदं ॥
छं० ॥ ५६० ॥

जिनैं जीति जद्दौं ससीव्रत्त आनी । जिनैं भंज्जि कामधज्ज रष्यौ जपा नं ॥
जिनैं भंजि पंडा सु उज्जैन साही । परंमार भीमंग पुत्री विवाही ॥
छं० ॥ ५६१ ॥

जिनै दौरि कामधज्ज साहाय कीयौ । जिनैं कंगुरा लेय हम्मीर दीयौ ॥
जिनैं नोखि अजवालका पेत ढाह्यौ । जिनै गाहि रा पंग संजोग लायौ ॥
छं० ॥ ५६२ ॥

भए राइ राजा अनेकं सु थानं । किनै प्रब्द कै सथ्थ लुक्कौ न थानं ॥
इनै संभरी राइ साहाब हन्यौ[1] । उसै दीन जासं पराक्रंम मन्यौ ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-संध्यौ, वंध्यो ।

सब देव इरं पुहप्पं बंधाए। सुरं जोति जोतिं सजोतिं समाए॥
तिनकी उपम्मा कवीचंद भाषी। मिले हंस हंसं रवी चंद साषी॥
छं० ॥ ५६४ ॥

कवित्त॥ नयन बिना नरघात। कही ऐसी कहु किद्धी॥
हिंदू तुरक अनेक। हए पै सिद्ध न सिद्धी॥
धनि साहस धनि हथ्थ। धन्नि जस वासन पायौ॥
ज्यों तरु छुट्टै पत्र। उड़ै आप सत्तियौ आयौ॥
दिष्षैं सु लष्ययौ साह कौं। मनु नछित्र नभ तें टर्‌यौ॥
गोरी नरिंद कविचंद कहि। आय धर प्पर इम पर्‌यौ॥
छं० ॥ ५६५ ॥

हरफा षान कहि वत्त। प्रात पहिलै दिन खुल्लै॥
भट्ट देषि दरबार। फेरि देतह किम फुल्लै॥
फुनि पहिलौ सनसंध। बार बारह सु गह्यौ जब॥
सहि सहाब छंडयौ। दियौ भरि दंड तुमहि तब॥
कम्मान कहर कर सर बरह। गज्जनेस पत तो बह्यौ॥
बहुवास मलय चंदन अगर। दुज कंध भट राजन दह्यौ॥
छं० ॥ ५६६ ॥

सुन्यौ हंस हंसनिय। हंस बिन हंसप मुक्कै॥
दसम द्वार उडि हंस। पंच मिलि पंचह रुक्कै॥
इंद्र आप उद्धार। ढुंढ ढिल्लिय ब्रज कंतिय॥
जथ्थ कथ्थ न्त्रिम्मये। आय जुग्गिनपुर वत्तिय॥
डंडूर वाय तिन बहु उड़े। वाय भग्गि तिन तथ्थ परि॥
संजोग जंत भंजि जंच वर। भगौ सार तत्तौ निवरि॥
छं० ॥ ५६८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके पातिसाहि बानवेध मरन राजाचंद सुजसकरण पश्चात् बधनो नाम सड़सठवों प्रस्तावः समाप्तः॥ ६७ ॥

———o———

अथ राजा रयनसी नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

[अड़सठवां समय]

पृथ्वीराज के पकड़ जाने पर और कवि के कांगड़े से छूट आने पर राजा रयनसी का पाट बैठना ।

दूहा ॥ पुब्ब कथा प्रारंभ कहि । सिंघालोकन कथ्थ ॥
जब तें गज्जन वै ग्रह्यो । असपति दिल्ली नथ्थ ॥
छं० ॥ १ ॥

ज्यों रेवा गज अहिय मनि । चातक पावस नभ्भ ॥
ज्यों दरिद्र संपत्ति पै[1] । यों गज्जन प्रथु लभ्भ ॥
छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ ग्रहिय राज सुरतान । गयौ गज्जन गज्जन वै ॥
पंच पथ्य पंजाब । थान थप्पिय तज्जन वै[2] ॥
पठ्ठिय पां पीरोज । सोब साहिब करि मंडिय ॥
लगि लाहौर दिसान । मीर मीरन पर छंडिय ॥
पथ इंद्र कोस सत इक्क पर । म्लेछ सेन पारस सरिय ॥
रुकि रहै रेंन राजन रवद । मनों सिंघ सिंघह अरिय ॥
छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ जोगिनिपुर राजै रयन । चंपि न सक्कै कोय ॥
कलह केलि नित नित करै । रज वढ़ रष्षै सोय ॥
छं० ॥ ४ ॥

भावी गति भवं न्निम्मयौ । छुटि आयौ कविचंद ॥
सुष्प कंद सु... कवि । दुष[3] पंगुरि वर फंद ॥
छं० ॥ ५ ॥

(१) ए० कृ० को०-संपाति पयै । (२) ए० कृ० को०-तद्धित वै ।
(३) ए० कृ० को०-सुप ।

राजक्रित्य कारन सकल । करिय रयन चहुआन ॥
दान न्हान गो ब्राह्मनह । दिए विविध परिवान ॥
छं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ राज देव प्रोहित्त । आय आभासि उचारं ॥
ढिल्ली धर ढिल्लरिय । होइ निरधार अधारं ॥
सबैं सूर सामंत । रेन राजन आचारं ॥
करिय एक मन सब्ब । रीति राजन व्यवहारं ॥
सुभ दिवस लगन सिंघासनह । घरि मूढ़ा गादी सरिय ॥
कढ्यौ तिलक सामंत मिलि । मेघाडंमर सिर धरिय ॥
छं० ॥ ७ ॥

कविचन्द के कौशल से शाह और पृथ्वीराज का मरण सुनकर रयनसी जी का सब सामंत मंडली से सलाह करना ।

कितक दिवस अति विषम । गए पल पग्ग पटक्कै ॥
सुन्यौ राज वरदाइ । हन्यौ सुरतान सटक्कै ॥
रोस[1] रुद्र उप्पज्यौ । भयौ बीरां रस सारं ॥
धन्नि राज[2] प्रथिराज । गिल्यौ साहाब सुतारं ॥
उकसे रयन सामंत सब । मंत मंडि धर धुंसियै ॥
संजुरे बीर अभासि भर । नास प्रथुक परसंसियै ॥
छं० ॥ ८ ॥

उत्तराधिकारी सामंत मंडली का वर्णन ।

बोलि भान पुंडीर । बीर पावस कौ जायौ ॥
बोलि पुत्त रनधीर । अनुज धीरत्त सवायौ ॥
सामँत सौं गहिलोत । मदन लुअ मथन मदन रँभ ॥
जैत कारन पांवार । सार परताप रयन थँभ ॥
बीराधि रुह्व सुम्मेर सदि । वीर चंद जैसिंघ सजि ॥
संकरौ सिंघ बनवीर बर । धंध रोजग मन्नि रजि ॥ छं० ॥ ९ ॥

(१) मो०-रोस । (२) ए० कृ० को०-राह ।

भान तेज चालुक्क । धक्क अरितम्म अहारन ॥
पारिहार रनधीर । भीर भर[1] रेंन सधारन ॥
सारंग दे गघ्परी । टा करन डाक बजावन ॥
कूरंभा रघुवंस । बंध रन सिंघ कहावन ॥
ता अनुज बंधि राजसि कुंअर । राजदेव राम दुज सुअ ॥
सब आय सथ्थ सिरदार लै । वड़ गुज्जर भोजह्ल भुअ[2] ॥
छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ ईसरदास अनंत बर । भुज ढिल्लिन चहुआन ॥
मंत तंत बुझ्झै नृपति । कहौ कन्ह विधि जान ॥
छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कहत भान चालुक्क । बार लद्धिय हम याहिय ॥
सारंग दे गघ्परी । तेग तत्ते होइ साहिय ॥
धंधेरौ धुमकेस । वेस वह्नही वह्ना ॥
इनकै मंत मरन्न । कारनपूर बलि चह्ना ॥
लषलेन तुरिय चुकै घुरिय । इह अचंभ नन मानियै ॥
रनभंग लाज रजपूत जो । फनि अभंग रन ठानियै ॥
छं० ॥ १२ ॥

युवक सामंत मंडली का मत होना कि शाही सेना से छेड़छाड़ की जावे ।

दूहा ॥ इक सो नौ अरु सा पुरिस । भग्गा फेरि जुरंत ॥
कायर षप्पर काच कन । मन भग्गा न मिलंत ॥
छं० ॥ १३ ॥

कहै भान पुंडीर मति । अरू मिलि ईसरदास ॥
पुंडीरा रनधीर कहि । राजन मुक्कै पास ॥
छं० ॥ १४ ॥

सेवक सामि सवंग धरि । चिहु दिसि चोट अहुट्टि ॥
अनिय धार अड्डौ अरै । टूक टूक होय तुट्टि ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) ए० कृ० को०-रन । (२) ए० कृ० को०-भोजिल अभुअ ।

इह मति करि सज्जौ सु दल। कहि सुमेर परताप ॥
संकर[1] सिंघ सामंत सौ। अरिवल तोलै आप ॥

छं० ॥ १६ ॥

धवल दीह संमुह धवल। रथ सामंत सरंध ॥
यों लहि राजन वंस धुर। धवल रतन नव कंध ॥

छं० ॥ १७ ॥

इधर गजनी में शहाबुद्दीन के उत्तराधिकारी का तख्तनशीन होना।

उत गोरी गज्जन दिसा। थप्पिय विनै सहाव ॥
मेछ महरति दीन मति। धर्‌यौ गौरि साहाव ॥

छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ धरिय गौरि साहाव। षान मिलि पलक पिट्टि सिर ॥
सहस पंच इक लष्ष। करह वंगरिय टूक पिरि ॥
चिहुर रोम उप्पोर। भई सेव भेष दिवानै ॥
तन तोवह स्फूरंत। अहों हिंदू परवानै ॥
उम्मरा मीर अल्लह उमरि। इन अभूत क्रम मानयौ ॥
दुसमन विसास सुविहान किय। तव कुमंत हम जानयौ ॥

छं० ॥ १९ ॥

दूहा ॥ तिया भरोसौ ना करै। अरु दुरजन वेसास ॥
पुब्ब विरोध न वीसरै[2]। ते लभ्भै सुष वास ॥ छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ तव मिलि षान ततार। षान निसुरत्ति सजोरिय ॥
रुस्तम षान हुजाव। षान षानौ मिलि गोरिय ॥
मीर मलिक मीरंन। हद्दफ षां हद्द षुरेसी ॥
कालन षां मारूफ। षान मारूफ सुरेसी ॥
षुरसान षान षुरसान षां। जंद जिहाज जादुल्लपति ॥
पव्वीय पंच साहाब सुदि। प्रथुक जात इक नाम भति ॥ छं० ॥ २१ ॥

(१) ए०-संक। (२) मो०-वीसिवै।

साद्दत सोधि सद्दाव। पूछि काजी कुतवानिय ॥
नवल तपत नव रोज। छत्र चामर सों भालिय ॥
पढ़ि कुतवा फातिया। विनै साहाव सुनाल ॥
गज्जनेस गरुअत्त। करै कायावर कालं ॥
दिल्लिय दिसान सज्जै सरस। अहनिसि नींद न चष धरहि ॥
छिंद्वान राज उप्पर रयन। उक्कसि उक्कसि असिग्रह करहि ॥
छं० ॥ २२ ॥

सलाह पक्की होजाने पर राजा रयनसी का शाही सेना पर आक्रमण करने को सन्नद्ध होना।

दूहा ॥ तपत रयनसी राज वर। चित सामंत चहुआन ॥
बोल बोल चौवट परै। ज्यौं भग्गै पापान ॥
छं० ॥ २३ ॥

परहंसा पष्पै सरै। एह अनागत वत्त ॥
काट्ठ जलै कोइल[1] करै। वलै लोह लहि घत्त ॥
छं० ॥ २४ ॥

पत्त परष्पन रयन रिधि। बैर वहोरन सल्ल ॥
गति अंतर पंतर पवित। बंछे पुच नवल्ल ॥
छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ वे सामंत समथ्थ। जेन सुरतान जु साहिय ॥
वे सामंत समथ्थ। बोल बोले निरवाहिय ॥
वे सामंत समथ्थ। जुग्गा जुग कीरति रष्षिय ॥
वे सामंत समथ्थ। चंद सूरिज जिहि सष्षिय ॥
हम रयन काज रष्पहि धरह। अब धीरत्तन मंडियै ॥
धर थान पथ्थ पंजाब लगि। पग्ग[2] सग्ग पल पंडियै ॥
छं० ॥ २६ ॥

(१) ए० कृ० को०—कोइ लक्करै। (२) कृ० को०—पग्ग।

दूहा ॥ रयन राज इह मंत सुनि । मन डम्भरि असमान ॥
मंत सबै एकंत करि । दल¹ भंजों सुलतान ॥
छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ तंतु एक जो ग्रहै । चिरीय बंधन पग तोरै ॥
सहस मेलि बल भरै । बंधि गजराज अहोरै ॥
एकल्ली बल करै । बहुत अग्गैं पग छोरै ॥
मिलवि सूर सामंत । करैं बरढाल ढंढोरै ॥
मत मत्त मंच इम मरन मत । इह सुभम्म रजपूत नहि ॥
जीवंत धरा भोगै अवर । बलिय रयन इह बात कहि ॥
छं० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ रजवट चूरी काच की । भग्गी फिरि न सँधाइ ॥
मनिया नाहीं लाष को । कैसे आंच तपाइ ॥
छं० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ फुनि जंपिय रतनेस । सुनहु सामंत सूर भर ॥
दिग्ग विजय रावन करत । बोलि नारद्द रिषेसर ॥
सुर नर पंनग बंधि । कहा वड़ बिरद बुलावहु ॥
तौ जानिहिं बलवंत । जीति अंतक पुर आवहु ॥
सुनि तमकि जुद्ध लंकाधिपति । करिय काल सो चाल बँधि ॥
तसबीस तीन करि छुट्टयौ । संजमनी पत षेत सँधि ॥
छं० ॥ ३० ॥

गाहा ॥ दस दस कोरिम सथ्थं । इक कंजुरिय रष्षि संरिनयं ॥
घौ निसान निसंकं । सुरतान थान भाजनं काजं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ गागरि मद्धि प्रगट्टि रिषि । सागर करि अचवंन ॥
अनल कुंड उतपन्न अग । पग रिन रुपै² कवन्न ॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए० कृ०—धर । (१) ए० —उपौ ।

राजा रयनसी जी का सब सेना तैयार करके पंजाब की सरहद पर स्थित शाही सेना पर आक्रमण करने के लिये कूच करना।

कवित्त ॥ वजि निसान घन जान । उमडि आषाढ डंडूर ॥
धमकि धरा धर धर हरै । पिट्ठ तट्टि काछ कारूर ॥
हलकि सूर हय चढ़े । किलकि जोगिनि बेताल ॥
झलकि तेग हथ झले । नचि नारद बेताल ॥
ओपंत टोप संजोसमधि । मनु भद्रव धन भान सरि ॥
नवतीय सहस दल बल अतुल । चलिय रयन सब साज करि ॥
छं० ॥ ३३ ॥

पद्धरी ॥ करि सेन साज चलि रयन राज । वज्जै अनंत बाजंत बाज ॥
हुरिवा सुभट अग्गै विराज । मन धरें सामिधर ध्रम्म काज ॥
छं० ॥ ३४ ॥

पहु धूरि पूरि पिष्षयन भोन । धर धरिय धरा सिखि आसमान ॥
सलसलिय सेस कसमस करान । दिगपाल दंति पंतिय डरान ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कूरंभ करप्पय पिट्ठपान । फिरि जगे वीर बेताल आन ॥
जोगिनिय गहे पत्तर पयान । संग चले गिद्धि सिद्धी सयान ॥
छं० ॥ ३६ ॥

सुर असुर जुद्ध देषन उमह । गड अडै मत्त जानै कि भद्द ॥
हनहनय सद्द हैहै हिंसान । पर सद्द धरा वज्जै प्रमान ॥
छं० ॥ ३७ ॥

घहरत्ति घंट घूघरन सोर । पावस्स जानि बोलंत मोर ॥
सज्जिय सनाह घन जेम स्याह । बगपंति भंति आवधि अथाह ॥
छं० ॥ ३८ ॥

घनु धनु हरंत रत पीत तेज । फहरंति फिरै जनु अभ्भतेज ॥

हथनारि गोर जंबूर सथ्थ । छुट्टंत अम्भ पावै न पथ्थ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

दिल्लिय धरान चढि चाहुआन । संवोधि वोधि सब्बै अरान ॥
सुर सहस गज्ज सय सीन सुथ्थ । जानै कि कूट पब्बय सरुथ्थ ॥
छं० ॥ ४० ॥

नव सत्त सहस सेना सुभार । पायक सहस्स सुर पंच सार ॥
पंचह सुअनी बंधी दिसान । सधि अनिय रयनसिय चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

मुष अग्र भार पुंडीर सथ्थ । दाहिनी फौज ईसर समथ्थ ॥
रघुबंध बीर सुर बाम कोद । उन पीठ सकल सामंत मोद ॥
छं० ॥ ४२ ॥

छुट्टंत वाय वेगी तुषार । दह कोस उभय संध्या सवार ॥
फिरि उहटि डोरि ज्यौं गुडी हथ्थ । धुम्मलहि देस फिरि मिलहि सथ्थ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दिल्लिय दिसान सें तीन कोस । म्लेछान भंजि उम्भरे रोस ॥
थनथान थान सुविहान कुक्कि । साहाव विनै सुनियौ उरुक्कि ॥
छं० ॥ ४४ ॥

क्रिगसाष जान विंछिय चटक्कि' । उछर्‌यौ भूमि तें हाय इक्क ॥
कोकाल ग्रह्यौ जगयौ सजीव । प्रज्जर्‌यौ जानि अग्गीव घीव ॥
छं० ॥ ४५ ॥

हुंकार हाक नासा फुंकार । सुर चलै जानि मारुत प्रजार ॥
कोपयौ कहर असपति गुरेस । सहि सकै कौन पलटयौ भेस ॥
छं० ॥ ४६ ॥

भ्रुकुटिय कराल बल घालि मुच्छ । चंपयौ काल जानें कि पुच्छ ॥
आतुर अनंत वोल्यौ सु दाउ । चापरे करिग नीसान घाउ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

(१) ए०—चलाक्कि ।

राजा रयनसी का शाही सेना को मार भगा कर लाहौर पर अपने थाने बैठना और इस बात का गजनी में समाचार पहुंचना।

दूहा ॥ घुरि निसान सुविहान कर। हय गय इभय पलानि ॥
खलहल्लिय सायर हपत। प्रलय पलट्टिय जानि ॥
छं० ॥ ४८ ॥

रतन सेन चहुआन वर। रोपि अप्पने वीर ॥
पंच पथ्थ सुरतोन वर। घन संडिय हम्मीर ॥
छं० ॥ ४९ ॥

धर धुंसे चहुआन वर। पंथ भग्गि तन पंडि ॥
धर गज्जनी नरिंद वर। रतन लियै अव(१) दंडि ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ पंजाब थान सव साहि मंडि। उट्टए सकल रयनंस पंडि ॥
किय चंप साहि ढिल्लिय भरान। अच्छै जु सूर तपि चाहुआन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

लाहोर लोह छंडिय सुधाइ। ग्रिह मंडि अप्प जनु पिट्टराइ ॥
चहुआन सवर दिन दिन प्रकार। गोरी नरिंद दर गइ पुकार ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ विनय सूर साहाव। साहि पुक्कार प्रपत्तिय ॥
मग्ग भंजि सु विहान। छंडि पंजाब जुद्ध तिय ॥
हसम हयग्गय थान। देस लुट्टे सुलतानिय ॥
पुल भग्गा नदि सिंधु। आन सज्जिय हिंदवानिय ॥
तुरकान तेज तत्तार बर। करिय रनह भग्गंत भिरि ॥
आहट्ट वीर दुसमन बल्लिय। बर लग्गौ गौरी सुगिरि ॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो०—रत्तन लियै अदंड।

उक्त समाचार पाकर शाह का कुटवार खां को अपना प्रतिनिधि बनाना और अन्य सरदारों को हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना।

निसा अद्ध उत्तरिय। भेद चट्टौ चहुआनं ॥
कुंची अप्पि नरिंद। वीर कुटवारति षानं ॥
पट्टी षां पीरोज। लोह लीनौ पुनि भग्गौ ॥
अप्पानं वर थान। दई दुसमन फिरि लग्गौं ॥
ढिल्ली वछित्त भग्गा सुवर। षान पान गोरी सुवर ॥
साहाव विनै साहाव सुनि। तोन वंधि वंधन सुभर ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बोलि षान तत्तार। लज्ज साहाव साहि वर ॥
बोलि षान षुरसान। लज्ज षुरसांन कंध भर ॥
बोलि मीर मारूफ। जिनें वंधे चहुआनं ॥
बोलि हवसि जादुल्ल। सत्त[1] वर सहस समानं ॥
साहाव सहित साहाव पट। सा लिन्नें संभारि क्रम ॥
रत रतन वीर वंधन सुदिन। सुनिय सथ्थ पथ्थयनि[2] भ्रम ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पत्ति प्रौढ[3] तत्तार। मंति तजि तमकि तोन वंधि ॥
जल जोवल साहाव। दुहुं साहाव तेज संधि ॥
करि मिलान सुविहान। आनि हिंदवान सुसंकिय ॥
वर निवाज करि वीर। तुंग सुविहान हथ्थ लिय ॥
पच्छिम एराक पुच्छै न्रपति। पुब्ब दिसा पालान वर ॥
द्रिगपाल हल्लि हल्लिय दिसा। चलिय वत्त अरि घरन घर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

---

(१) मो०—तत्त। (२) ए० कृ० को०—पथ्थहाति।
(३) ए०—ऊढ़। (४) मो०—मन्नि।

शाही सेना का हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना।

शाही सेना के कूच का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ सब्बीय सेन चलि धवल सूर। दो मिलिय अट्ट दिस लगि करूर।
सुझ्झै न भान विधि भान तेज। बिच्छुरहि चक्का वर सिखि सुरेज॥
छं० ॥ ५७ ॥

झुमंति नाग गति गिरि समान। रवि रथ्थ श्रंस रज ढक्कि मान॥
वर स्याम पीत धवली हरत्त। सोभंत सेन चतुरंग मत्त॥
छं० ॥ ५८ ॥

नच्चंति वीर नारद चंग। जट जूट ईस सिर नचि गंग॥
नचही वीर चक्रवाक नंद। आनंद रहित ग्रह चक्कि दंद॥
छं० ॥ ५९ ॥

उरक्कै कुरंग पय बिच तुषार। सिर ढरै नाग लचि नमै भार॥
झुक्कि कीय नद सुर वज्जि रंग। सहनाय नद मोहै कुरंग॥
छं० ॥ ६० ॥

त्र्यंबक ढोल वज्जे प्रकार। वज्जंत तबल सुद्दह टंकार॥
वज्जै मृदंग औपम्म चंग। मंडिय सुरत्ति नारद प्रसंग॥
छं० ॥ ६१ ॥

सुह अरिय सद्द सुह चंग मोर। घट तार तार संजीर धीर॥
वंसुरिय वज्जि सारंग भेरि। वज्जंत सिंघ झझझर फेरि॥
छं० ॥ ६२ ॥

वज्जिय निसान गुंडीर सद्द। वज्जे जंजीर जरि गज्ज मद्द॥
वज्जंत घंट घूघरन सोर। पष्षर निसद्द सद्द बंधि मोर॥
छं० ॥ ६३ ॥

साहाब बिनै साहाब सूर। उतर्यौ सेन सद्द सिंधु पूर॥
साहाब बिनै साहाब दीन। फ़रमान हिंदु बंधन सुकीन॥
छं० ॥ ६४ ॥

अल्लाह अग्ग भौ अप्पहीन। करतार तुंब करि एक दीन॥
उत्तर सिंधु हय विहय साहि। सुक्कै विवाह चिन्हाव धाइ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सतनंज सतन जिम करि प्रमान। चर कहैं धाइ सुनि चाहुआन॥
छं० ॥ ६६ ॥

शाही सेना के चढ आने का समाचार पाकर रयनसी जी का राजपूत सरदारों से सलाह करना।

कवित्त ॥ कर बलषान ततार। हवस हरवल हज्जाविय॥
बीच बिनै साहाब। फौज बंधी दरियाविय॥
कूंच कूंच हिंदवान। दिसा दष्पिन पंजावी॥
सोर सोर सुरतान। सुनिय आवंत सितावी॥
रस उभै सहस गज हय सुरँग। द्वादस लष सहसंग गिनि॥
पाइक अनंत कहि गिननि मति। चलिय फौज हिंदवान सनि॥
छं० ॥ ६७ ॥

रयनसी जी का कहना कि ऐसा मंत्र करना चाहिए जिसमें बात रहै और हँसाई न हो।

तब सुनि रयन सहाव। आव उत्तरि जुरि भग्गं॥
सोइ सुमंत किज्जियै। मंत सुद्धरै जुअगं॥
आगे ही छिज्जिया। सूर सामंत सुभारी॥
हम कंधै इल भार। दियो प्रथिराज विचारी॥
तुम करो मंत भर इक्क होय। ज्यों रजवट वट सुद्धरै॥
बिन मंत घत पुज्जै नहीं। बोल सु बोला उद्धरै॥
छं० ॥ ६८ ॥

सोचि सब्ब भर सुभर। मूल रष्पन मत मंडौ॥
पावस लष्ष सहाय। कन्ह जोगिनपुर छंडौ॥
धर पद्धर सुक्किये। जोध मंडब धर बंकी॥

खबर सुनौ सुरतान। पुब्ब वर जसी इहक्का॥
सामंत बिना सो मंत करि। पट्टी पुब्ब न पोइयै॥
जिंद्दवान सबै घ सिद्दै द्रुग्गन। जुद्द सुकिय बल जोइयै॥
छं० ॥ ६९ ॥

सब सामंतों का युद्ध करने पर उद्यत होना और दिल्ली के किले में ही युद्ध होने की बात पक्की होना।

दूहा ॥ धवल दीह दीहै सुवर। धवल होय पुत्तोय॥
धवल लीह लीहै ग्रहै। मरन धवल यों होय॥
छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ जैत पुत्त पांवार। जैत सम जैत सवायौ॥
सत सामंत न अम्म। अम्म छत्री छिति पायौ॥
बीर बंक बसुमती। बीर बंकाही बंकी॥
बीरनि वर पद्धरी। बीर लिय बीरां संकी॥
पद्धरी भूमि बंकेति भट। धर बंकी न्रप मति नही॥
जोगिनिय थान जोगिनि पुरह। दुहूं सामि बल बल जिही॥
छं० ॥ ७१ ॥

दूहा ॥ रुधि छंटी प्रथिराज नै। धर अप्पी सुलतान॥
काहू छीन घटि तूं तपै। पूरन करि चहुआन॥
छं० ॥ ७२ ॥

अनंत बली चहुआन नै। सुक्कि द्रूर ससि वेस॥
संघातक संभरि सुरस। वर आनंदे रेस॥
छं० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ कहै मत्त पांवार। रतन रच्यौ लजि रतनह॥
जस सुभ्रम्म प्रथिराज। तुंम प्रगटी सुम तानह॥
रतन दीप प्रगटियै। किन्नि चिहु मग्गह सुझ्झै॥
मरन महन मो पुरष। सोहि परमप्पर[1] सुझ्झै॥

(१) ऐं० कृ० को०—परमछर।

सत बरस आव आनस घटी । अब्ब बाल विरधत्त गय ॥
संताप सुष्ष माया विभ्रम । सेष न मुक्कहि कोय अय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

धीरं जो रनधीर । बंध पावस उच्चारिय ॥
स्वामि रनह लंपवै । हथ्थ अप्पं लगि गारिय ॥
मरन तत्तहय सूर । राज रष्यौ राजानिय ॥
करि माया बल भंग । रहैं छुट्टै सुलतानिय ॥
सनमंध जीव जीवन मरन । बर विधान बर लष्य पर ॥
सत सत्त सत्ति कीजै नही । सत कीजै रजपूत वर ॥
छं० ॥ ७५ ॥

चंद्रायना ॥ थंभ मंडि बर किति सु सोमेसं बरं ।
सूर अथ्यि दिल्ली जस जीतियै डंबरं ॥
इसौ संमही नाथ राज प्रथिराजरं ।
मंडि रत्तन थज्ज यौ जुग द्दिवल अंबरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली वै ढिल्ली करी । बर ढिल्ली वै तथ्थ ॥
रहै जैत पंमह जितैं । सिंघ प्रान मति जथ्थ ॥
छं० ॥ ७७ ॥

रज रष्पन रहि राजसी । ढिल्लिय ढिल्ली नथ्थ ॥
पावासर ऊपर चढें । रतन सेन सब सथ्थ ॥
छं० ॥ ७८ ॥

ईसर दास सहेस कहि । हम मति इत्ती सार ॥
ढिल्ली गढ़ गड्डो ग्रहैं । तौ हम जुडैं सार ॥
छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ तब सुभान पुंडीर । बीर रनधीर पुंडीरं ॥
चालुक्का भर मान । बोलि जै सिंघ सुधीरं ॥
करन सुभर परताप । बीर चंदं बन बीरं ॥
सारंग दे गष्परी । टांक चाटा उत नीरं ॥
सुनि मंत मंन एकंत करि । भलौ भलौ भर सब्ब कहि ॥
रयनसी राज ढिल्ली सुबर । गढ़ संग्रही सो चित्त लहि ॥
छं० ॥ ८० ॥

शाही सेना के दूत का आना और राजा रयनसी का युद्ध का प्रस्ताव स्वीकार करना।

दिल्लीय दिसि सुलतान। साजि चल्लौ चतुरंगिय॥
दक्षि वीर नीसान। षान षुरसान षभंगिय॥
तेइं वर उत्तरस्त। धाइ चर आय सुगोरिय॥
कहां गयौ चहुआन। वीर पावस रस जोरिय॥
पावस पयान पायाल कँपि। सूर कंपि पन्नग डरिय॥
दुस्सह सुदेव गढ़ सज्जयौ। बंधि चाल संमुह भरिय॥
छं० ॥ ८१ ॥

शाही सेना का किले को घेर लेना।

गढ़ उप्पर सुलतान। चंपि चतुरंग पखार॥
हय गय घंट टनंकि। सूर पष्पर गहराइ॥
निसा वर वैरष्प। उड़िय धुंधरि दिसि धोरिय॥
सूर सारत तुरि चले। चोर उज्जल ढरि चोरिय॥
सारस मिलंत सारस बिछुरि। चकी चक्क चित चंद वर॥
रहयौ रतन वर भान अरि। राह रूप गोरीत भर॥
छं० ॥ ८२ ॥

सुरिल्ल ॥ सकि सुवर पांवा सर वीरं। परि पारस सुलितान सुमीरं॥
गड गह्यौ देषै पांवारं। राजसिंघ चढ़ै तिहि वारं॥
छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ जोर वरस वर गोरी प्रमान। [1]ग्रह ग्रहन राह चहुआन भान॥
रज कज्ज धाइ रज्जोर पान[2]। असि मन्नि तिथ्य धारह सिलान[3]॥
छं० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ चिनै साहि साहाव। उपटि दरिया हिलोरै॥
गढ़ घेर्यौ चिहु कोर। प्रलै जनु मेर सुवोरै॥
गोर नार छूटंत। मरत मेछाइन भारी॥

(१) मो०—ग्रह ग्रहन भान रह चाहुआन। (२) ए० कृ० को०—पंति।
(३) ए० कृ० को०—मिलंत।

इन हिंदू पति राज । घात लही सुकरारी ॥
आवट्टि सेन अध अद्ध अध । बज्र कोट भेदै नहीं ॥
सुविहान तमकि तत्तार पर । हम हलान बत्ता कही ॥
छं० ॥ ८५ ॥

पद्धरी ॥ रत पीत धवल बर झरि प्रमान । दिसि उभै च्यारि संडेति षान॥
सुभ्भरन भरन आवृत्त जोट । मनों पावस्स काल बर विंटि कोट ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ सरद काल कौ चंद । परी पारस बर सुद्दल ॥
तिमर भान बिंटयौ । कूट बिंटे रुकि वद्दल ॥
कै इंद्र पूर विटंयौ । बलीसोहं वलि रावं ॥
कै जलपति विंटयौ । मद्धि वडवानल पावं ॥
कै भ्रमाल धारि[४] संकरत बर । इह उप्पम राजंत गढ ॥
कवि कहै चंद बरदाइ बर । कै कोट बिंट सुन्नार सढ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सात महीने दो दिन पर्य्यंत किला न टूटने पर तत्तार खां का सुरंग लगा कर किले की दीवार उड़ा देना ।

दूहा ॥ सपत मास दिन उभय बर । ढोहन संझौ वीर ।
बजे असप्पति साम दह । गज्जि सुगोरी बीर ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ तब तत्तारहि कसति । सार सौधड सुष भारिय॥
करि सुरंग संचार । मद्धि दर मंझ सुधारिय ॥
करिय सज्ज सब सेन । आनि आतस संचारिय ॥
लगि कसान पाषान । उडिय असमान अँगारिय ॥
आघात सोर सोरां सुबजि । लेहु लेहु सुष मेछ कहि ॥
हिंदवान प्रान अब तुच्छ हैं । फते नाम सुविहान लहि ॥
छं० ॥ ८९ ॥

सुरंग से केले की पश्चिम दीवार का टूटना ।

चढ़ि मध्यान सुलतान । साहि फुरमान अप्पि भर ॥

बाघि बीर परतंग । गज्जि आयास लग्गि वर ॥
नर भर गज आहुटिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
दिसि पच्छिम सुलतान । बान सुंधा रवि छुट्टिय ॥
पर कोट भग्गि पाषान उड़ि । ... सलेट वर उड़ि चलिय ॥
जानै कि चंग रस वाय बँधि । पह सुमग्ग नर चिक्क[1]लिय ॥
छं० ॥ ९० ॥

षां ततार तिहि बार । मंडि फुरसान पान लिय ॥
फिरि चिहुं मग्ग सु द्दिष्पि । चिंति दिसि बान थान दिय ॥
विना[2] भीति गढ़ मग्ग । नारि जंबूर लगाइय ॥
अप्प सथ्य वर अड्ड । कोट पइ मग्ग उड़ाइय ॥
तिहि थान कोट पुंडीर भुज । धीरज ही धीरज्ज वर ॥
चढ़्ढे सु सथ्थ सुरतान भर । लोह सार मच्चिय विधर ॥
छं० ॥ ९१ ॥

किले की दिवार टूट जाने पर दोनों तरफ से तलवार का युद्ध होना ।

लग्गत वर सावाति । आनि सूरन मुष रोह्यौ ॥
थक्कि गोर जंबूर । पूर पति साह छंछोह्यौ ॥
जग्गि सोर सा वाति । षान दोरे पग साहे ॥
उत हिन्दू आलोल । सामि छल भ्रम्म समाहै ॥
पुंडीर भान परतंग धरि । अरि ततार अड्डो असम[3] ॥
संजुरिय झाक झंझार वजिय । वहैं धार धारह रसम[4] ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूहा ॥ मग अमग्ग करि रुंधयौ । भेद्द न लम्भत पार ॥
झर लग्गो पावस झरत । मग्ग न षंडत धार ॥
छं० ॥ ९३ ॥

---

(१) ए०—नर चित्त कलिय । (२) ए० कृ० को०—चित्त ।
(३) ए०—असस । (४) ए० को०—समर ।

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ धार धारं मिली, सोर छक्कै भिली ॥
  ओज धारा चली, बोलि षग्गं षुली ॥
छं० ॥ ९४ ॥

  आयुधं अत्तली, बोल बोलै बुली ॥
  वंवरी उच्छली, सुंछ मोंहा मिली ॥
छं० ॥ ९५ ॥

  काल कंकं कली, ० ० ० ॥
  भट्ट चट्टं परी, बथ्थ बथ्थं अरी ॥
छं० ॥ ९६ ॥

  धिंग धक्की धरी, कढ्ढियं दुज्जरी ॥
  जीन सांइं करी, हड्ड हड्डंजरी ॥
छं० ॥ ९७ ॥

  बारपारं करी, लुथ्थि लुथ्थंपरी ॥
  भान पुंडीरयं, षान षंडीरयं ॥
छं० ॥ ९८ ॥

  षान तत्तारयं, पिंड पच्छारयं ।
  दूर हुल्लारयं, अच्छरी पारयं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

  चौसठी चारयं, पष्परं सारयं ।
  ईस सीसं लियं, कंठ मालं कियं ।
छं० ॥ १०० ॥

कवित्त ॥ जुरत षान तत्तार । भान पुंडीर जुरंतह ॥
  अस्त्र वस्त्र रुधि मंस । सानि एकंग करंतह ॥
  पंच सत्त परि मीर । हिंदु सयतीन परंतह ॥
  अवर हयग्गय जुथ्थ । षंड सुष परे अनंतह ॥
  उप्पर पुंडीर रनधीर करि । संगि समाहि आयौ ससुह ॥
  मारूफ सुष्प मरदान मिलि । सनुं अनष्प सौकीभ[१] सुह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए० कृ० को०—सौकीन मुंह ।

बीर रनधीर का दरवाजा रोकना और शाही सेना के कई सरदारों को मार कर आप मरना।

मोतीदाम ॥ इतें रनधीर समाहिय सेल। उतें मारूफ किये पग मेल ॥
उझट्टिय घोड़न पग्ग सुझारि। निकस्सिय सिंगि फुटे धरपारि ॥
छं० ॥ १०२ ॥

धुकंतय पान समाहिय तेक। हयौ हय दष्षिन अंगुरि एक ॥
परयौ धर मारूफ पान विहल्ल। उभौ रनधीर जुधे अरि सल्ल ॥
छं० ॥ १०३ ॥

बकारिय बंबरि उट्ठिय बीर। जुकौलन मीर समाहिय तीर ॥
कराष्षि कमान छुटौ सर बेग। लग्यौ फुटि टट्टर लीनिय तेग ॥
छं० ॥ १०४ ॥

दुहथ्थल झारिय कट्टकवारि। सुकालन मीर ढर्यौ धर गार ॥
उतें रनधीर पर्यौ धर षेत। इतें बर सामंत बधिय नेत ॥
छं० ॥ १०५ ॥

भिरै छित अप्प उभै दिषि जान। सु ज्वारिय षेत लुनंत किसान॥
पचारिय सामंत बोलिय पान। अर्यौ निसुरत्ति उभै घटिजान ॥
छं० ॥ १०६ ॥

कारष्पिय पंजर पंजर भीड़ि। लगे बथ अथ्थ पछारिय मीड़ि ॥
हयौ निसुरत्ति सुरत्तिन काय। जु सामंत पंजर हंस उड़ाय ॥
छं० ॥ १०७ ॥

रहे दोय कंठनि कंठ लगाय। मनो हित वंटहि प्रेम मनाय ॥
किधौं कठ साल जरे कल लाइ। जुरै सथ सामंत सिंह थवाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

परयौ निसुरत्ति सतं सुरघाषि। * * * ॥
सिरप्पर नाग चढ़े जु हुजाब। कहै ठग लेहु सिताब सिताब ॥
छं० ॥ १०९ ॥

करन्न पवांर पटोधर जैत। उभै षग्ग झारि-महापथ षेत ॥
ढिल्यौ गजराज हुजाब पचारि। सरोस न झारि करन्न पचारि ॥

छं० ॥ ११० ॥

उभै द्दंत षंड भसुंड सुमारि । झरी कंध पक्वय शंग सुढारि ॥
ढर्‌यौ गजरांज करी सु चिकार ॥ * * * *

छं० ॥ १११ ॥

परंत हुजाब अजाब औसान । गुरज्ज समाहि उठ्यौ असमान ॥
करन्न सिर प्पर झारिय झाक । किरच्च किरच्च कर्‌यौ तन पाक ॥

छं० ॥ ११२ ॥

सटोप सकुचि अकुचिय साहि । ग्रह्यौ धुकि षान हुजाव समाहि ॥
षवास पवार सुकेसर नास । हयौ षग मीर पर्‌यौ धर ताम ॥

छं० ॥ ११३ ॥

हुजाब परंत हुओ हयकार । सुनी सुरतान हुजाव पुकार ॥
सबै दल एक हजार हुजाव । कढ़्यौ दोउ कोद सुभ्भित्त अजाव ॥

छं० ॥ ११४ ॥

करन्न परंत उभै सत सूर । ग्रहै सिर ईस भिदे तन सूर ॥
परंत करन्न प्रताप कैमास । तनै सुत संगि समाहिय तास ॥

छं० ॥ ११५ ॥

रुक्यौ दल रुस्तम काटिय तीर । हयौ परताप निकस्सिय सीर ॥
लगे सरु धक्कि चलाइय संगि । समेत तुरंग ढह्यौ लगि अंग ॥

छं० ॥ ११६ ॥

दुहूं भर जुट्टत पुट्टन नाहि । बहै धर षंड जु स्रोन प्रवाहि ॥
करे पनमीर मलिक्क अचंक । करें जनु सोर लियै कपि नंक ॥

छं० ॥ ११७ ॥

हजार उभै सत तीन जमंन । परे कटि हिंदु सत सतमंन ॥

छं० ॥ ११८ ॥

प्रथम दिन के रनधीर के युद्ध में मृत योद्धाओं के नाम ।

दूहा ॥ उभय सहस सत तीन सौं । रुस्तम वर जुधवान ॥
से सत्तर हिंदू परिग । हय गय रुद्धि विहान ॥

छं० ११९ ॥

शाही सेना का किले में पैठने के लिये अग्रसर होना और बीर चन्द का मोरचा रोकना ।

कवित्त ॥ परि कै सास प्रताप । ठान मेरी फंकोरिय ॥
घु,मत मेछ घन घाय । बाग जनु संभा भौरिय ॥
लेह लेह सुप मेछ । मार सुप अंपहि मारे ॥
धुअ सुमेर सामंत । डिग[1] नहि पाय सुधारे ॥
कोपयौ कहर असपति जहर । ह,कार हकि मिल काइ कर्यौ ॥
[2]वज्रंग ओट धरकोट सम । आय बीर चंदह अर्यौ ॥
छं० ॥ १२० ॥

दूसरे दिन वीरचंद के साथ कई राजपूत सरदारों का काम आना और यवन सेना का बल बढ़ना ।

मोतीदास ॥ अयौ अड़कोटह बीर सुचंद । मनों त्रिकुटाचल इंद सुनंद ॥
पारस्सिय ओड़न हथ्य करार । वहै जनु काटृत क्रूर कवार ॥
छं० ॥ १२१ ॥
मिलिक्षय मीर हए दुजनेज । सभेत फारस्सि हन्यौ करि तेज ॥
पर्यौ धर मीर सलक्क सुमार । मनो चक भांड़ उतारि कुलार ॥
छं० ॥ १२२ ॥
अनेक पराक्रम चंद सुबीर । अघाय सुघाय कर्यौ भवतीर ॥
सुमेर जादुन्न हुओ दिठ सेल । उनें उन उन्नहि भेदिय सेल ॥
छं० ॥ १२३ ॥
मनो नट[3] भंगुर मंडिय पेल । उरा पर दीसहि अंकुर केलि ॥
धुनें धुनि दोउ परे धर छोनि । अघाय सुघाय उड़्यौ हँस दैनि ॥
छं० ॥ १२४ ॥
हठी हडराउ सुषेत परंत । उभै सुर सत्त मलेछ हरंत ॥
इकं सत हिंदुअ सहिय सार । मिटे भ्रम लम्भिय कोपि दुवार ॥
छं० ॥ १२५ ॥

(२) मो०—हिडै । (१) ए० कृ० को०-वजंग आठ घर कोट सम । (३) ए०— नग ।

जै सिंघ पचारि दुआरि अरंत। मच्यौ जुध भारथ सापि भरंत ॥
षनं षन गोरिय जोरिय सार। इसौ जुध जानि महोदधिवार ॥
छं० ॥ १२६ ॥

अरै षग धार चिनंग क्रिसान। मनो निसि कूटहि लोह तपान ॥
घरी अध जुध मच्यौ अनिवार। परे होउ भीछ सुगालुर धार ॥
छं० ॥ १२७ ॥

ग्रहै असि दास महेस अरिंस। करी कुटवार षनेस परिंस ॥
वधे दिसि संकर सिंघ सुछार। मुषें मँडि मीरन पान छंछार ॥
छं० ॥ १२८ ॥

दोऊ दिसि जुद्ध अलुद्ध अपार। हुऔ मिलि दोंउ न एकं कार ॥
हुनै मुष उच्चहि मार सुमार। * * * ॥
छं० ॥ १२९ ॥

बकै सुविहान कि आन प्रमान। महाभर आन बकै चहुआन ॥
महाजुध जुद्धहि भीछ करूर। कटे धर पंड विहंड गरूर ॥
छं० ॥ १३० ॥

बरै बनवीर पवार किवार। ग्रहै कर आवध लै सथवार ॥
पचारिय मेछ धर्यौ धर पार। अहुट्टिय पेंड पचास सुवार ॥
छं० ॥ १३१ ॥

भगे भगि मेछ समाहिय तीर। फिर्यौ षां दप्फ सुवुट्टन मीर ॥
मची सुहमेल पर्यौ बनवीर। तिलं तिल अच्छरि बंटि सरीर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

जगं मनिराव धँधेरिय आइ। मिल्यौ ततरीस दुसंमन घाइ ॥
झर्यौ षंह दप्फ सुदप्पिन पाइ। हयौ तिन तेग जगंमनि राइ ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पर्यौ बनवीर जगंमन देषि। भर्यौ भर चालुक मान विसेष ॥
मारूफ सकत्तिय झल्लि सरोस। भिरै जनुराह रु भान रुकोस ॥
छं० ॥ १३४ ॥

महाव बिनै घर षुट्टिय षानि। इतें दल अप्पिय चोलुक भान ॥
पर्यौ षुरसान लघू दरसान। सरूफ पर्यौ धर पैजि प्रमान ॥
छं० ॥ १३५ ॥

परयौ भर चालुक भारथ पेषि । नच्यौ रनधीर ग्रहै कर तेक ॥
जुरे परिहार पुरेसिय पान । परे रन पंच हजार पठान ।
छं० ॥ १३६ ॥

सबें दल हिंदुअ सत्त सतान । कमान पठान करष्यिय बान ॥
लग्यौ रनधीर फ,यौ परवान । मनों जल जोरिय मंछ परान ॥
छं० ॥ १३७ ॥

पिष्षि समसेर पुरेसिय रूक । हन्यौ मध उद्ध करी दोइ टूक ॥
इसौ जुध ढिल्लिय कोट ढरंत । मच्यौ भर मेछ सुहिंदु जुरंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

पलचर भूचर षेचर देव । परंम महंन न दिट्ठौ कैव ॥
अघाइय सद्द करै जैकार । चवट्टिय षप्पर पूरि प्रचार ॥
छं० ॥ १३९ ॥

परे गज जूथ कटे हय थाट । चले वहि श्रोन नदीरय बाट ॥
सहावनि जे भर पोष समूर । परे कटि मंडल लैग्रहि सूर' ॥
छं० ॥ १४० ॥

गयौ भर भार उतारिय सूर । लयौ चहुआन सु किंत्ति पहूर ॥
सहाव न मंडिय दिल्लिय आस । न छोरिय रेन परौ पंड पास ॥
छं० ॥ १४१ ॥

परिग्गह सूर परे पथरार । परौं मनु मेर अडिग्ग अपार ॥
दुहूं दिसि तक्कहि मेछ भ,भार । करी मभ सिंघ मनो सु गुंजार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ उभय दीह रन लग्गि । सेन आलुध्यि लुध्यि पर ॥
हिंदु मेछ रन तोल । वीर वज्जे² अभंग धर ॥
वर ओलंस नरिंद । टंद वज्जे विरभानं ॥
कोट ओट छुट्टयौ । सोर सेमुप चढि पानं ॥
धन धार धार सिव वास वर । असि पहार धारह चढ़े ॥
संग्राम रवनि भारथ्थ भिरि । कुल संग्राम संगुर वढ़े ॥
छं० ॥ १४३ ॥

(१) ए० कृ० को०-हूर । (२) ए० कृ० को०-भज्जे ।

किला टूटा हुआ जानकर राजा रयनसी जी का राजगुरु को बुलाकर मंत्र पूछना ।

दूहा ॥ गढ़ टुट्टत जान्यौ सुभर । कहूँ रतन न जाइ ॥
राज गुरू वर बोलिकै । तत्त सुमत्त उपाइ ॥
छं० ॥ १४४॥

प्रोहित का मंत्र देना कि कट मरना सलाह है ।

कवित्त ॥ सुनौ रतन चहुआन । पूर वैरी नदियं तिय ॥
राज रिष्षि वर तत्त । मुरै सुर सुम्भर किंत्तिय ॥
गगुलि[1] सूर सामंत । गिल्यौ पहु गोरी राहं ॥
उगलि छुट्टि वर भान । चिंति सुविहान सु साहं ॥
न्त्रिबार वीर फल होइ फुनि । फूल सुहंगे वीय वर ॥
ज्यौं होइ सोइ जो उब्बरै । जोरब्बर धावै न धर ॥
छं० ॥ १४५ ॥

मति षट्टिय रजपूत । सार संसार मरन वर ॥
मुकति पदारथ मुक्ति । दीनहु ज्यै न घर घघर ॥
सार इहै संसार । पत्त मन सथ्य सजाइय ॥
पति घट्टत मन रहै । जंम पोयौ जिहि जाइय ॥
वर चौंर चौर अच्छरि ढरै । वरह वरए जरि झग्गरै[2] ॥
तिसना रु तेज माया पमुक्कि । सुगति काल जित उब्बरै[3]॥
छं० ॥ १४६ ॥

राजा रयनसिंह का जौहर करना ।

जौहर चिंति रयन्न । गढ्ढ संध्यौ रतन्न हुअ ॥
सकल सबै रजपूत । करै अस्तुति तदेव सुअ ॥
किंत्ति जिंत्ति तन मंडि । [4]काल घट घटै न घट्टै ॥
असिवर अरि द्राकंत । जम्म बंधन वर छुट्टै ॥
सब तंत गार इक सट्टिवर । बिष प्रवरत प्रवरत्त हुअ ॥

(१) ए०-उगालि । (२) मो०-जग्गरै ।
(३) मो०—कालति उब्बरै । (४) ए० कृ० को० काल टूटै न घट्टै ।

दिन दससि जीव दिन घद्द निस । जोहर रचि वर सासि तुत्र ॥

छं० ॥ १४७ ॥

घाल बंधि अरि बंधि । पास बंधे सुष बंधे ॥

दृढ़ काया कारसौ । जानि अस मारग संधे ॥

जल्ल जार तुट्टयौ । भिदै रवि मंडल सथ्थं ॥

अच्छरि वर संग्रहै । सुकति लट्टी निधि हथ्थं ॥

रन धवल धवल कहुंति सिर । असुर द्दूर संमुह भिरै ॥

उचरौ बार वड, गुज्जरह । जक अग्गि लग्गा फिरै ॥

छं० ॥ १४८ ॥

दोपहर ढरते रयनसी का किले से निकलना और मुसलमानों का उसे पकड़ने के लिये धावा करना।

दूहा ॥ विपहर नमत रवि नमत तम । दीत अदीत वसान ॥

सह सु रह परिवार उत । पंच पंच पन पान ॥

छं० ॥ १४९ ॥

पंड सुपै नग नग करौ । करि पल पट्ट प्रमान ॥

अव सहाव झूकि यों कह्यौ । विगह ग्रहौ चहुआन ॥

छं० ॥ १५० ॥

कवित्त ॥ तब सहाव सुनि पंच । नाम एकै जति न्यारिय ॥

हबसी औरसि नौर । तीय गजनी संभारिय ॥

मह्कइ लोदी एह । आप समवरि अधिकारिय ॥

षुरसाना षानेस । जोर धरि जवन हँकारिय ॥

तब पैज करिय अब अग्ग ह्वै[1] । तुम लज्जा पच्छा फिरै ॥

हहकारि हाक झझ्झौ सजुर । मद्धि हिंदू जिंदू भिरै ॥

छं० ॥ १५१ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ भिरे हिंदु मेछान रोसं पचारी । रघूवीर रासिंघ राजेस भारी ॥

(१) मा०-अव ग्रहौं ।

बलीभद्र क्रूरंभ रारै न आगै। करै हाक क्राकं सुरै मेछ आगै ॥
छं० ॥ १५२ ॥
दिसा दष्षिनं राव सारंग नेतं। गुरं गष्षरं पष्षरं बंधि वेतं ॥
बड़ं गुज्जरं भोज रा राम सुत्तं। दिसा वाम मंड्यौ मनौं इंद्र पुत्तं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
दुजं राम सुत्तं दिवं राज तथ्थं। कुरं जुध द्रोनं भए जानि पथ्थं ॥
भरं ईसरं दास का कन्ह जायं। चिहुं पारसं कोट चहुआन रायं ॥
छं० ॥ १५४ ॥
टिक्यौ टाक चाटा सुपं नाट पायं। नटै नाट कोदा चिहुं षग्ग घायं॥
षंपे चोहुआनं सहाबं पचानं। अरे ओडनं नंषि कट्टै क्रिपानं ॥
छं० ॥ १५५ ॥
रघूवीर क्रूरंभ षैबंध तथ्थं। बजे आवधं आवधं लग्गि बथ्थं ॥
मची हाय हायं लगै घाय घायं। नही अप्प पारं सुधं जुद्ध तायं॥
छं० ॥ १५६ ॥
गरं लग्गि साहाव कुरंभ एकं। हन्यौ हक्कसौं जाति जुद्धं अनेकं ॥
दुती बंध रनसिंघ सिंघं पचारै। तिनें एक साहाव मार्यौं पछारे॥
छं० ॥ १५७ ॥
सुरं राजसी बंध साहाब गाजी। तिनं तेग तेगं अनो अन्य बाजी॥
लग्गे वीर रसं कठं तार तारं। कटें कंध कासंध छोगी पथारं[१] ॥
छं० ॥ १५८ ॥
बड़ गूजरं भोज मक्को सहावं। दुनै सामि लाजं दुनै सुष्ष आवं ॥
दुनै सज्जरी षंजरी पंजरीयं। दुनै दुज्जरी मह ज्यौं दड्डि कीयं ॥
छं० ॥ १५९ ॥
दुनै दंत दंतं ग्रहै कंट रेसं। उड्यौ हंस हंसं दुनै बाल वेसं ॥
दुजं राज साहाव लो दीस नूरं। दिसा वाम आयौ मनोराह सूरं॥
छं० ॥ १६० ॥
दिसा वामयं वा गूरज प्रकारं। कर्यौ पुट्टि घाया पर्यौ दुज्ज धारं॥
गजे टाक नाटं चिहूं कोछ राजं। तबै छंडियं षंड सुलतान पाजं॥
छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए० कृ० को०-पछारं।

मची मार मारं मुर्‌यौ सत्त पायं। इसौ चंपिइं सेन चहुआन रायं॥
जुटे भारथं ईसरं दास सूरं। उतें मेछ झंडा गड़े बट्टि नूरं॥
छं०॥ १६२॥

विनै साहि साहाव आनं करूरं। भिरे मेछ मस्मंद गातं गरूरं॥
उतें ईसरं दास का कन्ह पुत्तं। गयौ गज्जनेसं हन्यौ गज्ज नेतं॥
छं०॥ १६३॥

रयें रैन टेकं मुरे पंक नाहीं। इसौ जुद्ध आनुद्ध चहुआन साही॥
वढ़े आन पुरसान पां रोस धायौ। तिनं ईसरं दास रा पूर धायौ॥
छं०॥ १६४॥

टिक्यौ टाक पुरसान सों मेल घाये। सवैं मस्च तुट्टै डिगे नाहि पाये॥
घरी एकलों टांक सिर सार तुथ्यौ।परी जानि संझयार घरियार कुथ्यौ॥
छं०॥ १६५॥

उतैं डेढ़ हज्जार मेछानं पारे। परे सात सें पेत हिंदू पचारे॥
छं०॥ १६६॥

कन्ह के पुत्र ईसरदास एवं अन्य वीरों का पराक्रम से काम आना।

दूहा॥ ईसर दास जु कन्ह कौ। लगि पुज्यौ पतिसाह॥
मनों गयंद के सघन सरि। करि दहवट्ट दुगाह॥
छं०॥ १६७॥

चढत मेछ तिन दिनह वर। संझ सुमिटि भारथ्थ॥
पथ्थ पोप कूरंभ रहि। बंध तौन पारथ्थ॥
छं०॥ १६८॥

वद्दे आनि पुरसान पति। पां पुरसोन पुरेस॥
दिसि दष्षिन धवलिय सयन। चपि संभरी नरेस॥
छं०॥ १६९॥

दल भग्गो चहुआन भिरि। रन तंची भगि सार॥
रयन सेन नन भज्जई। जानि सुवज्जन हार॥
छं०॥ १७०॥

उभै परिग्गह रयन सौं। लज्ज परिग्गह कोरि ॥
अस स्वावी तस ग्रिस्सयौ। सत्तिय सत्त न छोरि ॥
छं० ॥ १७१ ॥

चौपाई ॥ जरानीय तेलनि चढि वीरं। गय लज्जी लिसु आव न मीरं ॥
लग्गि न कली फूल वर वीरं। लज्जी गहन रयन सुज सीरं ॥
छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ भय नाटक लज टंक। टंक सय लज्ज सुमेरं ॥
चाव दिसि रवि सासि। घाव चहूं दह वेरं ॥
ढंढोरिय वर ढाल। माल हर बंधि कमल वर ॥
इंद्र लोक जम लोक। लोक हरि छंडि ब्रह्मपुर ॥
रजपूत सोइ रजपूत वट। वट्ट चुक्कि[1] पावै न वर ॥
सो करो किति ज्यौं उब्बरौ। कहियै जिहि रवि चक्क तर ॥
छं० ॥ १७३ ॥

शाह के आज्ञानुसार पीरोज खां का रयनसी के सामहने आकर प्रचारना और रयनसी का उसे मार गिराना।

परे पान पुरसान। पर्यौ वड़ गुज्जर भोजं ॥
चंपे वर चहुआन। आन रँग रोस सरोजं ॥
देषे वर चहुआन। पान पुरसान सु उप्पर ॥
सुष पत्ती पीरोज। धरे सुविहान सुज्ज पर ॥
रे हिंदु दंद असपत्ति घग। को दरिया सुज वर तिरै ॥
तसलीम बिनै साहाब करि। सरच छोरि जिय उब्बरै ॥
छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ रे पत्ती पीरोज सुनि। हूं ढिल्ली पिथ पुत्त ॥
जिन गज्जन वै बंधयौ। क्यौं बोलै मति गत्त ॥
छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ पत्तिय षाँ पीरोज। रवन सम्हो असु नंषिय ॥
दो मरदानी दिष्ट। उभै अंकुरि आरुष्यिय ॥

(१) ए० कृ० को-मुक्कि।

संधि वान कम्मान । प्रान गुन सुंच न धारिय ॥
टट्टर लगि चहुआन । वीर लन्नाह उच्चारिय ॥
प्रथिराज राज सम वान गहि । फ़टि टट्टर सधि मीर सिर ॥
लग पंप मीर वाहिर रही । मनु राह छूर अधपत्ति सिर ॥
छं० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ परत पान पीरोज कौ । दौरिय पान जिहाज ॥
सैद सेष सीनौर मिलि । रुक्यौ रयनसी राज ॥
छं० ॥ १७७ ॥

यवन सेना का रयनसी को घेरना और बड़े पराक्रम से हथियार करते हुए रयनसी जी का मारा जाना ।

मोतीदाम॥रुक्यौ मिलि मेछ रयन्नह राज । करै मनुसिंध करी पर गाज ॥
उभौ सम रंगन अप्पन एक । लियै दुरजोधन की मनु टेक ॥
छं० ॥ १७८ ॥

जराव को मौर बंध्यौ उतमंग । उगै ग्रहनो कि समेर कौ श्रंग ॥
ढलक्कत ढाम वनी गजगाह । घटा घन मानहु गंग प्रबाह ॥
छं० ॥ १७९ ॥

रह्यौ पुल वागो रंग्यौ कासमीर । जन उग्यौ सुत्तिय साल सभीर ॥
पलक्कत सोवन संकर पग्ग । झलक्कत वीच अमोलिक नग्ग ॥
छं० ॥ १८० ॥

दिपैं इ वनैं तिहि वेर को भूप । कहंत वनंत न रूप अनूप ॥
घड़ा अवरी वर मोर अनीन । दल प्पर गौरिय वाग सुलीन ॥
छं० ॥ १८१ ॥

जपे मथूरेसर नष्षि वृहास । तरक्किय जानि कि वीर प्रयास ॥
परी अनचिंत पलट्टल माय । टगट्टग लग्गिय उट्ठि न हाय ॥
छं० ॥ १८२ ॥

गये सब कायर भज्जि समूर । मनौं उड़ि पप पवन्न बघूर ॥
रह्यौ रुपि एकल पान जिहाज । जिनें भुज मंडिय गज्जन लाज ॥
छं० ॥ १८३ ॥

तिनें नषि सायक षंचि कमान। गयौ चुक्कि बाम भुजा चहुआन ॥
लियो सर षंचि कै नंषत जाम। पहुच्चिय आय कै अंतक ताम ॥
छं० ॥ १८४ ॥

अरे नग रोस प्रहारिय सेल। तुरंग समेत कियौ धर मेल ॥
परष्षिय पष्षिय लग्गिय षंग। रही थगि हेंवर षान दुजंघ ॥
छं० ॥ १८५ ॥

पर्यौ हू रह्यौ धर पंजर जानि। गयौ मनु हंस उडे असमान ॥
घह घह घंबक वज्जत तूर। चल्यौ रिन राम सुरातन पूर ॥
छं० । १८६ ॥

उही सिर बंबरि सुच्छ सुबंक। रँगे अग मद्द कि वीय मयंक ॥
अरुन्न वरुन्न भए द्रिग षंत। मनों वडवागिनि मद्धि धषंत ॥
छं० ॥ १८७ ॥

प्रगट्टिय आनन द्वादस सूर। भ्रिगुट्टिय चढ्ढि कपाल करूर ॥
कह्यौ परिवार परिग्गह देषि। विचारिय जीवन अप्प अलेष ॥
छं० । १८८ ॥

करों कोइ अज्ज वडी अषियात। हनों असपत्ति घरें मन बात ॥
चल्यौ हय हक्कि दिसा गजनेस। रह्यौ रथ षंचि गयन्न दिनेस ॥
छं० ॥ १८९ ॥

असे सँग अच्छरि हूरन भूल। लिये कर कम्मल चोंसर फूल ॥
हयग्गय सेह फवज्जिय ठेलि। मनों विन गेहरि छोरिय वेलि ॥
छं० । १९० ॥

उडे रज डंमर अंबर छाय। मनो घन बद्दर पावस आय ॥
चल्यौ गज ऊपर देषि हमीर। हरे किलकार हँकारिय बीर ॥
छं० ॥ १९१ ॥

मुरी नष बाजि धरन्नि धसक्कि। पर्यौ सिर भार षनंग कसक्कि ॥
उभै नरनाह महा बलवंत। उभै मन मंडिय भारथ षंति ॥
छं० ॥ १९२ ॥

उभै सिरदार रमाइन केक। उभै मद मोकल आनि अरेकि ॥

उभै हक लाज गुमान अमान । उभै कढ़ि पायन छेह रिसान ॥
छं० ॥ १९३ ॥

उभैइ पितान को बैर संभारि । चलो अनि तोलि उभै तरवारि ॥
कर्यौ नग को नग घाव पड़िग्ग । गयो कटि दंत भसुंड सुढग्ग ॥
छं० ॥ १९४ ॥

सहाब तिनै करि फेरि दें घाइ । गयौ कटि कैं सिर संभरि राय ॥
परोइ सो लुंजि कि डोरि दिलेस । कर्यौ रुंडमाल कौ मेरु महेस ॥
छं० ॥ १९५ ॥

उठी रत छिंछकमंध उतंग । मनों बल छुट्टिय जावक रंग ॥
बिना सिरपें गपरे महाराज । उनंगिय तेग अजब्ब विराज ॥
छं० ॥ १९६ ॥

जहां तहं बाहत सद्द दुरद्द । जहां तहं मारत मीर मरद्द ॥
जहां तहं घायल घाइ घुमंत । जहां तहं कायर भाजि लुकंत ॥
छं० ॥ १९७ ॥

जहं तहं स्रोणित के मचि कीच । जहां तहं गिद्ध काले तिन बीच ॥
जहां तहां लोथि उलट्ट पुलट्ट । जहां तहं कीन सुघट्ट कुघट्ट ॥
छं० ॥ १९८ ॥

जहां तहं कालिज फेफर बूक । जहां तहं आमिष अंत जँबूक ॥
जहां तहं मुंड रडब्बड तुंड । जहां तहं बाहु बगत्तर षंड ॥
छं० ॥ १९९ ॥

जहां तहं चौसठि जोगिनि झुंड । जहां तहं नारद संडव तंड ॥
जहां तहं अच्छरि हूर हमस्स । जहां तहं विंद वरें भल भल्ल ॥
छं० ॥ २०० ॥

जहां तहं सेल करीन की गाल । जहां तहं संकर गूथत माल ॥
जहां तहं वीर बैताल डकार । जहां तहं सिंधुअ राग उच्चार ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जहां तहं सार कौ नूर उडाय । जहां तहं हाल्त हीं सुदिपाइ ॥
इसौ हय वाह वहंत छछौह । हियैं चढ़ि कौन करै तहं सोह ॥
छं० ॥ २०२ ॥

तबै ञ्रप कुप्पि काढ़ी सुरतांन । करीं किन हल्ल सबैं तुरकांन[1] ॥
करिक्करि सेछ कलाप करोर । परी करि अछ्छ करीन किकोर ॥
छं० ॥ २०३ ॥
तुरक्क जँबूरति तीरनि मारि । रयन्न कमद्ध धरा पर ढारि ॥
उरा पर दीसत छेक अनेकि । मनो घट रूप घरूल बनेकि ॥
छं० २०४ ॥
कटे नग राज तुरंग समेत । घने कटि घाट सेछायन षेत ॥
करे रवि मंडल अंदर राह । विराजिय जाय कै बैकुँठ माह ॥
छं० ॥२०५॥
धनिद्धनि जंपत देव विमान । बधावत फूल करंत बषान ॥
रहै म सुरा सुर मान बगात । रहै न सुमेर धराधर सात ॥
छं० ॥ २०६ ॥
जिसौ न्नप पिथ्थ परट्टिय पट्ट । तिसो भुजभार निवाहि निपट्ट ॥
सँसार असार सें कथ्थ उगारि । भयौ रज रज्जन पाइ लगारि ॥
छं० ॥ २०७ ॥
पराक्रम पार न पाइय सेस । कहां लगि जंपिय चंद कवेस ॥
बजे असुराइन जीति निसान । परे चहुआन फिरी धर आन ॥
छं० ॥ २०८ ॥
लूटो बन संक हयग्गय देस । रजवट्ट रष्षि गयौ रयनेस ॥
छं० ॥ २०९ ॥

रयनसी के मरने पर दिल्ली पर मुसलमानी कब्जा होना ।

कवित्त ॥ चवर ढारि तजि चवर । नष्पिय पग लागि सुबथ्थं ॥
धर नंषिय चहुआन । पछि पारिय सह सथ्थं ॥
भिरि गट्टे चहुआन । बलिय फट्टे निझझारिय ॥
बर पंचाइन थक्कि । म्रिग्ग चंपे उझझारिय ॥

(१) ए० कृ०—तुरकान ।

अरि ढारि अच्छरि वरै वाहि वाहि बेहथ्थ वत ॥
ढहि वाज नग्ग वर राज वर। उज्जारै वर मत्त जत ॥
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ सिर छुट्टत छुत्तिय सुवरि। छुट्टि हयग्गय रोज ॥
जीति वद्दे नीसान नद। कर यौ साहि वर काज ॥
छं० ॥ २११ ॥

धर ढिल्ली पतिसाह घर। घर पुट्टै पढि हथ्थ ॥
नयौ नवेरौ थप्पिहै। इह सुविहानी सथ्थ ॥
छं० ॥ २१२ ॥

लगि जोहर भारथ्थ मचि। प्रलै काल मनो जग्ग ॥
डिल्ली धर नथ्थन गहिय। परिय पराक्रम लग्गि ॥
छं० ॥ २१३ ॥

दिल्ली कब्जे में करके कन्नौज पर मुसलमानी सेना का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जीति पयल्लै सथ्थ। हथ्थ पुर पंच विलग्गौ ॥
पुट्टि षान षुरसान। षान चहुआन सु अग्गौ ॥
दिसि कनवज कमधज्ज। सज्जि जैचंद सु उप्पर ॥
सुनि अवाज भय राज। आज भज्जत नर कुप्पर ॥
इह मेछ मत्त वारन विरद। जुद्ध जोर पुज्जै न वर ॥
सनमुष्प सजौं अप्पन सुभर। करौं भार उभ्भार धर ॥
छं० ॥ २१४ ॥

उभय दिवस सोरंभ। राय जयचंद प्रपत्तौ[1] ॥
इत गज्जन वै सेन। धाइ चर पवरि नियत्तौ ॥
उभय चतिय दिन प्रात। मात कालिंदी तट्टह ॥
मिले पंग पतिसाह। वद्दै धर श्रोन उपट्टह ॥
जुद्धंत जोध दिन सत्त भय। इर रंभ नन रंडरिय ॥

(१) ए० कृ० को०—दियचौ।

छर खंड माल गुंथत गहर । रंक जेम रतनं हरिय ॥
छं० ॥ २१५ ॥

असिय लष्ष तोषार । सजड़ पष्षर सायद्दल ॥
सहस हस्ति चवसट्ठि । गरुअ गज्जंत महाबल ॥
पंच कोटि पाइक्क । सुफर पारक्क धनुद्धर ॥
जुध जुधान बर बीर । तोन बंधन सद्धन भर ॥
छत्तीस सहस रन नाइवौ । विहि न्रिम्मान ऐसो कियौ ॥
जैचंद राइ कविचंद कहि । उदधि बुड्डि कै धर लियो ॥
छं० ॥ २१६ ॥

कहि न ईस कहि इंद । कहु न ब्रह्मा साविची ॥
गन गंधर्व अपछरा । बत्त नारद निरत्ती ॥
कहि न मेर मद्द महन । मनिष मनषें को गिल्लियौ ॥
कहो उडियन आकास । जलनि कैते जैलिल्लियौ ॥
संग्राम मिले सुरनर असुर । अनल पंच दिट्ठी धरनि ॥
जैचंद राव किहि परि हुओ । कहि निसंक सच्चौ धरनि ॥
छं० ॥ २१७ ॥

इस मुसल्मानी आक्रमण में जैचन्द का लड़ कर मारा जाना।

इंद्र पष्ष धर लिद्ध । रयन सध्यों असुरायन ॥
दिसि कनवज्ज आवंत । सुन्यौ जैचंद पराइन ॥
सयन सनम्मुष आय । जुद्ध भारथ भर मच्चौ ॥
जित्यौ विनय सहाब । परत धर सिर बर नच्चौ ॥
न्रम्मान पान भायौ विगति । असिय लष्ष जित्ते असुर ॥
जैचंद कमध सचह सहस । हनिय लग्गि गय धार धुर ॥
छं० ॥ २१८ ॥

सु सिर पर्यौ रिन भुअन । तेह गिर धरनि उचायौ ॥
गिरधनं अपछर लेत । राव चाहत्त न पायौ ॥
गिरिधनि कर हवि छुट्टि । पर्यो गंगा जल भीतर ॥
गंगह लियो उछंग । लैन चाहै सिर संकर ॥

गंगा सुपाल लिय चव नयन । पर उछाह किय आप कौ ॥
गल दंड साख खैं संठयौ । वह सुकीस जयचंद कौ ॥
छं० ॥ २१९ ॥

ग्रंथसमाप्ति-उपसंहार ।

धन हिंदू प्रथिराज । जिनै रजवट्ट उजारिय ॥
धनि हिंदू प्रथिराज[1] । बोल कलि सक्क्क उगारिय ॥
धनि हिंदू प्रथिराज । जेन सुविहानह संध्यौ ॥
बार बार ग्रहि मुक्कि । अंत कालह सर बंध्यौ ॥
रनसिंह रथन राजन सुधनि । जिन घर सिर सट्टै दईय ॥
करि सकय कोय मच्छर मरद । तौ जुग किति वेलिय वईय ॥
छं० ॥ २२० ॥

प्रथम वेद उद्धार । बंभ मछह तन किन्नो ॥
दुतिय बीर बाराह । धरनि उद्धरि जस लिन्नो ॥
कौनारक नभ देस । धरम उद्धरि सुर सप्पिय ॥
कूरम कूर नरेस । हिंद हद उद्धरि रप्पिय ॥
रघुनाथ चरित हनुमंत कृत । भूप भोज उद्धरिय जिम ॥
प्रथिराज सुजस कवि चंद कृत । चंद नंद उद्धरिय इम ॥
छं० ॥ २२१ ॥

पद्धरी ॥ नवरस विलास रासौ विराज । एकेक भाष अनेक काज ॥
जो सुनय विविध रासौ विवेक । गुन अनंत सिद्धि पावहि अनेक॥
छं० ॥ २२२ ॥

छूरत्त दान विग्यान मोन । नाटक गेय विद्या विनान ॥
चातुरी भेद वचनह विलास । गति गरम नरस रस हास रास ॥
छं० ॥ २२३ ॥

गति साम दान भर दंड भेद । सब काम धाम निव्वान वेद ॥
वाचंत कवित[1] हारंत गोप[1] । बर बिनय विद्धि बुझझय सदोप ॥
छं० ॥ २२४ ॥

(१) ए० कृ० को०—कारन्न गोप ।

विधि सत्त सार रिन बहन भार। गतिमान दान निरवानकार।
चौवरन धरम कारन विवेक। रस भाष भेय विग्यान नेक॥
छं०॥ २२५॥

पौरान सकल कथ अथ्थ भोय। भारथ्थ अथ्थ वे बन्नताय॥
कवि काव्य रस्स प्राहास रंग। बंधनिय छंद बुझ्झै सुजंग॥
छं०॥ २२६॥

विध्वेकदान विचार चार। गति वाम वाम रति रंग भार॥
नव सपत कला विचार वेद। विग्यान थान चौरासि भेद॥
छं०॥ २२७॥

गति पंच अरथ विग्यान मान। उप्पमा जेव मति अंग थान॥
रितु रस रसानि वेलास गत्ति। संतन सुमंत आभासि अत्ति॥
छं०॥ २२८॥

भोगवन पद्मिनि विचार विद्धि। अरु इष्ट देव उप्पाय सिद्धि॥
गंध्रब्व कला संगीत सार। पिंगलह भेद लघु गुरु प्रचार॥
छं०॥ २२९॥

पित मात पत्ति परिचरत भेय। राजंग राज राजंत जेय॥
परब्रह्म ध्यान उद्धार सार। विधिभगति विस्व तारंन पार॥
छं०॥ २३०॥

आधुनह वेद छय गय विनान। ग्रह गत्ति मत्ति जोतिग्ग थान॥
कवि सार सार बुझ्झहि विचार। संभलहि भूप रासौ सुधार॥
छं०॥ २३१॥

पावहि सुअरथ अरु अम्म काम। निरमान मोष पावहि सुधाम॥
आवरत च्यारि जौ सुनहि राज। पावहि सुचित्त बंछहि सुकाज॥
छं०॥ २३२॥

असुमेध जग्य सम फल प्रमान। तुलदान प्रान ब्रहमंड वान॥
बद्रिका जात फल जगन्नाथ। रामेस सेत पावै समोथ॥
छं०॥ २३३॥

कासीय महाफल माथुरात। अवगाह पुन्य पावै सनात॥
उज्जैनि तिथ्थ माया सुकांति। द्वारिका अयोध्या भुअन भांति॥
छं०॥ २३४॥

ए तिरथ मोछदायक कहंत । ते पुरस सुनंत रासो लहंत ॥
हर सिद्ध मात तुलजा विख्यात । कासमीर कंगुर हिंगुलाज मात ॥
छं० ॥ २३५ ॥

ज्वाला अनेक सुप कुंड जेह । परस्यां प्रमान फल लहै तेह ॥
मन वाच क्रम सुनही सुराज । पोवहि सुचित्त अभिलाष काज ॥
छं० ॥२३६॥

प्रतिपदा चंद दिपि सुरह गाय । नौलिक जटंत नौलहिल पाइ ॥
पयपान भेद ज्यों हंस जानि । संभलै राजराजन सुजानि ॥
छं० ॥ २३७ ॥

इह ग्रंथ उदधि लहरीत रंग । वाचंत सुनंत उपजै सुरंग ॥
नन सुनै मूढ़ मतिमंद कान । आलस अधिक निद्रा विराम ॥
छं० ॥ २३८ ॥

लाखचि लछन गुन हीन देह । नन सुनै कान रासौ सुतेह ॥
संभलै सूर दातार रास । कवियन विलास पूरवन आस ॥
छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ प्रथीराज गुन सुनत । होय आनन्द सकल मन ॥
प्रथीराज गुन सुनत । करय संग्रोम स्यार रन ॥
प्रथीराज गुन सुनत । कयन कपटय तें खुलय ॥
प्रथीराज गुन सुनत । हरषि गुंगौ सिर डुलय ॥
रासो रसाल नवरस सरस । आजानौ जानप लहै ॥
निसटौ गरिष्ट साहस करै । सुनहु सत्ति सरसति कहै ॥
छं० ॥ २४० ॥

सुनि रासौ सुर राय । रिझ्झ ब्रह्मा हरि संकर ॥
उमया धरि हरि भाव । सुनिय नारद गुनंकर ॥
जु कछु तत्त गुर ग्यान । दान माननि मन रंजन ॥
सस्त्र कला साधंन । मानि अरियन दल भंजन ॥
सब रस विचार विद्या भुअन । मंच जंच साधन सुतन ॥
कविचंद छंद बंधिय जुगति । पढ़त गुनत पावै सुमति ॥
छं० ॥ २४१ ॥

रासोइन भारथ्य। ग्रंथ अठ दसै प्रमानं ॥
सुनत सिद्धि घर रिद्धि। होय रासौ सनमानं ॥
अठ सठ तीरथ न्हाय। गाय गुन गोविंद गानं ॥
ता सम वरि श्रोतान। लिषत बाचत विधि जानं ॥
गंगा सनान दिन प्रति लहय। जे नरिंद रासो सुनय ॥
डाकिनिय भूत वेताल छल। रोग सोग दोषन कुनय ॥
छं० ॥ २४२ ॥

मंच सकति या मंझ। धूप अष्यर उप्पेवय ॥
सुनै श्रवन गुन एह। दान श्रद्धा करि देवय ॥
एक चित्त करि भाव। भाव या मझ्झ्झह पावय ॥
अरथहीन ब्रनहीन। हीन छंदह नन गावय ॥
पिंगल प्रमान बहु भांति जुति। रस रूपक नव नव सरस ॥
बरदाय साय रसना रसिक। परचि प्रीति पावै सुरस ॥
छं० ॥ २४३ ॥

चिरजीवहु श्रोतान। काम मन बांछित पूरय ॥
चिरजीवहु श्रोतान। दुष्प आपद भय चूरय ॥
चिरजीवहु श्रोतान। पुत्र परिवार सहेतौ ॥
चिरजीवहु श्रोतान। दान कवियन जन देतौ ॥
हूै पाट घाट भंडार भरि। आस सास सफली फलय ॥
धरि ध्यान जोग साधय जुगति। जरा म्रत्य तन ना कलय ॥
छं० ॥ २४४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासके राजकुँअर श्री रेनसी अभिषेक, दिल्ली नगर वासे गोरी सहाब गौरी धरनम्, विनय सहाब पातिसाह तखत करनम्, परस्पर युद्ध जुरनमूनम्, ढिल्ली जोहर जरनम,राजा,श्रीरेनसी मरणम्, राजा जैचन्द गंगा सरनम् नाम अडसठवों प्रस्ताव संपूरणम् ॥६८॥



अथ महोबा समयो लिख्यते ।

चौहान और चँदेल कुल में कैसे झगड़ा पड़ा इसकी सूचना ।

दूहा । कहै चंद गुन छंद पढि । क्रोध उदंगल सोइ ॥
चाहुआन चंदेल कुल । वांदल उपजन कोइ ॥

छं० ॥ १ ॥

विवाह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज की सेना का महोबा में पहुँचना ।

समुद सिषर गढ परनि नृप । पकरि साहि लिय संग ।
चलि वहीर आई सहव । चढिव रंग वहु रंग ॥

छं० ॥ २ ॥

समुद्र सिषरगढ से विवाह करके चलने पर सुलतान का बीच में आ घेरना, उसे जीत कर पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर चलना ।

कवित्त । समद सिपरि गढ परनि । राज दिल्ली दिसि चल्लिव ॥
पातिसाह सुनि पवरि । धाइ बिचही रनि मल्लिव ॥
सकल सिमिटि सामंत । चंद कैमास बुद्धिवर ॥
लहिव जुद्ध चहुआन । गहिव प्रिथीराज साहि कर ॥
रजपुत छंडि पचास रन । लूटि जवन सेना घनिय ॥
पट्ठान सात हज्जार पर । जीति चल्यौ दिल्ली धनिय ॥

छं० ॥ ३ ॥

---

* इस समय की घटना का सम्बन्ध तो पृथ्वीराज के जीवनचरित से अवश्य है पर अनेक कवियों ने इस कथा के वर्णन में अपनी कवित्व शक्ति दिखाई है पर नाम अपना न देकर चन्द बरदाई ही का दिया है । इसलिये इस समय के चन्द की रचना होने में सन्देह है अतएव यह अंत में दिया जाता है ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्ता भूल कर महोबे में आपहुँचना, वहां भारी वर्षा होनी, सरदारों का बिकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालियों का रोकना, बातों बात बढ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारों का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब वृत्तांत कहना, रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को इन सभों के पकड़लाने की आज्ञा देना ।

पद्धरी । वरनी विवाह चहुआन रान । व्यास वचन्न जौ करि प्रमान ॥
जद्दव गरब्ब भानियौ वीर । कमोदनीति जै ते गहीर ॥
छं० ॥ ४ ॥

रन कढ्ढि पंच सत्तह हजार । जद्दव कमोद दल करि दुसार ॥
सुलतान पकरि नृप लियौ आप । रुस्तम ततार मिटि पाइ ताप ॥
छं० ॥ ५ ॥

जुग्गिनि पुरेस दिसि राज धाइ । भूली वहीर महोवे सुआइ ॥
घाइल कितेक रजपूत संग । दासी सुमंजरी अति उमंग ॥
छं० ॥ ६ ॥

पहुंचे सु महुवे नगर आइ । वरसियौ मेह बूंदनि अघाइ ॥
भए विकल लोग घाइल उताप । उपवाग मांझ चलि गए आप ॥
छं० ॥ ७ ॥

जहं महल ठाम उत्तंग नेक । पलभलिय जोध चढि घलिय नेक ॥
वरजियौ जाइ मालीन सोइ । बोलियौ बोल अति क्रुद्ध होइ ॥
छं० ॥ ८ ॥

गारी सुदीन उत्तंग हथ्थ । विरचियौ बाहि पथ्थर समथ्थ ॥
लग्गी सुजाय रजपूत सीस । धायौ सु तेग करि करि वरीस ॥
छं० ॥ ९ ॥

दीनी सु सीस दुहूं घालि सोइ। उडि पर्यौ मध्य धरि विगरि होइ।
अइ झलक सुनी परिमाल राज। पठ्यौ जोध करि हुकुम साज ॥

छं० ॥ १० ॥

चंदेल वैस आगरा सूर। चिं सुमहल इक मलहन नूर ॥
सौलंषी जदव सजि अनेक। सजि गहरसार गोहिल अनेक ॥

छं ॥ ११ ॥

वाजियौ वनाफर जुद्ध ताइ। हरदास भगेलौ वीर विभाइ ॥
आए सु सज्जि द्रब्बार सोइ। गुदरिय वत्त दरवान दोइ ॥

छं० ॥ १२ ॥

रानी मलहन देही हजूर। गुदरिय बात दरवान दूरि ॥
उंचे अवास छाजे सु सुद्ध। परिमाल राज बैठे विरुद्ध ॥ छं० ॥१३॥
मालिन पुकारी करि नवीन। परिमाल जुद्ध पर हुकम दीन ॥

छं० ॥ १४ ॥

परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकड़ने के लिये सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों को मारा जाना और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल देव का क्रोध कर अपने प्रसिद्ध वीर ऊदल को बुलाकर उन घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना, ऊदल का कहना कि यह घायलों को मारना वीर धर्म के विरुद्ध है, राजा का कुछ भी न सुनना।

दूहा ॥ पकरि वाग रजपूत सब। क्रोध जानि परिमाल ॥
सिर लग्गो असमान को। पग लग्गौ पायाल ॥ छं० ॥ १५ ॥

मोतीदाम ॥ किये परिमाल सुहुक्कम गाजि। चले सब रावत जंग पै साजि ॥
चंदेल वनाफर सुष्प सुसूर। वघेलह गोहिल लोह करूर ॥

छं० ॥ १६ ॥

चले भर जागर मल्हन सोइ। सजे भरजद्दव भद्दव होइ॥
निवाजिय वैस नरेस हुकम्म। सनम्मुष सुक्क सु वंक रुकम्म

छं० ॥ १९

चले हरदास वघेल वलिष्ट। पचारै सक्क उचारै इष्ट॥
सुनौं रजपूतन बात कुढंग। बंधे वपु घाव सुघाव सुअंग

छं० ॥ १८

कहैं रजपूत सुनौ जब घर। सुनो परिमाल करौ जिन वैर
सुनो चहुआन न छंडहि दाव। करौ मति अब्ब चंदेल उप

छं० ॥ १

करौ प्रिथिराज सौं काज विरुद्ध। भजौ जन षेत जुरौ जब
इसौ सुनि वानि कियें रत नैन। कहे नृप मारहु मारहु

छं० ॥ २

चले सब साजि चंदेल की फौज। पिलै रजपूत सनम्मुष
मिली जब दिष्ट सौं दिष्ट करूर। जुरे रजपूत मरद्द मरूर

छं० ॥ २१

मिले सुष आइ मुछाल जवान। उछालत आवत कुद्द कास
लगैं सर साइक छत्तिय आइ। किधौं विष आसिय पासिय

छं० ॥ २

लगैं उर आनि सकत्तिय सेल्ह। दुहौ कर वीर इहं विधि चे
कटक्कत घाइल षग्गन काटि। षटक्कति सेलनि षेलनि राट।

छं० ॥ २३

गटक्कति चोटिय गिद्धनि दौरि। घटक्किति घाइल दाइल मौर
चटक्कत चौप वहै करमाल। नटक्कत नाचइ घाइ मुछाल॥

छं० । २४

छटक्कत छूर धरप्पर आइ। जटक्कत गुंथय जुग्गिय धाइ॥
झटक्कत इक्कन कौं गहि एक। नटक्कत लुट्टय कुट्टय मेक॥

छं० ॥ २५

ठठक्कत कोइर देषिव युद्ध। उडक्कत डौरुय वाजि विरुद्ध॥
ढढुक्कय ढुक्कय रुक्कय पाय। रंनंकत रुंड षनंकत काय॥

छं० ॥ २६

ी लागत बीर तमक्कि। थरथ्थर काइर जाइ रमक्कि॥
र हौकिय बीर दुरंत। थरहर चालि भयानक रत्त॥
छं० ॥ २७॥

हर नूर करूर लपाइ। परप्पर फट्टत जुट्टत काइ॥
प्पर फौज पुरप्पुर मार। वरप्पर वाजत घाइन तार॥
छं० ॥ २८॥

जिव सैन चँदेल। सरस्सर सुट्टिव विट्टिव षेल॥
व घाइल घाइ। लरै प्रिथीराज कि सैन सुभाइ॥
छं० ॥ २९॥

ै उमेर न पाइव चाल। भजी सब फौज लषी परिमाल॥
मार सुतीन परे धर सद्धि। भजी परिमाल फौज प्रसिद्ध॥
छं० ॥ ३०॥

टे रन घाइ तीसक सोइ। रुपे सक पंडव होइ॥
यौ गुन मंजरि पानिय धाइ। उ प्यावति किए सुचाइ॥
छं० ॥ ३१॥

गे सर सेल्ह सुसच्च गात। करी गुन मंजरी जुग्गिनि बात॥
वाजिय वैस चँदेल रतन्न। दास से कीन पतन्न॥
छं० ॥ ३२॥

ै नृप उदिल लीन व
ाइव मल्हन दे त ाइ। सुनी तब कान पयादेउ आइ॥
ारि। रहै नहिं घाइल लीजियै मारि॥
छं० ॥ ३३॥

तब उदिल
ीं द्रह रा वैन प्रसिद्ध। सुनौ नृप ए रजपूत प्रवद्ध॥
न कौ भ्रम ताफ। करौ इनकी अब चुक सुमाफ॥
छं० ॥ ३४॥

ै प
ौ रमाल सुबैन नपीन। हनी इन फौज हजार सु तीन॥
इन कारन उद्दलसोइ। तवै द्रग चैन लहै मम दोइ॥
छं० ॥ ३५॥